shield to try to deny the workers their legitimate rights. This is also another matter in which the Minister's active intervention is necessary so that the industrial relationship at least in the public sector undertakings is not jeopardised.

The last but not the least point is with regard to the development of cottage industries in this country I would request the hon. Minister to lay down very categorically what help you could give Banks are working as a restraint and not as providing encouragement, not as something which will enable the small entrepreneurs, hardly with capital to go in for industrialisation in the cottage and small scale sector You have proposals but no method to implement it Therefore, instead of having it on paper only please look into the matter and lay down concrete steps as to how the unemployed youth of this country can take advantage of the proposals for setting up cottage industries so that through that medium we can have a little better situation for them Thank you.

16.59 hrs.

DISCUSSION ON THE STATEMENT BY THE MINISTER OF HOME AFFAIRS REGARDING SITUATION IN JAMSHEDPUR

MR. SPEAKER· We shall now come to the special discussion before the House Shri Harikesh Bahadur has given notice of a motion to raise a discussion on the Statement by the Minister in the House on 18th April 1979 regarding the situation in Jamshedpur. It is the only motion before me.

Shrimati Mohsina Kidwai.

श्रीमती मोहसिना किदवई (आजमगढ़) · अध्यक्ष जी, आज जिस मसले पर बहस करने के लिये यह हाउस बैठा है—वह एक बहुत ही अहम मसला है। जमशेदपुर—जो स्टील सिटी कहलाता है—वहां पर हुए इस वाक्ये से मुल्क में सैकुलरिज्म में विश्वास रखनेवालों के लिये एक चेलेन्ज है, एक चुनौती है। जमशेदपुर सिटी में आज जो कुछ हो रहा है, वह इस बात का एक सुबूत है कि इस मुल्क के संविधान की जो आत्मा सैकुलरिज्म में थी, वह आज हिलती हुई नजर आ रही है, कमजोर हो रही है। मुझे आज बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि जनता पार्टी की सरकार जब बनी थी, उस समय उन्होंने महात्मा गांधी की समाधि पर जा कर कसम खाई थी कि हम महात्मा गांधी के नक्शे कदम पर चलेंगे।

17.00 hrs.

अध्यक्ष जी, महात्मा गांधी का वह ख्वाब जिसको यह जनता पार्टी की सरकार पूरा करने चली थी, महात्मा गांधी का वह खूबसूरत ख्वाब जिसमें उन्होंने हिन्दुस्तान को एक ऐसे बाग की तरह देखा था कि जिस में हर रंग के फूल का, हर खयाल के फूल का बराबरी से झूमने और खिलने का हक हासिल हो, आज उसी खूबसूरत ख्वाब का, उसी दिलकश ख्वाब की ताबीर का इतनी भयानक चोट इस जनता की सरकार ने दी है कि वह खूबसूरत बाग प्रभावित हो गया है और आज वह बाग ऐसे बाग में परिवर्तित हो गया है जहां मजहब और धर्म के नाम पर नफरत की जहरीली आंधियां चल रही हैं, जहां अकसीरियत और अकलियत के नाम पर नंगा नाच नाचा जा रहा है, जहां इन्सानियत कराह रही है और जहां मानवता शर्म से झुकी जा रही है। आज उस का खुला सबूत जमशेदपुर में दिखाई दे रहा है। आज जो कुछ हो रहा है, इस वक्त के जो होम मिनिस्टर हैं उन को जरा भी शर्म होती, तो वे अपने इस्तीफे के साथ इस हाऊस में आते और यह कहते कि मैं इस्तीफा देना चाहता हूं, क्योंकि मैं उन ताकतों को नहीं रोक सका जो आज इस मुल्क में यह सब गड़बड़ करवा रही हैं। (व्यवधान) – अध्यक्ष जी मैं यह कहना चाह रही थी, आप के माध्यम से हाऊस से यह कहना चाहती हूं कि हमारे होम मिनिस्टर साहब ने जो ध्यान दिया है–(व्यवधान)– मैं यह कहना चाह रही थी कि मैं किसी पार्टी की बिना पर नहीं बोल रही हूं, मैं किसी पार्टी विशेष की बिना पर नहीं बोल रही हूं, मैं एक इन्सान की हैसियत से इस हाउस में बोल रही हूं। आज जमशेदपुर में जहां बर्बरता और जुल्म का नंगा नाच हो, जहां इन की पार्टी में शामिल एक जमायत है, आज ये लोग अपनी आंख खोल लें, जो कल तक आर० एम० एस० को कल्चरल आर्गेनाइजेशन कहते थे, आज मैं उन से पूछना चाहती हूं कि ये लोग जो कल तक मुसलमानों की वोट लेने के लिए इमाम बुखारी साहब को झूठे सच्चे वाक्यात सुना कर हर जगह मगरमच्छ के आंसू बहा कर इमर्जेन्सी को रोक रहे थे, कहां हैं आज वे इमाम बुखारी और उन के साथी। आज जो जमशेदपुर में हुआ है वह सिर्फ जमशेदपुर में ही नहीं हुआ है, अलीगढ़, बनारस और लखनऊ में जितने भी वाक्यात हुए हैं, उन्हें

[श्री मती मोहसिना किदवई]

अगर आप देखें तो वे सब एक वाक्य की कड़ी नजर आते हैं। हमारे होम मिनिस्टर साहब ने जो स्टेटमेंट आज दिया है, उस स्टेटमेंट से हम क्या नतीजा निकालते हैं? जो एक बुनियाद थी, उस बुनियाद का तजकिरा नहीं किया, जो एक पूरा माहौल बन रहा था पिछले एक महीने से 15 दिन से, उस माहौल का पूरा तजकिरा नहीं किया। मैं पूछना चाहती हूं कि बावजूद मुखालफत के, बावजूद पूरी मुखालफत के, आर० एस० एस० का कैम्प वहां पर क्यों लगा? जमशेदपुर में तीन, चार दिन तक मुस्तकिल आर० एस० एस० का कैम्प लगा और आर० एस० एस० के उस कैम्प में क्या कहा गया। बालासाहिब देवरस ने क्या कहा, जो आज हिन्दू राष्ट्र के नाम पर, महात्मा गांधी के ख्वाब को चकनाचूर करना चाहते हैं क्या तकरीर की उन्होंने? मैं आप से दरख्वास्त करूंगी कि बालासाहिब देवरस की तकरीर का टेप इस हाऊस में सुनाया जाए। उन्होंने जो तकरीर की, वह इतनी सेनसेटिव थी, इतनी प्रोवोकेटिव थी, इतनी इश्तयालअंगेज थी, इतनी जजबात को उभारने वाली थी कि कोई भी सेंसीबल आदमी उसको सुनकर अपने होशोहवास में नहीं रह सकता। जितने भी इस मुल्क में न्यूज पेपर्स हैं उन सब को निकाल कर देखिये। सब ने यह लिखा है कि यह झगड़ा कांई एकदम से भड़कने वाला झगड़ा नहीं था। यह झगड़ा पूरी प्लानिंग, पूरी तैयारी के साथ हुआ है।

पिछले साल भी जब इस के बारे में झगड़ा चल रहा था तब भी डिस्ट्रिक्ट अथारिटीज ने इसकी परमीशन नहीं दी थी। मैं किसी मजहबी जलूस के खिलाफ नहीं हूं। लेकिन हर जलूस की शांति और कायदे कानून से निकाला जाना चाहिए। हर जलूस को निकालने का कायदा होता है उसका रूट होता है। वहां डिस्ट्रिक्ट अथारिटीज के पास बाकायदा उस जलूस के रूट का नक्शा होता है। जिस रूट से जलूस पिछले सालों में निकलते रहे होते हैं उन्हीं से उनको निकाला जाता है। पिछले साल भी इन्होंने जलूस निकालना चाहा था लेकिन उसकी इजाजत नहीं दी गयी। जैसा कि मिनिस्टर साहब ने कहा कि हाई कोर्ट ने भी उसके बारे में केस को रिजेक्ट कर दिया था। उस के बाद से बराबर यह कोशिश होती रही कि किसी तरह से हम अपने जलूस को उस रूट से निकालें जो कि एक सेंसिटिव रूट है। उस बात की पांच अप्रैल को कोशिश की गयी जिस दिन कि रामनवमी थी, 6 को और 7 अप्रैल को भी निकालने की कोशिश की गयी लेकिन उसकी परमीशन उन्हें नहीं मिली। सात तारीख को वहां की अखाड़ा समिति जिसका कि मिनिस्टर साहब ने नाम लिया, एक इश्तियारेंज पेम्फलेट निकाला। उस पेम्फलेट में किस तरह की भाषा का इस्तेमाल किया किया वह जरा देखने की चीज है। मुझे ताज्जुब होता है कि किस तरह से मजहब के नाम पर लोगों का खून खौलाया जाता है, किस तरह से उन्हें प्रवोक किया जाता है। हमारे मिनिस्टर साहब ने उस पेम्फलेट का जिक्र नहीं किया।

यह पेम्फलेट सात तारीख को निकला जिसमें कहा जाता है कि यहां के जो एस० पी० है वे गन्दी हिन्दू है और वह हमारा जलूस नहीं निकलने देंगे। यहां हिन्दुओं का कुचला जा रहा है। यह सारी बातें उसमें थी। मुझे तो ताज्जुब होता है कि आपकी इन्टेलिजेंस ने, सी० आई० डी० उसकी आपको इत्तिला नहीं दी कि इस तरह का वहां पेम्फलेट निकला है। हमारे मुल्क में इस तरह के लोग मौजूद हैं जो ऐसी फिजा फैलाते हैं, रूमर फैलाते हैं कि कहां कितने लोग मर गये।

आपकी जनता पार्टी के एक एम० एल० ए० ने, जब डिस्ट्रिक्ट अथारिटीज ने इस जलूस को निकलने की इजाजत नहीं दी तो बिहार सरकार के एक मिनिस्टर हैं श्री शंकर देकरीवाल, उन पर पालिटिकल प्रेशर डाला और उस मिनिस्टर साहब ने डिस्ट्रिक्ट अथारिटीज को यह जलूस निकालने की इजाजत देने के लिए मजबूर किया। फिर इस जलूस की 11 अप्रैल को निकालने की इजाजत दी गयी। (व्यवधान)।

उस जलूस का लीड कर रहे थे श्री दीनानाथ पाडे जो कि आर० एस० एस० के एम० एल० ए० हैं। (व्यवधान) मैंने गलती की है, वे जनसंघ के एम० एल० ए० हैं। जनता पार्टी में जनसंघ भी शामिल है जो कि मजलूम इंसानों का कत्लआम करना है। यह बात मैं महसूस करती हूं कि वे जनसंघ के एम० एल० ए० हैं। लेकिन जनसंघ में लोग आर० एस० एस० ट्रेनिंग ले करा आते हैं। उसके कम्पो में जब उन पर ठप्पा लग जाता है तब वे जनसंघ में आते हैं। जनसंघ के सभी लोगों की ट्रेनिंग वहीं पर होती है। उन्हीं की वजह से आज सारे मुल्क में यह हो रहा है।

मैं अपनी कांस्टीच्युन्सी की बात आपको बताती हूं जहां कि मैं घूम कर आयी हूं। आपको अन्दाजा हो जाना चाहिए कि हमारे मुल्क में क्या हो रहा है। हमारे वहां एक छोटा-सा मंदिर बना है और उस इलाके में बना है जहां कि मुस्लिम पापुलेशन ज्यादा है। नौमी के दिन वहां पर एक गोश्त का टुकड़ा डाल दिया गया जिस पर कि उर्दू में बड़ी प्रवोकटिव भाषा में लिखा हुआ था। वह भाषा ऐसी थी कि जिससे कि हिन्दू, मुसलमान अपने होशोहवास में न रहें और वहां झगड़ा फसाद हो जाए लेकिन वहां के लोगों ने मिलजुल कर इस बात की कोशिश की कि ऐसा न हो और वहां की पुलिस ने भी जल्दी से एक्शन लिया। जिसने वह गोश्त का टुकड़ा फेंका था वह एक नामुस्लिम था।

इनका कोई मजहब या धर्म नहीं होता, वे न हिन्दू होते हैं और न मुसलमान होते हैं, ये इंसानियत के खून के प्यासे होते हैं, इंसान के खून के प्यासे होते हैं। वे इस मुल्क के नैशनल इंटग्रेशन को खत्म करना चाहते हैं, बेसिक कंसैप्ट जो सैक्यालरिज्म का है, उसको खत्म करना चाहते हैं और फिर से मुल्क को बरबादी के रास्ते पर ले जाना चाहते हैं। मैं यह नहीं कहती कि हम लोगो ने या हमारे अन्दर के लोगो ने बल्कि आप में से भी बहुत से लोगों न मिल कर इस मुल्क को एक गुलशन की हैसियत दी थी और इसको आप बरबाद न होने दे। अलीगढ़ में जो कुछ हुआ क्या वह मामूली वाका था ?

पैम्फ्लेट मे जो लिखा हुआ है कि पुलिस बिहार मिलिटरी पुलिस हमारा साथ देती है, हमारे साथ हमदर्दी करती है और अगर आप गए होंगे तो आपको भी लोगो ने यह बातें कही होंगी और इसकी भी जाच होनी चाहिये। लोगो ने बताया है कि हमें किसी हिन्दू ने नही मारा है, हम को बिहार पुलिस ने मारा है, बिहार मिलिटरी पुलिस ने मारा है। अलीगढ़ मे भी लोगो ने कहा था कि हम का पी ए सी के लोगो ने मारा है। कानपुर मे भी लोगो ने यही कहा था कि हम को पी ए सी वालों ने मारा है, बनारस मे भी यही कहा था कि हमारी दूकानो को पी ए सी वालों ने आग लगाई है। मैं कहना चाहती हू कि आप सी बी आई से इन सब की जाच करवाए और पता लगवाए कि जो फोर्स आप डिप्लाय करते है रायट एफैक्टिड एरियाज मे उस फोर्स के लोग कौन होते हैं, मलिटरी और पी ए सी और पुलिस के लोग होते है या वे होते है जिन्होंने उनके वर्दियां पहन रखी होती है और जो दूसरे लोग होते है।

अलीगढ में रायट्स हुए तो उस मे वही आर एस एस के लोग बहुत से पकड़े गए पी ए सी की वर्दी मे। आज आपको इस बात पर यकीन नहीं आएगा लेकिन आगे चल कर आपको इस बात पर जरूर यकीन आ जाएगा।

यह कहा गया है कि तीन दिन का कैम्प आर एस एस का हुआ। उस में खास तौर से राम नवमी की बात कही गई। यह कहा गया कि हमें जलूस यहां की डिस्ट्रिक्ट आथोरिटीज निकालने नहीं दे रही हैं। जो आर एस एस के या जन संघ के एम एल ए उस जलूस को लीड कर रहे थे मैं होम मिनिस्टर से पूछना चाहती हू कि उनको पकड़ा क्यों नहीं गया, क्यो उनको बन्द नहीं किया गया। आप खुद कहते हैं कि वह जलूस में शामिल थे और उन्होंने वहां जलूस को रोका। वहा रोकने का सवाल क्या था ? दो चार दिन पहले भी जब पुलिस वालों ने देखा कि इजाजत देनी पड़ेगी, तो एक दिन पहले उन्होने वहां बहुत सी गिरफ्तारियां की और उस में सुबोध प्रभाकर जो आर एस एस के संचालक हैं उनको भी पकड़ा और उन्होंने जो बात वहां पर मैजिस्ट्रेट के सामने जो उनको पकड़ने के लिए गए थे कही वह आपको स्टिफन साहब बताएंगे, सुनाएंगे। मैं उसके सुनाना नही चाहती हूं क्योंकि वक्त कम है। मैं दो तीन बातें ही आखिर में कहना चाहती हूं।

मिनिस्टर साहब ने कहा है कि नुक्सान कितना हुआ है इसका पता लगाने के लिए उनको वक्त चाहिये। लेकिने कितने लोग बेघर हो गए है और कितने रिलीफ कैम्पस में हैं यह जानकारी तो उनको देनी चाहिये। यह भी उन्होने नहीं दी है। उन्होने हमे स्टेटमेंट की कापियां भी नहीं दी है ताकि हमे पता चलता कि वाकात क्या क्या हैं। जो उन्होने पढकर सुनाया उतना ही हमे मालूम हो सका है।

मैं यह भी माग करती हू कि पूरी सी बी आई की इनक्वायरी होनी चाहिये और पता लगाया जाना चाहिये कि पैम्फ्लेट किस ने लिखा, किस ने निकाला और सात तारीख को बाटा गया तो इसका नोटिस क्यो नही लिया गया। इसकी पूरी इनक्वायरी होनी चाहिये। इसकी भी इनक्वायरी होनी चाहिये कि पी ए सी या बिहार मिलिटरी पुलिस के कौन लोग थे जिन्होने जुल्म किया और जिन्होने जुल्म किया उनके खिलाफ आप क्या एकशन लेने जा रहे है।

तीसरी बात यह है कि इस तरह की जो फोसिर्ज हैं उन से किस तरह से निपटा जा सकता है। जो सरकार में हैं और जो बाहर भी हैं, सरकार को चाहिये कि उनको इकट्ठा करके, उनको एक जगह बिठा कर उनको कोई रास्ता निकालने के लिए कहे। अगर ऐसा नहीं किया गया तो यह मुल्क बड़ी खतरनाक हवों को छूए बगैर नही रहेगा और छू रहा है। मुल्क में जो रिलिज माइनोरिटीज हैं उन में एक सैंस आफ इनसिक्योरिटी प्रिवल कर गई है। उसको निकाला किसी भी हकूमत में अक्सरियत का काम होता है, उसका फर्ज होता है। अक्सरियत का फर्ज होता है कि उस मुल्क की अकलियत को वह आराम से रहने दे और अकलियत में सैंस आफ सिक्योरिटी पैदा करे। कही पर ही अकलियत अक्सरियत के रहमोकरम पर होती है। जब तक अक्सरियत इस निगाह से उसकी तरफ न देखे कभी अकलियत खुश नही रह सकती है। ईसाई भाई हैं, मुसलमान भाई हैं, सिख भाई हैं इनको आप देखें तो आपको पता चलेगा कि हर एक में बेचैनी है, इंतशार है और एक दम से कहीं लावा न फूट पड़ इसका उनको डर है। अभी भी वक्त है हकूमत होश में आए। आस्तीन के जो सांप हैं उनको निकाल बाहर करे नही तो ये मुल्क को खत्म करके ही दम लेंगे। मुल्क का जो बेसिक कारैक्टर है, नैशनल इंटेग्रेशन है, कौमी यकजहती है, उस

[श्री मती मोहसिना किदवई]

बेसिक कंसैप्ट को वे खत्म करना चाहते है । आज भी वक्त है कि आप होश में आए और इन से किनाराकशी करे और जब तक आप इन से किनाराकशी नहीं करते हैं मै समझती हू कि आप अपनी मंजिल को पा नहीं सकते है । और आखिर में एक शेर आपके लिये अर्ज करना चाहती हू शायद आपकी आखे खुल, सके

ऐ राह रऊ रहबरे मंजिल को तो देखो मकतल
की तरफ राह बदलता सा लगा है

श्री हरिकेश बहादुर (गोरखपुर) · अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि आजादी के इतने सालो के बाद भी आज हमारे देश मे साम्प्रदायिक दंगे होते रहते है, और यह साम्प्रदायिक दंगे हमारे देश के हर हिस्से मे हो रहे है । किसी विशेष पार्टी के व्यक्ति को इस बात के लिये जिम्मेदार ठहराना कि उसने ही ऐसा किया है यह बहुत मुनासिब बात नही है । मै यह बात साफ तरीके से कहना चाहता हूं कि महात्मा गाधी जो बराबर इस बात के लिये लगे रहे और अपनी कुरबानी भी दे दी कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, सभी भाई भाई की तरह, इन्सान की तरह देश में रहें, उसके बावजूद भी आज हमारे देश के तमाम लोग कम्यूनल रायट्स कराते हैं, और इसलिये कराते है कि उससे उनका कुछ राजनीतिक हित और स्वार्थ सिद्ध होने को होता है । तमाम रिपोर्ट्स अखबारो मे आयी, किसी ने कांग्रेस (आई) को जिम्मेदार ठहराया, किसी ने आर० एस० एस० को जिम्मेदार ठहराया, और किसी ने किसी को जिम्मेदार ठहराया । इस तरह से तरह तरह से लोगों को जिम्मेदार ठहराया गया । लेकिन इसमें जो भी व्यक्ति जिम्मेदार हैं मैं तो चाहूंगा कि इसकी जाच हो और मुझे उम्मीद है कि हमारी सरकार इस कार्य को करने में कुछ उठा नही रखेगी, न्यायसंगत तरीके से पूरे मामले की जाच होगी और इन दंगों के लिये जिम्मेदार सभी अपराधियों को कठोरतम दंड दिया जायगा ।

अभी श्रीमती मोहसिना किदवई कह रही थी कि अलीगढ़ में दंगे हुए, जमशेदपुर मे दंगे हुए । जमशेदपुर में जो हुआ दर्दनाक बात है, लेकिन उनकी बात से साफ़ जाहिर था कि किसी एक दल को जिनकी सरकार है उसे जिम्मेदार ठहराना चाहती थीं । मैं उनको याद दिलाना चाहता हूं कि यह दुर्घटना चाहे जहां भी हो रही हो, चाहे अलीगढ़ हो या जमशेदपुर हो या हैदराबाद में हो, जहां कहीं हो रही है इनकी तीव्र निन्दा करनी चाहिये और सख्ती के साथ ऐसे लोगो के खिलाफ कार्यवाही की जानी चाहिये जो कम्यूनल राइट्स कराते हैं । हैदराबाद में क्या हुआ, मैं फिर याद दिलाना चाहता हूं, एक तिलमिलाने वाली घटना घटी थी । एक मुसलमान के सामने, पत्नी को पति के सामने रेप किया गया और बाद में पत्नी के सामने पति की हत्या कर दी गई । अगर इस तरह की दर्दनाक घटनायें हुई हैं तो उनको भी याद करना पड़ेगा, और अगर इसी प्रकार की घटनायें होती हैं तो हमें निन्दा ही नही करनी चाहिये, बल्कि हमको पूरा तैयार होना पड़ेगा कि अगर इस देश को गांधी के स्वप्नो का भारत बनाना है, अगर यहा पर साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करना है तो हमे सभी प्रकार के राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर देश मे साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता को स्थापित करना होगा । अगर आप यह महसूस करते है कि किसी दूसरे पर आरोप लगाकर, या हम आप पर आरोप लगा कर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो सकते है, तो यह गलतफहमी है, हम देश के साथ गद्दारी करेंगे । अगर हम ऐसा काम करेंगे तो हम अपने कर्तव्यो के प्रति सजग नही माने जायेंगे । हम सबको इस प्रकार की घटनाओ की तीव्र निन्दा करनी चाहिये और इसके खिलाफ जीवन भर संघर्ष करें और कुरबानी के लिये भी हमे और आपको तैयार होना पड़ेगा ।

जमशेदपुर मे काफी लोगो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है । हम यहा चाहे जितने भी हम पर आसू बहायें, हम महसूस करते हैं कि वहा पर प्रशासन ने अपनी जिम्मेदारी को ठीक ढंग से निभाया नही । जब इस बात की पहले से ही जानकारी हो रही थी कि कुछ लोग किसी प्रोसेशन को निकालने मे अवरोध उत्पन्न करेंगे, या कुछ लोग जबर्दस्ती प्रोसेशन निकालना चाहते हैं, और इससे तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है, तो प्रशासन को उससे सख्ती से निपटना चाहिए था । लेकिन लगता है कि इसमे कुछ कमी रही है । जब इस पूरे मामले की जाच होगी, तो सब बातें सामने आ जायेंगी ।

धर्म के नाम पर जो कुछ भी हो रहा है, वह वास्तव में धर्म की अवहेलना की जा रही है । जो लोग धर्म को सबसे कम समझते है, अथवा बिल्कुल ही नही समझते है, वही धर्म के नाम पर हिंसा करते हैं । धार्मिक कट्टरता अथवा धर्मांधता के कारण हिंसा करना धर्म पर एक भीषण अत्याचार है । ऐसे लोग धर्म का पालन नही करते हैं, बल्कि उसका शोषण करते है, और धर्म के साथ अधर्म करते हैं । हमें इन भावनाओं को अपने मनो में स्थान देना पड़ेगा, और उसका प्रचार करना पड़ेगा । केवल कुछ सियासी लाभ, राजनीतिक लाभ के लिए इधर-उधर जा कर एक दूसरे पर कीचड़ उछालने से देश में कभी साम्प्रदायिक सद्भाव नही हो सकता है, और जो दंगे आज हो रहे है, वे समाप्त नहीं हो सकते हैं ।

हममें से प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि आम हिन्दू, आम मुसलमान और आम सिख तथा ईसाई सभी शान्तिप्रिय हैं, सभी एक दूसरे के साथ मिल कर रहना चाहते हैं । आज सर्वहीन नाम के एक व्यक्ति का स्टेटमेंट निकला है, जो तीस साल का एक नौजवान है मेरे जैसा । उसने दस करोड़ रुपये की सरकारी सम्पत्ति को अपनी

जान को हथेली पर रख कर रक्षा की । वह सरकारी सम्पत्ति एक हिन्दू के घर रखी हुई थी । जब भीड़ उसको डेस्ट्राय, बर्बाद, करने के लिए आया, तो उसने उन लोगों को रोका । वहां झगड़ा भी हुआ, मगर फिर भी उसने अपनी जिम्मेदारी को निभाया ।

ऐसे व्यक्ति के प्रति हम सब के मन में सम्मान होना चाहिए और ऐसे लोगों को सभी प्रकार से पुरस्कृत करना चाहिये और इनाम देना चाहिए, जो साम्प्रदायिक सद्भाव और एकता के लिए, सम्पत्ति को बर्बादी से बचाने के लिए, जन धन की रक्षा के लिए कुर्बानी देने के लिए सामने आते हैं । हमें ऐसे लोगों को अवश्य इनाम देना चाहिए और उनकी सराहना करनी चाहिए ।

जो कुछ भी वहां हुआ है, मैं विश्वास करता हूं कि सरकार उसकी जांच करेगी और दोषी लोगों को दंड देगा । मैं सुझाव के तौर पर कुछ बातें कहना चाहता हूं ।

जैसा कि मैंने सर्फुद्दीन के बारे में कहा है, जो लोग जन धन की रक्षा के लिए इस प्रकार का कार्य करते हैं उन्हें पुरस्कृत करना चाहिए ।

सभी वर्गों के प्रतिनिधियों की मिली जुली शांति समितियां बनानी चाहिए, जो साम्प्रदायिक सद्भाव, आपसी एकता और सौहार्द के वातावरण का निर्माण कर सकें ।

जहां पर भी इस तरह से कम्युनल रायट होता है और साम्प्रदायिक सद्भाव को तोड़ने की चेष्टा की जाती है, वहां सामूहिक जुर्माने की पद्धति लागू करनी चाहिए । अगर जरूरत हो, तो इसके लिए संसद् में कानून पास करना चाहिए ।

पुलिस फोर्स को रीआर्गनाइज करने की बहुत आवश्यकता है । जब कोई दंगा होता है, कोई इस तरह का आक्रमण होता है, कोई इस प्रकार का झगड़ा होता है, तो पुलिस के लोग भी उसमें इनवाल्व होते हैं, चाहे यू० पी० में पी०ए०सी० हो, बिहार में बिहार मिलिटरी पुलिस हो, हैदराबाद में भी ऐसा कोई संगठन होगा । इसलिए पुलिस फोर्स को रीआर्गनाइज किया जाय और माइनारिटीज के लोगों को उसमें अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाय ताकि उनकी रक्षा की जा सके ।

इस पूरे मामले की जांच कर के अपराधियों को कड़ा दंड देना चाहिये । अलीगढ़ में जो कुछ हुआ उसकी जांच हो चुकी है । लेकिन मुझे पता नहीं कि उसके बारे में क्या कार्यवाही की गई । जोरहाट में एक कांड हुआ—प्रधान मंत्री जी का हवाई जहाज गिर पड़ा । कहा गया था कि उसकी जांच होगी । मुझे पता नहीं चल पाया कि क्या उसकी जांच हुई और कौन लोग उसमें दोषी पाये गये । कहा जाता है कि उस एयरपोर्ट पर 7 बजे के बाद हवाई जहाज नहीं उतरना चाहिए । लेकिन वह प्रधान मंत्री जी का हवाई जहाज था । पंद्रह दिनों में उसकी जांच होनी चाहिए थी और अपराधियों को दंडित किया जाना चाहिए था । लेकिन ऐसा नहीं किया गया ।

कम्युनल रायट या दूसरी घटनाओं के बारे में जांच समितियां बन जाती हैं, मगर उनकी जांच की रिपोर्ट बहुत देर से आती है । इस लिए जो कोई भी सीरियस घटना हो, जमशेदपुर, अलीगढ या हैदराबाद का कांड हो या कोई ट्रेन कैजुअलिटी हो, उसके बारे में जो जांच समिति बनाई जाये, उसकी रिपोर्ट फौरन आनी चाहिए और उसके अनुसार कार्यवाही करनी चाहिये ।

पुलिस स्ट्रासिटीज की भी जांच होनी चाहिए । यह पता लगाना चाहिए कि क्या उसने कोई अत्याचार किये हैं । जांच के बाद पुलिस के जो लोग दोषी पाये जायें, उन्हें दंडित किया जाना चाहिए ।

अगर इन दंगों के पीछे कोई आर्थिक कारण हो, कोई अन्य कारण हो, या कोई लोकल प्राबलम हो, तो उसको डीप्ली स्टडी करना चाहिए और उसको दूर करने का ठोस प्रयास करना चाहिए । ऐसा नहीं होना चाहिए कि फायर ब्रिगेड की तरह, जब आग लगी, तो उसको बुझा दिया, और बाद में उसकी तरफ कोई ध्यान न दिया ।

जो एन्टी-सोशल एलिमेंट्स साम्प्रदायिक सद्भाव और साम्प्रदायिक एकता को तोड़ने की कोशिश करते हैं, हर जगह उनकी एक लिस्ट बननी चाहिए । जब कभी भी तनाव की स्थिति उत्पन्न हो, तो ऐसे लोगों को पहले गिरफ्तार कर लेना चाहिए । क्योंकि इसके लिए कानून है ।..... (व्यवधान) .उनकी जरूर गिरफ्तारी करनी चाहिए, वह चाहे आर०एस०एस० के हो, चाहे उनके दल के हो, किसी भी दल के हो, उनको सबको गिरफ्तार करना चाहिए । मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) . अध्यक्ष महोदय, जमशेदपुर में जो घटना हुई है वह बहुत ही शर्मनाक और बहुत ही हृदय विदारक है । इस घटना से मानवता लज्जित हुई है, इंसानियत बहुत नीचे गिरी है । मैं पूरे जोर के साथ इसकी निन्दा करना चाहता हूं और यह भी कहना चाहता हूं कि वहां पर मरने वाला हर इंसान एक हिन्दुस्तानी है, वहां पर जिसकी भी हत्या हुई है, जिसकी भी मौत हुई है वह एक हिन्दुस्तानी है और हिन्दुस्तानी का खून वहां पर गिरा है । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस कांड से हमें जरूर इस बात को देखना चाहिये कि हिन्दुस्तान के अन्दर इस तरह की गलत बातें आगे न हों । इस कांड के अन्दर जो बातें सामने आई हैं उनसे मालूम पड़ता है कि एक प्रोसेशन को लेकर बात शुरू हुई । मैं इससे पूरी तरह से सहमत हूं कि ऐसे प्रोसेशन जिनसे साम्प्रदायिक

[श्री विजय कुमार मल्होत्रा]

दंगे हो सकें, उनके बारे में जरूर विचार करना चाहिए कि उनको निकलने दिया जाय या न निकलने दिया जाय । हालांकि यह बात सिद्ध हो चुकी है एक कोर्ट की जजमेंट से कि प्रोसेशन निकालना एक मौलिक अधिकार है । लेकिन जो प्रोसेशन या धार्मिक जुलूस आगे जा कर किसी जगह पर साम्प्रदायिक दंगे में परिवर्तित होता है उसके बारे में काफी देशव्यापी तौर पर विचार होना चाहिए ।

दिल्ली के अन्दर आप देखते हैं कि यहां पर रामनवमी का जुलूस हो या, रामलीला का जुलूस हो, वह सारी मस्जिदों के आगे से गुजरता है । इसी तरह हजरत पैगम्बर साहब का जन्म जिस दिन मनाया गया, उनके जुलूस का सारे मन्दिरों ने और गुरुद्वारों ने स्वागत किया । यहां पर उनके साथ मिल कर के प्यार और मोहब्बत के साथ यह सारी स्थिति चली । यह हालत सारे देश में क्यों नहीं हो सकती है ? जहां एक धर्म की मेजारिटी है वहां दूसरे धर्म का जुलूस ही नहीं निकल सकता है, यह स्थिति कोई अच्छी स्थिति नहीं है ।

मैं इस मौके पर यह भी कहना चाहता हूं कि पिछले अनेक दंगे हुए । भिवंडी में दंगा हुआ, सम्भल के अन्दर दंगा हुआ, अलीगढ़ के अन्दर दंगा हुआ, अहमदाबाद में हुआ और बड़े बड़े कमीशन बैठाए गए । उन कमीशन्स ने बड़ी बड़ी रिपोर्टें दीं । परन्तु आज तक एक भी रिपोर्ट के ऊपर पूरी तरह से अमल करने का काम नहीं हुआ । उन रिपोर्टों के मुताबिक यदि कार्यवाही की जाय तो शायद आगे दंगे होने की संभावना कम हो सकती है ।

परन्तु मैं इस मौके पर यह कहना चाहता हूं कि इन दंगों से सबक लेकर इनको आगे रोकने के बजाय वह इन दंगों का राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश कर रहे हैं । मुझे बड़ा आश्चर्य होता है, मेरी बहन किदवई । यहां पर कुछ कहा, वहां लोगों ने होम मिनिस्टर से भी यह कहा कि हमें किसी हिन्दू ने नहीं मारा, हमें पुलिस ने मारा और उसके पहले वह कहती हैं कि नहीं, इसमें आर० एस०एस० का हाथ है । अगर पुलिस ने मारा, किसी हिन्दू ने नहीं मारा तो आर०एस०एस० का हाथ उसमें कहां से आ सकता है ? कितना कांट्रेडिक्शन है उनकी बात में । परन्तु कुछ लोग हैं जिनको इस बात से खुशी होती है, अगर कहीं पर दंगे हों तो उनके मन के अन्दर, दिल के अन्दर मानो बड़ी खुशी की लहर दौड़ती है कि आ गया मौका, अब हम आर०एस०एस० को गाली दे सकते हैं । लोगों की लाशों के ऊपर सिद्धों की तरह बैठकर और सिद्धों की तरह नोंच नोंच कर खाने वाले लोग जो अपने राजनैतिक स्वार्थों की सिद्ध करने के लिए इन दंगों का राजनैतिक लाभ उठाना चाहते हैं, मेरा कहना है कि उनसे ज्यादा गिरा हुआ इंसान नहीं हो सकता जो बजाय इस बात के अन्दर जाने के कि दंगे कैसे रोके जायं, सिर्फ उसमें से राजनैतिक उल्लू सीधा करने की बात करते हैं । उन्होंने कहा कि हमेशा ही दंगों के अन्दर आर०एस०एस० का हाथ रहा है । अहमदाबाद के अन्दर दंगा हुआ । उन्होंने इसी तरह के चार्जेज लगाए और सारे चार्जेज के अन्दर इसी बात को दोहराया कि आर०एस०एस० का हाथ है । इसके बाद वहां कमीशन बैठा जिसके अन्दर जगमोहन रेड्डी थे, जिसके अन्दर जस्टिस अकबर थे और एक और जस्टिस, तीन जस्टिस उसके अन्दर थे और तीनों ने मिलकर यूनानिमस रिपोर्ट में कहा कि यह चार्ज बिल्कुल बेबुनियाद और बिल्कुल गलत है । इसके अन्दर किसी आर०एस० एस० का कोई हाथ नहीं था और न आर०एस० एस० की वहां पर जो मीटिंग हुई थी उसका कोई जिक्र उसमें आया । यही बात भिवंडी के बारे में कही गई । इसके बाद तीसरे कमीशन की रिपोर्ट में भी यही बात कही गई । परन्तु कोई मौका मिलना चाहिए ।

मैं इसके अन्दर के वाकयात का जिक्र नहीं करना चाहता, सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि जमशेदपुर में उस दिन हुआ क्या । पहले दिन होम मिनिस्टर साहब का बयान था, वहां के चीफ मिनिस्टर का बयान आया था और उसके अन्दर जो डा० अखौरी और कालकानन्दन सिंह हैं वह किस पार्टी से ताल्लुक रखते हैं ? डा० अखौरी कांग्रेस पार्टी से ताल्लुक रखते हैं और कालकानन्दन सिंह जो हैं उनका ताल्लुक कम्यूनिस्ट पार्टी और कांग्रेस पार्टी से है । ये दोनों आदमी वहां पर जुलूस को जो आगे जा रहा था, उसको आगे जा कर रोक दिया जाय, इसकी कोशिश करते रहे और जिस जनता पार्टी के विधायक का जिक्र कर रहे हैं उसने बार बार लोगों से यह कहा है कि यहां पर जुलूस आगे बढ़ना चाहिए, कोई जरूरी नहीं है कि जो आदमी झंडे का संकल्प करता है वही झंडे का विसर्जन भी करे । झगड़ा इस बात पर हो रहा था कि हनुमान मन्दिर का जो पुजारी है उसने झंडे का संकल्प किया था और उसका विसर्जन उसको करना चाहिए था लेकिन बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया और धार्मिक तौर पर वह विसर्जन नहीं कर सकता था । इसीलिए मांग उठाई गई कि पहले उसको रिहा किया जाए । परन्तु जनता विधायक ने कहा कि यह जरूरी नहीं है, उसको रिहा किए बिना जुलूस आगे ले जाया जाए । उसमें मुसलमान सदस्य भी शामिल थे जो उनके साथ जा रहे थे । परन्तु जुलूस को रोक दिया गया और जुलूस को रोकने के बाद मस्जिद के पास से उसके ऊपर पत्थर गिराए और उसके ऊपर बम गिरा । मैं यह कहना चाहता हूं कि बाद की जो घटनाएं हुई वह बहुत शर्मनाक और निन्दनीय हैं । किसी को भी किसी के ऊपर हाथ उठाने का कोई अधिकार नहीं है । परन्तु क्या यह सत्य नहीं है, यह कहते हैं कि वहां पर हिन्दुओं ने प्लान करके हत्याकाण्ड किया, वहां पर पहले दिन जो लोग घायल होकर अस्पताल में गए उनमें 56 में से 45 हिन्दू थे और बाकी बातों में पहले दिन 9 आदमी हिन्दू थे ? क्या

पहले दिन हिन्दुओं ने संकल्प करके हिन्दुओं की हत्या की और उसके बाद उन्होंने कोशिश की कि इस तरह की घटना की जाए। जिस तरह से बात को रखा जा रहा है, मैंने पहले कहा

(Interruptions)

MR SPEAKER You should not try to obstruct him from speaking Unless it is unparliamentary, I cannot intervene

SHRI SAUGATA ROY Sir, is it a communal propaganda?

MR SPEAKER Unless it is unparliamentary I cannot intervene

श्री विजय कुमार मल्होत्रा मैं कहना चाहता था कि जिस आदमी ने वहां पर अस्पताल का जाती के बात पर हमला किया

(Interruptions)

MR SPEAKER I think the hon Members will bear in mind that our idea is to see that the situation is cooled down You should not accentuate it either inside the House or outside or you should not say something which will accentuate the situation

श्री विजय कुमार मल्होत्रा मैं इसीलिए आपसे कह रहा हूं कि जिस किसी ने मुसलमान पर हाथ उठाया या जिसने एम्बुलेंस गाड़ी पर बम गिराया वह इनसान नहीं था, उससे बड़ा शैतान कोई हो नहीं सकता—उसको भी हम कन्डेम करना चाहते हैं लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि जो तरीका है दुनिया भर में (व्यवधान) आप देखें कि कहीं भी कोई मर्डर होता है तो उसका मोटिव देखा जाता है कि किसका क्या मोटिव था। कौन लोग हैं जो हिन्दुस्तान में दंगा कराना चाहते हैं? मैं जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं कि वहां पर कम्युनिस्ट पार्टी की जो मीटिंग हुई थी, वहां पर जमशेदपुर में सी०पी०एम० के जो लोग हैं, जो कांग्रेस पार्टी के लोग हैं और कांग्रेस (आई) के जो लोग हैं (व्यवधान)

MR SPEAKER You are denying him of his right to speak.

श्री विजय कुमार मल्होत्रा : तीनों की मंशा क्या है? कांग्रेस (आई) का एक ही तरीका है कि सारे देश में रायट्स हो जायें, खूनखराबा हो जाए तो बाद में किसी तरीके से वे वापिस आने की बात सोच सकते हैं। मैं होम मिनिस्टर साहब को सावधान करना चाहता हूं, इस साजिश को वे जरूर देखें कि वे लोग किस तरीके से सारे देश में आग फैलाना चाहते हैं। इतना ही नहीं, चाहे शिया सुन्नियों का झगड़ा हो जाए, हरिजन सवर्ण का झगड़ा हो जाए या और कोई दूसरा झगड़ा हो जाए, उसका राजनीतिक लाभ उठाने की कांग्रेस (आई) की चाल है—इस बात को भी देखना चाहिए। मैं अपोजीशन के लोगों से यह भी रिक्वेस्ट करना चाहता हूं कि यह जो इस तरह की कहवा फैल रही है कि हिन्दुस्तान में माइनारिटीज का कत्लेआम हो रहा है, माइनारिटीज को खत्म करने की कोशिश की जा रही है—यह भी एक प्रोपेगन्डा है। इसके द्वारा वे सारी दुनिया में साबित करना चाहते हैं (व्यवधान) आप श्रीमती इंदिरा गांधी के समय के रायट्स और इस समय के रायट्स की स्थिति को देखें। आप इस बात को भी देखें (व्यवधान)

MR SPEAKER I can only appeal, nothing more than that

I know rabid speeches are made on both sides

SHRI JYOTIRMOY BOSU You want this to be read by the international readership (Interruptions)

श्री विजय कुमार मल्होत्रा अध्यक्ष महोदय, होम मिनिस्टर साहब इस बात को भी देखें—क्या इस बात का ताल्लुक इससे तो नहीं है कि हमारे प्राइम मिनिस्टर बंगला देश जा रहे थे बंगला देश में उनकी बातचीत होने वाली थी इसलिये बंगला देश जाने से पहले कांग्रेस (आई) के लोगों ने इस तरह की बात की कि वहां पर दंगे हो जायें और प्राइम मिनिस्टर जिस मकसद से जा रहे हैं उसमें कोई रुकावट डाली जा सके।

हमारे दोस्त जो कह रहे हैं, उनकी इस बात को छोड़ कर हमें यह देखना चाहिये कि दंगे रोके कैसे जा सकते हैं। मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि सरकार तमाम पार्टियों के लोगों को बैठा कर, उनकी नेशनल इन्टीग्रेशन कौन्सिल को रिवाइव करके, इस बात को देखा जाय और हिन्दुस्तान में एक नेशनल-मेन-स्ट्रीम में सबको लाने की कोशिश की जाय। चाहे जिन्ना की टू-नेशन-थ्योरी हो या इनकी मल्टी-नेशनल-थ्योरी हो—इसके बजाय सब लोगों को एक नेशन, एक राष्ट्र के आधार पर एक मेन-स्ट्रीम में लाने की कोशिश की जाय

(*Interruptions*)**

MR SPEAKER: Do not record.

SHRI AHSAN JAFRI (AHMEDABAD): On a point of order. The hon. Member has misquoted the Jagmohan Reddy Commission's report that the Commission has stated that these parties were there. On the contrary, it has been stated in the report that Jan Sangh workers had tried to fan the communal feelings during the days of riots... (*Interruptions*).

MR SPEAKER: This is not a point of order, but a point of correction Under Direction 115, I will look into the matter I have not read the report

श्री मोहम्मद शफी कुरेशी (अनन्तनाग) स्पीकर साहब यह लोक सभा की बदकिस्मती रही है जो हर सेशन में हमें फिरकेवाराना फिसादात पर बहस करनी पड़ती है। यहां प्राइम मिनिस्टर बैठे हैं—हिन्दुस्तान की पार्लियामेंट कोई कल्चरल फोरम नहीं है और खुद प्राइम मिनिस्टर ने इस बात का एतराफ किया है कि आर०एस०एस० एक कल्चरल फोरम है, पोलिटीकल पार्टी नहीं है, लेकिन अब सबूत देने की जरूरत नहीं है, ज्योंही यहां आर०एस०एस० का नाम लिया जाता है—ये जो उसको कल्चरल आर्गेनिजेशन कहते हैं (व्यवधान) तो मुखालिफ मेम्बरान सामने खड़े हो जाते हैं। क्या इससे बढ़ कर कोई और सबूत चाहिये कि आर०एस०एस० पोलिटीकल आर्गेनिजेशन है और हिन्दुस्तान की पार्लियामेंट में मौजूद ये लोग हैं और हिन्दुस्तान में जहर फैला रही है। इवान के अन्दर और बाहर इनका यही काम है।

मुझे अफसोस है—कि विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा—राष्ट्रीयकरण की वही थ्योरी में सबको एक होना चाहिये—इसी थ्योरी ने हिन्दुस्तान को बरबाद किया है . (व्यवधान)..

एक विजय कुमार मल्होत्रा, जो लाहौर में पैदा हुए, और एडवानी साहब जो कराची में पैदा हुए, वह हिन्दुस्तान में आ कर हिन्दुस्तानी बन सकते हैं, लेकिन जो बिहार का मजलूम बिहार में पैदा हुआ, जिसके आबा-इजदाद यहां ही पैदा हुए और मरे, उसको कहें कि वह सैकेण्ड-क्लास सिटिजन या शहरी है—यह इन्साफ नहीं है, यह जुल्म है। इसी किस्म के जहर ने हिन्दुस्तान की फिजा को खराब किया है। आपको तो मशकूर होना चाहिये कि हिन्दुस्तान की सर-जमी ने आपको पनाह दी, आप अपनी जान बचा कर पाकिस्तान से आये, देश को बचाने के लिये पाकिस्तान में नहीं आये थे.... (व्यवधान). .

स्पीकर साहब, मुझे कहना तो बहुत कुछ है। लेकिन अब मैं एक अखबार के एडीटोरियल को पढ़ रहा था। शायद उसके पढ़ने से मेरे आइया का कुछ समझ आये। वह यह लिखता है—

"जमशेदपुर और नवाही इलाकों में 104 अशखास मौत से हम आगोश हो चुके हैं। आखिर ये इसी धरती के लाल थे, जिनका खून बहा। इनका कुसूर था तो सिर्फ यह कि इन्होंने इस सरजमी पर जन्म लिया। इनकी खता थी तो यह कि इनकी कोई खता न थी। आह, कौन बतायेगा कि इनमें से कितने पुलिस की गोलियों का निशाना बने, कितने फिसादियों की जारहियत का शिकार हुए। वह जो भी थे—हिन्दू थे, मुसलमान थे, मगर आखिर इसी मुल्क के रहने वाले थे।

इन्होंने इस मुल्क को अपना समझा था। इस मुल्क के बनाने और संवारने में इनका हाथ रहा होगा। इन्होंने खुद या इनके आबाअजदाद ने इस मुल्क को आजाद कराने में कुर्बानियां दी होंगी। मगर बाहसरता महात्मा बुद्ध की जन्मभूमि पर इन्हें बेदर्दी से हलाक कर दिया गया। वह अदमतशद्दुद के सबसे बड़े अलमबरदार की सरजमीन पर तशद्दुद का शिकार हो गये। जीव-हत्या के मुखालिफ महावीर जी के जन्म-स्थान पर इनकी हत्या कर दी गई। जिस सरजमीन से महात्मा गांधी ने अपनी अदमतशद्दुद पर मबनी पहली तहरीक का आगाज किया था, वहां तशद्दुद का वह मजाहिरा हुआ कि आसमान कांप उठा होगा और धरती लरज गई होगी। जिस सरजमीन को आजाद कराने के लिए राजेन्द्र प्रसाद और अजीमुलहक ने, जगजीवन राम, श्रीकृष्ण सिन्हा, अली इमाम, डाक्टर सईद माहम्मद और अबुअल मोहसिन, मौलाना सजाद, बिहारी ने शाना-ब-शाना जद्दो-जहद और कुर्बानियां दी थीं, आजादी के बाद इस सरजमीन के सपूतों का आए दिन खून बहाया जा रहा है। जिस धरती को स्वर्ग बनाने के लिए जयप्रकाश ने आन्दोलन किया था और बगावत का आलम बुलन्द किया था, आज वहां पर बेगुनाहों को मारा जाता है। मैं समझता हूं कि अगर हम इस तरीके से ये जो फसादात होते हैं, इन पर गौर करें, तो शायद इसी नतीजे पर पहुंच सकते हैं लेकिन अगर जजबात की रू में बह कर पोलीटीकल फायदा उठाने की कोशिश करें, तो मैं समझता हूं कि किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सकते।

कई माननीय सदस्य : आप क्या कर रहे हैं ?

**Not recorded.

चौ मोहम्मद शफी कुरेशी : मैं वाकयात बयान कर रहा हूं । जमशेदपुर में जो खूनी ड्रामा खेला गया, तमाम अखबारों ने जिनकी कटिंग मेरे पास मौजूद है, उन्होंने कहा है कि यह सोची समझी तरीका और साजिश के तहत किया गया है और इसमें काफी पहले से तैयारी थी । इसको फसाद का नाम देना ठीक नहीं होगा । मैं समझता हूं कि यह फसाद नहीं था बल्कि कत्ले-आम करने के लिए पहले से एक मनसूबा बनाया गया था ।

अब इसका जो तरीका है, इन फसादात को शुरू करने का जो तरीका है, आप यह देखेंगे कि यह बिल्कुल बदला नहीं है । कुछ रोज पहले आर०एस०एस० के सीनियर लोग वहां जाते हैं, कैम्प लगाते हैं, कालेजों में जा कर, इन्टीट्यूशन्स में जा कर, और कुछ दिनों के बाद जब जुलूस निकालना होता है, तो अमरार किया जाता है कि जुलूस जो है वह मस्जिद के करीब से निकले और मस्जिद में ही फसाद को इब्तदा की जाए । मैं पूछना चाहता हूं कि जब 20,000 लोगों का जुलूस निकलता है या 10,000 लोगों का जुलूस निकलता है, तो क्या वे बेवकूफ लोग हैं, मस्जिद में जो 200 या 100 आदमी हैं वे क्या अपने को हलाक करने के लिए इतने बड़े जुलूस पर हमला कर सकते हैं ? यह नामुमकिन है लेकिन मस्जिद एक ऐसी जगह है, जिसको ही फसाद का निशाना बनाया जाता है और बिल्कुल यही पैटर्न या तरीका हर जगह, जहां पर फसादात हुए हैं, अपनाया गया है और इसी पैटर्न को दोहराया गया है । जमशेदपुर में जो कुछ हुआ है, उसके बारे में जो कुछ अखबारों में आया है, वह मैं बता सकता हूं । ये अखबार मेरे पास हैं । इसमें लिखा है :

"... Members of Parliament described the holocaust in the steel city, was pre-planned. The outrage followed a RSS camp which was organised in a local college in the teeth of opposition by the teachers and students. The RSS-dominated Central Akhara Samiti distributed provocative leaflets and incited communal passions with total impunity. A Janata MLA .." —it has been admitted by the hon. Home Minister.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: Which is that newspaper?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI: It is the editorial in *'Patriot'*. It says further:

"...A Janata MLA and RSS leader stopped the Ram-navami procession in front of a mosque and made inflammatory speeches...."

यहां पर यह देखने की बात है कि जुलूस को रोका जाता है, जनता पार्टी का, आर०एस०एस० का एक एम०एल०ए० जुलूस को रोकता है और मस्जिद के करीब रोकता है और मस्जिद से जब जुलूस आगे को जाता है, तब शोर किया जाता है कि एक बम फटा है और मिनटों में ही निहत्थे, मासूम और बेगुनाहों को लूटा जाता है, कत्ल किया जाता है । तो क्या यह सोची समझी कार्यवाही नहीं है ? मैं अपनी पार्टी की तरफ से इस बात का साफ एलान करना चाहता हूं कि हम इस फसाद के लिए आर०एस०एस० को जिम्मेवार ठहराते हैं और आर० एस० एस० को तो आजकल बदकिस्मती से अले अहकाम मिला है क्योंकि वे हुकूमत का साथ देते हैं । मैं पूछना चाहता हूं कि अब वक्त आ चुका है कि मौजूदा जनता सरकार इस बात पर गौर करे कि अगर वह फिरकादाराना इत्तहाद इस मुल्क में लाना चाहती है, तो क्या वह उसे आर०एस०एस० को साथ ले कर ला सकते हैं । आज सबसे बड़ी मुश्किल हो गयी है कि अक्लियत में, माइनोरिटीज में एक खौफ, दहशत और बेयकीनी पैदा हो गयी है और ये चीजें तब तक दूर नहीं हो सकती जब तक कि हुकूमत में आर०एस०एस० हिस्सेदार जमात है । मैं यह साफ कह देना चाहता हूं कि आर०एस०एस० एक पोलिटिकल जमात है और वह हिन्दुस्तान के हर हिस्से में मौजूद है । जब तक ऐसी जमात हुकूमत में रहेगी तब तक ऐसे झगड़े होते रहेंगे ।

अखबार "हिन्दू" ने इस झगड़े को मनसूबाबन्द और साजशी कहा है । यह सारी चीज प्रीप्लान्ड थी । आप हिन्दुस्तान टाइम्स, स्टेटसमेन, पेट्रियट, किसी भी अखबार को देख लीजिए, सभी यह कहते हैं कि फसादात हो रहे हैं पूरी तैयारी के साथ, पूरी साजिश के साथ वहां किये गए जिसका कि नतीजा आज हमारे सामने है । खतरनाक नतीजा एक मेम्बर मिस्टर मलहोत्रा ने बयान में यह कह दिया कि चूंकि वजीरेआजम बंगलादेश जा रहे थे, इसलिए उनके मिशन को नाकाम कराने के लिए यह सब खेल खेला गया । इससे बढ़कर आर०एस०एस० को जहनियत का सबूत और क्या हो सकता है ? मैं अफसोस करता हूं आर०एस०एस० की जहनियत पर । वह अगर यह कहते कि मोरारजी देसाई बंगलादेश के साथ तिजारती कारोबार बढ़ाने के सिलसिले में आर०एस०एस० की यह तजवीज साथ ले जाते कि और चीजों के अलावा अब हिन्दुस्तान से लाखों और हड्डियों को सस्ते दामों में खरीदा जा सकता है तो वह शायद सच बोलते । यहां पर आदमी की जान सस्ते में मिल सकती है । इसकी मिसाल आपको जमशेदपुर और अलीगढ़ में देखने को

[श्री मोहम्मद शफी कुरैशी]

मिल चुकी है । इस तरह की बातें करके ये लोग हिन्दुस्तान को तौहीन करते हैं । आप हिन्दुस्तान के वकार को नीचे गिराते हैं । जो कुछ जमशेदपुर में हुआ उससे सारे हिन्दुस्तानियों का सिर शर्म से झुक गया है । हम उस जहनियत के खिलाफ हैं जो जहनियत किसी मुल्क में आग लगाती है, चाहे वह जहनियत किसी भी फिरके से ताल्लुक रखती हो ।

अध्यक्ष महोदय, आप देखेंगे कि जमशेदपुर में घरों को लूटा गया, लोगों को मारा गया । वहां मुसलमानों को मारा गया । बहुत से लोगों को अपनी जगह छोड़ कर दूसरी जगह पनाह लेने पर मजबूर किया गया । जब दूसरी जगह लोग पनाह लेने के लिए गये तो जो एक कनवाय बनाया गया था, उसमें एक वैन गाड़ी थी, जिसमें छोटे छोटे बच्चे और औरतें बैठी हुई थीं । उस वैन का ड्राइवर आर० एस० एस० से ताल्लुक रखता है, उसने उस वैन को इस कनवाय से निकाल कर और सड़क पर लाया और खुद भाग गया । उसमें 50 से ज्यादा मुसलमान बच्चे मारे गये । इसको बम से उड़ा दिया गया । यह जुल्म इन जालमों ने किया । जब तक हम सब लोग इन जालिमों के खिलाफ एकजुट हो कर उनका मुकाबला नहीं करेंगे तब तक हिन्दुस्तान से यह चीज खत्म नहीं हो सकती है और न अमन रह सकता है ।

शफीउल्लाह नाम का स्टील मिल में मजदूर था । जिसका कोई कसूर नहीं था । वह यह भी नहीं जानता था कि कुछ दिन पहले आर० एस० एस० के लोगों ने आकर पाम्फ्लेट निकाला था कि अब वक्त आ चुका है, कुछ फिरकों से बदला लेने का । उसे और उसकी बीवी को जला दिया गया । उसके पांच छोटी छोटी मासूम लड़कियां थीं जिनमें से दो नौजवान थीं । उनके साथ जिनाबालजबर किया गया और तीन लड़कियां अभी तक लापता हैं । अगर इस किस्म के वाकयात इस मुल्क में होते रहे तो अकलीयतें क्या आप से कोई तवक्को रख सकती हैं ?

जब बिहार जल रहा था तो हिन्दुस्तान के वजीरेआजम एसीफन्ट पोलो देख रहे थे । तीन दिन के बाद हिन्दुस्तान के होम मिनिस्टर वहां जाते हैं, वापस आते हैं, फिर जाते हैं । लेकिन बेबसी का आलम उनके सामने था । श्री कर्पूरी ठाकुर जो वहां के चीफ मिनिस्टर हैं, उनको हटाने के लिए, उनके खिलाफ साजिस करने के लिए पहले से ही आर०एस०एस० का यह निशाना था । आर०एस०एस० जानता था कि जब तक यह खूनी ड्रामा नहीं खेला जाएगा तब तक उनको नहीं हटाया जा सकेगा । उनको कमजोर नहीं किया जा सकेगा । हालांकि चीफ मिनिस्टर वहां मौका पर थे क्योंकि उनके पास अथारिटी नहीं थी वे बेबस कर दिये गए थे । ऐसी सूरत में जब हम इन सारे वाकयात का मुतालबा करते हैं तो यह नतीजा सामने आता है कि यह एक सोची-समझी कतले आम वक्त बनाई स्कीम थी जिसके तहत जमशेदपुर में यह खूनी ड्रामा खेला गया ।

जनता पार्टी के एक जिम्मेवार मेम्बर श्री मधु लिमये जिनकी बात की हम बहुत कद्र करते हैं, वे कहते हैं कि इस में आर०एस०एस० का हाथ था, आर० एस०एस० ने ये दंगे करवाये । श्री फजलुर रहमान जो एक मिनिस्टर हैं, उन्होंने कहा कि अगर हिन्दुस्तान का यही होम मिनिस्टर है तो हिन्दुस्तान को खुदा बचाये । उन्होंने भी कहा कि ये फसादात आर०एस० एस० ने करवाये । हमारे पास सबूत मौजूद है । मेरे पास ऐसे लोगों के नाम मौजूद हैं जिन्होंने अपनी आंखों से देखा कि कौन-कौन आर०एस०एस० के जल्लाद और बड़े बड़े कातिल जलूस ले कर के मुसलमानों का कत्लआम करवाने जा रहे थे । अगर नाम चाहिये तो मेरे पास नाम हैं और मैं दे सकता हूं । श्री परमेश्वर, एम एल सी, राम अवतार सिंह सांबिक एम एल ए, कामरेड जे बी सिंह, कामरेड नारायण जगन्नाथ शास्त्री, कामरेड...(व्यवधान) आर एस एस के वहां पर थे---

श्री कंवर लाल गुप्त : गलती हो गई है ।

श्री मोहम्मद शफी कुरैशी : देखना होगा कि किस स्कीम के तहत इन गुंडों लफंगों और बदमाश लोगों ने इकट्ठे हो कर मुसलमानों को उजाड़ दिया है । 45000 से ज्यादा लोग इस वक्त उजड़ चुके हैं । जो लोग दस तारीख को अपने अपने घरों में अपने अपने बाल बच्चों के साथ शान्ति से रह रहे थे वह अठारह तारीख से अपने बाल बच्चों के साथ नहीं है, नीचे उनके खुदा की जमीन है और ऊपर खुदा का आसमान है, और उनके पास अपना सिर ढकने के लिए जगह नहीं है । अभी तक मालूम नहीं है कि सरकार ने उनके लिए क्या किया है, उनको बसाने के लिए क्या काम किया है । सब से बड़ी बात यह है कि अकलीयतों में एतमाद दिन ब दिन मौजूदा सरकार पर खत्म हो रहा है । एक रांची नहीं, एक जमशेदपुर नहीं बल्कि मुसीबत तो यह है इस किस्म के और भी जमशेदपुर और रांची दुहराये जाएंगे । इस किस्म का खूनी ड्रामा और भी जगहों पर खेला जाए । मैं वजीरे आजम से अपील करना चाहता हूं, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर साहब बैठे हैं, चौ० चरण सिंह, उन से कहना चाहता हूं कि वक्त आ चुका है और वह खामोश बैठ नहीं रह सकते हैं, सैलाब सिर के ऊपर से जा चुका है और तारीख आपको गुनहगार ठहराएगी क्योंकि आप जालिमों के खिलाफ और मजलूमों के हक में आवाज नहीं उठाते हैं, कातिलों को कत्ल हुए देखते हैं लेकिन कुछ आवाज नहीं उठाते हैं । जहां तक हमारी जमायत का ताल्लुक है हम इन जालिमों के खिलाफ लड़ते रहे हैं और लड़ते रहेंगे हमारी बुनियादी पालिसी है कि हिन्दुस्तान काश्मीर से कन्याकुमारी तक तभी एक रह सकता है जबकि तमाम मजहब, तमाम दीन, तमाम अकीदों को मानने वालों को बराबरी के हक मिलें और आर एस एस को

सिर निकाल रहा है, जहर फैला रहा है जब तक इसका खात्मा नहीं किया जाएगा तब तक अकलीयत अपने आप को महफूज नहीं समझेगी।

जमशेदपुर में जो कुछ हुआ है उससे हमें यह सबक सीखना होगा कि जहां जहां पर भी ये फिरकापाराना जमायतें हैं और जंगी तैयारियां कर रहे हैं उन पर पाबंदी लगाई जाए। अलीगढ़ के दंगों पर हुई बहस के वक्त भी मैंने यही कहा था और वजीरे आजम वक्ती तौर पर मान भी गए थे कि ये शाखायें हो रही हैं, वहां जो डंडे चलाना, छुरी चलाना और तलवार चलाना सिखाया जा रहा है इन्हें रोका जाए यह चीन और पाकिस्तान के खिलाफ काम नहीं दे सकती है उन मुमालिक के पास तोपें हैं, हवाई जहाज हैं। ये सब तैयारियां अदरूनी तौर पर की जा रही है ताकि उनको मौका मिलें अकलियत को मारने का। अगर यह ट्रेनिंग इसी तरह से चलती रही तो अकलीयत को तहफ्फुज की जमानत कौन देगा? जब तक गवर्नमेंट इस बात पर साफ नहीं होगी और अगर वह कम अज कम आर०एस०एस० को खिलाफ कानूनी करार नहीं देती। तो यह जो आर०एस०एस० अपनी ताकत दिखाना चाहता है निक्कर धारी बन कर, निक्कर पहन कर, तलवार और डंडे हाथ में ले कर जब तक इस तरह की चीज पर रोक नहीं लगाई जाएगी तब तक मुल्क में परेशानी रहेगी और जब तक मुल्क मे ऐसी फिजा पैदा नहीं होती है जिस में अकेलियतें महफूज अपने आप को समझें तब तक डैमोक्रेसी का कोई मतलब नहीं है। जम्हूरियत का सब से बड़ा टैस्ट यह है कि मुल्क मे जो अकल्लियत है, माइनोरिटीज है वे अपने आप को किस कद्र महफूज समझती है। अगर इस मुल्क मे माइनोरिटीज अपने आप को महफूज नहीं समझती हैं तो अकसरीयत को सोचना होगा कि उन की हिफाजत कैसे की जाए, उन मे एतमाद कैसे भरा जाए, भरोसा और एतमाद किस तरह से उन मे पैदा किया जाए। यह काम इस सरकार का है। आज इस सरकार की क्रेडेबिलिटी पूरी नहीं है और तब तक नहीं हो सकती है जब तक आर०एस०एस० का जहर इनके साथ लगा हुआ है। इस जहर से आपको अमृत को अलग करना होगा। जहर से जब आप अमृत को अलग करेंगे तभी मुल्क मे अमन और सलामती कायम हो सकती है।

[شری محمد شفی قریشی

(اننت ناگ) : سپیکر صاحب ، یہ لوک سبھا کی بد قسمتی رهی هے کہ هر سیشن میں هم فرقہ‌وارانہ فسادات پر بحث کرنی پڑتی هے - بہار پرائم منسٹر بیٹھے هیں - هندوستان کی پارلیمنٹ کوئی کلچرل فورم نہیں هے - اور خود پرائم منسٹر نے اس بات کا اعتراف کیا هے کہ آر - ایس - ایس ایک کلچرل فورم هے پالیٹیکل پارٹی نہیں هے - لیکن اب ثبوت دینے کی ضرورت نہیں هے جونہی یہاں آر - ایس - ایس کا نام لیا جاتا هے یہ جو اس کو کلچرل آرگنائزیشن کہتے هیں تو مخالف ممبران سامنے کھڑے هو جاتے هیں کیا اس سے بڑھ کر کوئی اور ثبوت چاهئے کہ آر - ایس - ایس پالیٹیکل آرگنائزیشن هے اور هندوستان کی پارلیمنٹ میں موجود یہ لوگ هیں اور هندوستان میں زهر پھیلا رهے هے - ایوان کے اندر اور باهر انکا یہی کام هے -

مجھے افسوس هے وجے کمار ملہوترا نے کہا راشٹریہ کرن کی وهی تھیوری سے سب کو ایک هونا چاهئے - اس تھیوری نے هندوستان کو برباد کیا هے- اب وجے کمار ملہوترا جو لاهور میں پیدا هوئے - اور ایڈوانی صاحب جو کراچی میں پیدا هوئے وہ هندوستان میں آ کر هندوستانی بن سکتے هیں لیکن جو بہار کا مسلمان بہار میں پیدا هوا جس کے آبا اور اجداد یہاں هی پیدا هوئے اور مرے - اس کو کہیں کہ وہ سیکنڈ کلاس سٹیزن یا شہری هے - یہ انصاف نہیں هے - یہ ظلم هے - اس قسم کے زهر نے هندوستان کی فضا کو خراب کیا هے - آپ کو

[شری محمد شفی قریشی]

تو مشکور ہونا چاہئیے - کہ ہندوستان کی سر زمین نے آپ کو پناہ دی : آپ اپنی جان بچا کر پاکستان سے آئے - دیش کو بچانے کے لئے پاکستان سے نہیں آئے تھے سپیکر صاحب مجھے کہنا تو بہت کچھ ہے - لیکن اب میں ایک اخبار کے ایڈیٹوریل کو پڑھ رہا تھا - شاید اس کے پڑھنے سے میرے بھائیوں کو کچھ سمجھ آئے وہ یہ لکھتا ہے —

جمشید پور اور نواحی علاقوں میں ۱۵۴ اشخاص موت کے ہمآغوش ہو چکے ہیں - آخر یہ اسی دھرتی کے لال تھے - جن کا خون بہا - ان کا تصور تھا تو صرف یہ کہ انہوں نے اس سر زمین پر جنم لیا - ان کی خطا تھی تو یہ کہ ان کی کوئی خطا نہ تھی - آہ کون بتائے گا کہ ان میں سے کتنے پولیس کی گولیوں کا نشانہ بنے - فسادات کی جارحیت کا شکار ہوئے وہ جو بھی تھے ہندو تھے یا مسلمان تھے - مگر آخر اسی ملک کے رہنے والے تھے - انہوں نے اس ملک کو اپنا سمجھا تھا - اس ملک کے بنانے اور سنوارنے میں ان کا ہاتھ رہا ہوگا - انہوں نے خود یا ان کے باپ دادوں نے اس ملک کو آزاد کرانے میں قربانیاں دی ہونگی - مگر مہاتما بدھ کی جنم بھومی پر انہیں بے دردی سے ہلاک کر دیا گیا وہ عدم تشدد کے سب سے بڑے علمبردار کی سر زمین پر تشدد کا شکار ہو گئے - جو ہتھیار کے مخالف مہابیر جی کے جنم استھان پر ان کی ہتیا کر دی گئی - جس سر زمین سے مہاتما گاندھی نے اپنی عدم تشدد پر اپنی پہلی تقریر کا آغاز کیا تھا - وہاں تشدد کا وہ مظاہرہ ہوا کہ اسمان کانپ اٹھا ہوگا اور دھرتی لرز گئی ہوگی - جس سر زمین کو آزاد کرانے کے لئے راجندر پرشاد اور مظہر الحق نے - جگجیون رام - شری کشن سنہا- علی امام ڈاکٹر سید محمد اور ابوالحسین - مولانا شجاعت بہاری نے شانہ بشانہ جد و جہد اور قربانیاں دی تھیں - آزادی کے بعد اس سرزمین کے سپوتوں کا آئے دن خون بہایا جا رہا ہے - جس دھرتی کو سورگ بنانے کے لئے جے پرکاش نے آندولن کیا تھا - اور بغاوت کا علم بلند کیا تھا - آج وہاں پر بے گناہوں کو مارا جاتا ہے - میں سمجھتا ہوں کہ اگر ہم اس طریقے سے یہ جو فسادات ہوتے ہیں ان پر غور کریں تو شاید کسی نتیجے پر پہنچ سکتے ہیں لیکن اگر جزبات کی رو میں بہہ کر پالیٹیکل فائدہ اٹھانے کی کوشش کریں تو میں سمجھتا ہوں کہ کسی نتیجے پر نہیں پہونچ سکتے -

کئی مانیہ سدسیہ : آپ کیا کہہ رہے ہیں -

شری محمد شفی قریشی : میں
واقعات بیان کر رہا ہوں - جمشیدپور
میں جو خونی ڈراما کھیلا گیا - تمام
اخباروں نے جن کی کٹنگز میرے
پاس ہیں - انہوں نے کہا ہے کہ یہ
سوچی سمجھی تحریک اور سازش کے
تحت کیا گیا ہے - اور اس میں
کافی پہلے سے تیاری تھی - اس کو
فساد کا نام دینا ٹھیک نہیں ہوگا -
میں سمجھتا ہوں کہ یہ فساد نہیں
تھا - بلکہ قتل عام کرنے کے لئے پہلے
سے ایک منصوبہ بنایا گیا تھا -

اب اس کا جو پیٹرن یا طریقہ
ہے - ان فسادات کو شروع کرنے کا جو
طریقہ ہے - آپ یہ دیکھیں گے کہ
یہ بالکل بدلا نہیں ہے - کچھ روز
پہلے آر - ایس - ایس - کے سمابھر
لوگ وہاں جاتے ہیں - کیمپ لگاتے
ہیں - کالجوں میں جا کر -
یونیورسٹیوں میں جا کر اور کچھ
دنوں کے بعد جب جلوس نکالا ہوتا
ہے - تو اصرار کیا جاتا ہے کہ جلوس
جو ہے وہ مسجد کے قریب سے نکلے -
اور مسجد سے ہی فساد کی ابتدا
کی جائے - میں پوچھنا چاہتا ہوں
کہ جب بیس ہزار لوگوں کا جلوس
نکلتا ہے یا دس ہزار لوگوں کا جلوس
نکلتا ہے - تو کیا وہ بے وقوف لوگ
ہوں - مسجد میں ۲۰۰ یا ۴۰۰
آدمی ہوں وہ کیا اپنے کو ہلاک کرنے
کے لئے اتنے بڑے جلوس پر حملہ کر
سکتے ہیں - یہ ناممکن ہے - لیکن
مسجد ایک ایسی جگہ ہے جس کو
ہی فساد کا نشانہ بنایا جاتا ہے -
اور بالکل یہی پیٹرن یا طریقہ ہر
جگہ جہاں پر فسادات ہوئے ہیں -
اپنایا گیا ہے - اور اسی پیٹرن کو
دہرایا گیا ہے - جمشید پور میں جو
کچھ ہوا ہے - اس کے بارے میں جو
کچھ اخباروں میں آیا ہے - وہ میں
پڑھ سکتا ہوں - یہ اخبار میرے پاس
ہیں - اس میں لکھا ہے -

" Members of Parliament described the holocaust in the steel city, was preplanned. The outrage followed a RSS camp which was organised in a local college in the teeth of opposition by the teachers and students The RSS-dominated Central Akhara Samiti distributed provocative leaflets and incited communal passions with total impunity. A Janata MLA.....

It has been admitted by the Hon. Home Minister.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: Which is that newspaper?

SHRI MOHD. SHAFI QURESHI It is the editorial in Patriot. It says further

" . A Janata MLA and RSS leader stopped the Ram Navami Procession in front of mosque and made inflammatory speeches.

یہاں پر یہ دیکھنے کی بات ہے
کہ جلوس کو روکا جاتا ہے - جنتا پارٹی
کا - آر - ایس - ایس کا ایک
ایم - ایل - اے - جلوس کو روکتا ہے -

[شری محمد شفی قریشی]

اور مسجد کے قریب روکتا ہے - اور مسجد سے جب جلوس آگے کو جاتا ہے، تب شور کیا جاتا ہے کہ ایک بم پھٹا ہے اور ملتوں میں نہتے معصوم اور بے گناہوں کو لوٹا جاتا ہے - قتل کیا جاتا ہے - تو کیا یہ سوچی سمجھی کارروائی نہیں ہے - میں اپنی پارٹی کی طرف سے ایک بات کا صاف اعلان کرنا چاہتا ہوں - کہ اس فساد کے لئے آر - ایس - ایس - کو ذمے دار ٹھہراتے ہیں - اور آر - ایس - ایس - کو تو آج کل بدقسمتی سے اعلے احتقام ملا ہے - کیونکہ وہ حکومت کا ساتھ دیتے ہیں - میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ اب وقت آچکا ہے کہ موجودہ جنتا سرکار اس بات پر غور کرے کہ اگر وہ فرقہ دارانہ اتحاد اس ملک میں لانا چاہتے ہیں تو کیا وہ اسے آر - ایس - ایس - کو ساتھ لے کر لا سکتے ہیں - آج سب سے بڑی مشکل ہو گئی ہے کہ اقلیت میں - مانیورٹیز میں ایک خوف، دہشت اور بے یقینی پیدا ہوگئی ہے - اور یہ چیزیں تب تک دور نہیں ہو سکتیں جب تک کہ حکومت میں آر - ایس - ایس - حصہ دار جماعت ہے - میں یہ صاف کہدینا چاہتا ہوں کہ آر - ایس - ایس - ایک پالیٹیکل جماعت ہے اور یہ ہندوستان کے ہر حصہ میں موجود ہے - جب تک ایسی جماعت حکومت میں رہے گی - تب تک ایسے جھگڑے ہوتے رہینگے - اخبار "ہندو" نے اس جھگڑے کو منصوبہ بند اور سازش کہا ہے - آپ ہندوستان ٹائمز - سٹیٹسمین، پیٹریٹ - کسی بھی اخبار کو دیکھ لیجئے - سبھی یہ کہتے ہیں کہ فسادات جو ہوئے وہ پوری تیاری کے ساتھ پوری سازش کے ساتھ وہاں کئے گئے - جس کا نتیجہ آج ہمارے سامنے ہے - خطرناک نتیجہ ایک ممبر مسٹر ملہوترہ نے یہاں یہ کہہ دیا کہ چونکہ وزیر اعظم بنگلہ دیش جا رہے تھے اس لئے ان کے مشن کو ناکام کرانے کے لئے یہ سب کھیل کھیلا گیا - اس سے بڑھ کر آر - ایس - ایس - کی ذہنیت کا ثبوت اور کیا ہو سکتا ہے - میں افسوس کرتا ہوں آر - ایس - ایس - کی ذہنیت پر وہ اگر یہ کہتے کہ مرارجی ڈیسائی بنگلہ دیش کے ساتھ تجارتی کاروبار بڑھانے کے سلسلہ میں آر - ایس - ایس - کی یہ تجویز ساتھ لے جاتے کہ اور چیزوں کے علاوہ اب ہندوستان سے لاشوں اور ہڈیوں کے ڈھانچوں کو سستے داموں خریدا جا سکتا ہے تو وہ شاید سچ بیان بولتے یہاں پر آدمی کی جان سستے میں مل سکتی ہے - اس کی مثال آپ کو جمشید پور اور علی گڑھ میں دیکھنے کو مل گئی ہے - اس طرح کی باتیں کرکے یہ لوگ ہندوستان کی توہین کرتے ہیں - آپ

مزدور تھا - جس کا کوئی قصور نہیں
تھا - وہ یہ بھی نہیں جانتا تھا کہ
کچھ دن پہلے آر - ایس - ایس - کے
لوگوں نے آکر پوسٹر نکالا تھا کہ اب
وقت آچکا ہے کچھ فرقوں سے بدلا
لینے کا اُسے اور اس کی بیوی کو جلا
دیا گیا - اس کے پانچ چھوٹی چھوٹی
معصوم لڑکیاں تھیں جن میں سے
دو نوجوان تھیں - ان کے ساتھ زنابالجبر
کیا گیا - اور تین لڑکیاں اب تک
لا پتہ ہیں - اگر اس قسم کے واقعات
اس ملک میں ہوتے رہے تو اقلیتیں
کیا آپ سے توقع رکھ سکتی ہیں -
جب بہار جل رہا تھا تو ہندوستان
کے وزیر اعظم ایلیفینٹ پولو دیکھ رہے
تھے - تین دن کے بعد ہندوستان کے
ہوم منسٹر وہاں جاتے ہیں - واپس
آتے ہیں پھر جاتے ہیں لیکن بےبسی
کا عالم ان کے سامنے تھا - شری کرپوری
ٹھاکر جو وہاں کے چیف منسٹر ہیں
ان کو ہٹانے کے لئے ان کے خلاف سازش
کرنے کے لئے پہلے سے ہی آر - ایس -
ایس - کا یہ نشانہ تھا - آر - ایس -
ایس - جانتا تھا کہ جب تک یہ
خونی ڈراما نہیں کھیلا جائیگا تب
تک ان کو نہیں ہٹایا جا سکے گا -
ان کو کمزور نہیں کیا جا سکے ؟ -
حالانکہ چیف منسٹر وہاں موقع پر
تھے - کیونکہ ان کے پاس اتھارٹی
نہیں تھی - وہ بے بس کرائے گئے تھے -
ایسی صورت میں جب ہم ان سارے
ہندوستان کے وقار کو نیچے گراتے ہیں
جو کچھ جمشید پور میں ہوا اس سے
سارے ہندوستانیوں کا سر شرم سے جھک
گیا ہے - ہم اس ذہنیت کے خلاف
ہیں جو ذہنیت کسی ملک میں
آگ لگاتی ہے - چاہے وہ ذہنیت
کسی بھی فرقے سے تعلق رکھتی ہو -

ادھیکش مہودے آپ دیکھیں گے
کہ جمشید پور میں گھروں کو لوٹا گیا -
لوگوں کو مارا گیا - وہاں مسلمانوں
کو مارا گیا - بہت سے لوگوں کو اپنی
جگہ چھوڑ چھوڑ کر دوسری جگہ پناہ
لینے پر مجبور کیا گیا - جب دوسری
جگہ لوگ پناہ لینے کے لئے گئے تو
جو ایک کلونی کا گودام بنایا گیا تھا -
اس میں ایک وین گاڑی تھی جس
میں چھوٹے چھوٹے بچے اور عورتیں
بیٹھی ہوئی تھیں - اس وین کا ڈرائیور
آر - ایس - ایس - سے تعلق رکھتا
ہے - اس نے اس وین کو اس کانوائے
سے نکال کر اور سڑک پر بلایا اور خود
بھاگ گیا - اس میں پچاس سے
زیادہ مسلمان بچے مارے گئے - اس
کو بم سے اُڑا دیا گیا - یہ ظلم ان
ظالموں نے کیا - جب تک ہم سب
لوگ ان ظالموں کے خلاف ایک مت
ہو کر ان کا مقابلہ نہیں کرینگے -
تب تک ہندوستان سے یہ چیز ختم
نہیں ہو سکتی - اور نہ امن رہ سکتا
ہے شیخ اللہ نام ستھل مہل میں

[شری محمد شفیع قریشی]

واقعات کا مطالعہ کرتے ہیں تو یہ نتیجہ سامنے آتا ہے - کہ یہ ایک سوچی سمجھی قتل اور وقت بنائی سکیم تھی - جس کے تحت جمشید پور میں یہ خونی ڈرامہ کھیلا گیا -

جنتا پارٹی کے ایک ذمہ دار ممبر شری مدھولیمے جن کی بات کی ہم قدر کرتے ہیں وہ کہتے ہیں کہ اس میں آر - ایس - ایس کا ہاتھ تھا - آر - ایس - ایس نے یہ دنگے کروائے - شری فضل‌حسن جو ایک منسٹر ہیں انہوں نے کہا کہ اگر ہندوستان کا بھی ہوم منسٹر ہے تو ہندوستان کو خدا بچائے - انہوں نے کہا کہ یہ فسادات آر - ایس - ایس نے کروائے - ہمارے پاس یہ شہرت موجود ہیں - میرے پاس ایسے لوگوں کے نام موجود ہیں جنہوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا - کہ کون کون آر - ایس - ایس - کے جلاد اور بڑے بڑے قاتل جلوس لیکر مسلمانوں کا قتل عام کروانے جا رہے تھے - اگر نام چاہئیے تو نام میرے پاس ہیں اور میں دے سکتا ہوں - شری منور ایم - ایل - سی - رام اوتار سنگھ سابق ایم - ایل - اے - کامریڈ جے - وی - سنگھ کامریڈ ناوائین جگن ناتھ شاشتری - کامریڈ ..... آر - ایس - ایس - کے وہاں پر تھے -

MR. SPEAKER: Better avoid names. ..

شری کنہیو لال گپت : غلطی ہو گئی ہے -

شری محمد شفیع قریشی : دیکھنا ہوگا کہ اس سکیم کے تحت ان غنڈوں لفنگوں اور بدمعاش لوگوں نے اکٹھے ہوکر مسلمانوں کو اجاڑ دیا ہے - ۳۵ ہزار سے زیادہ لوگ اس وقت اجڑ چکے ہیں - جو لوگ دس تاریخ کو اپنے گھروں میں اپنے اپنے بال بچوں کے ساتھ شانتی سے رہ رہے تھے - اور ۱۸ تاریخ کو وہ اپنے بال بچوں کے ساتھ نہیں ہیں - بچے ان کے خدا کی زمین ہے اور وہ خدا کا آسمان ہے - اور ان کے پاس اپنا سر ڈھکنے کے لئے جگہ نہیں ہے - ابھی تک معلوم نہیں ہے کہ سرکار نے ان کے لئے کیا کیا ہے - ان کو بسانے کے لئے کیا کام کیا ہے - سب سے بڑی بات یہ ہے کہ اقلیتوں کا اعتماد دن بدن موجودہ سرکار پر ختم ہو رہا ہے - ایک رانچی نہیں ایک جمشید پور نہیں بلکہ مصیبت یہ ہے اس قسم کے اور بھی جمشید پور اور رانچی دہرائے جائینگے - اس قسم کا خونی ڈرامہ اور بھی جگہوں پر کھیلا جائے - میں وزیر اعظم سے اپیل کرنا چاہتا ہوں - ڈپٹی پرائم منسٹر صاحب بیٹھے ہیں - چودھری چرن سنگھ ان سے کہنا چاہتا ہوں وقت آچکا ہے اور وہ خاموش بیٹھے نہیں رہ سکتے ہیں - سیلاب سر کے اوپر سے جا چکا ہے -

اور ذاریعے پ کر لہٰذا گار تھوراٹ کی - کیونکہ آپ ظالموں کے خلاف اور مظلوموں کے حق میں آواز نہیں اٹھاتے ہیں - وہ لوگوں کو قتل کرتے ہوئے دیکھتے ہیں لیکن کچھ آواز نہیں اٹھاتے - جہاں تک ہماری جماعت کا تعلق ہے ہم ان ظالموں کے خلاف لڑتے رہے ہیں اور لڑتے رہینگے - ہماری بنیادی پالیسی ہے - کہ ہندوستان کشمیر سے کنیا کماری تک تب ہی ایک ساتھ رہ سکتا ہے جب کہ تمام مذہب تمام دین تمام عقیدوں کو ماننے والوں کو برابری کے حق ملیں - اور آر - ایس - ایس - جو سر نکال رہا ہے زہر پھیلا رہا ہے جب تک اس کا خاتمہ نہیں کیا جائے گا - تب تک اقلیت اپنے آپ کو محفوظ نہیں سمجھے گی -

جمشید پور میں جو کچھ ہوا ہے اس سے ہمیں یہ سبق سیکھنا ہوگا کہ جہاں جہاں پر بھی یہ فرقہ وارانہ جماعتیں جو ملٹری ٹریننگ دے رہی ہیں ان پر مکمل پابندی لگائی جائے - علی گڑھ کے دنگوں پر ہوئی بحث کے وقت بھی میں نے یہی کہا تھا - اور وزیر اعظم وقتی طور پر مان بھی گئے تھے - کہ یہ جو شاخائیں ہو رہی ہیں وہاں جو ڈنڈے چلانا چھری چلانا اور تلوار چلانا سکھایا جا رہا ہے اسے روکا جائے - یہ چین اور پاکستان کے خلاف یہ شاخائیں کام نہیں دے سکتیں - کیونکہ ان ممالک کے پاس توپیں ہیں ہوائی جہاز ہیں - یہ سب تیاریاں اندرونی طور پر کی جا رہی ہیں - تاکہ ان کو موقعہ ملے اقلیت کو مارنے کا - اور یہ ٹریننگ اسی طرح سے چلتی رہی تو اقلیت کی تحفظ کی ضمانت کون دے گا - جب تک گورنمنٹ اس بات پر صاف نہیں ہوگی اور وہ آر ایس ایس - کو خلاف قانون قرار نہیں دیتی تو یہ جو آر - ایس - ایس - اپنی طاقت دکھا رہا ہے جو نکر پہن کر تلوار اور ڈنڈے ہاتھ میں لے کر - جب تک اسی طرح کی چیز پر روک نہیں لگائی جائے گی - تب تک ملک اور جب تک ملک میں ایسی فضا پیدا نہیں ہوتی جس میں اقلیت محفوظ اپنے آپ کو سمجھیں - تب تک قومی یکجہتی کا کوئی مطلب نہیں ہے - جمہوریت کا سب سے بڑا ٹیسٹ یہ ہے اس ملک میں جو اقلیت ہے مائینورٹیز ہیں اور وہ اپنے آپ کو کس قدر محفوظ سمجھتی ہیں - اور اس ملک میں مائینورٹیز اپنے آپ کو محفوظ نہیں سمجھتی ہیں - تو اکثریت کو سوچنا ہوگا کہ ان کی حفاظت کیسے کی جائے - ان میں کانفیڈینس کیسے پیدا کیا جائے - بھروسہ اور اعتماد کس طرح سے ان میں پیدا کیا جائے - وہ کام اس سرکار کا ہے - آج اس سرکار کی

[شری محمد شفی قریشی]

کریڈیبلیٹی پوری نہیں ہے - اور تب تک نہیں ہو سکتی ہے جب تک ار - ایس - ایس - کا زہر ان کے ساتھ لگا ہوا ہے - اس زہر سے آپ کو امرت کو الگ کرنا ہوگا - زہر سے جب آپ امرت کو الگ کرینگے تب ہی ملک میں امن اور سلامتی قائم ہو سکتی ہے -]

श्री रशीद मसूद (सहारनपुर) बातिल से दबने वाले ऐ आसमा नहीं हम सौ बार कर चुका है तू इम्तहा हमारा ।

सब से पहले यह अर्ज करना चाहता हू कि पिछली बार जब रायट्स पर यहा बहस हुई थी तब—भी यह कहा गया था कि पार्लियामेंट का सिर्फ यह फर्ज नही है कि हम अपने ग्रीवेंसिस का गवनमेंट तक पहुचाते रहे और गवर्नमेंट का कोई फर्ज नही है कि वह हमे प्रोटैक्शन दे और अगर ऐसी ही बात है तो मै समझता हू कि इस तरह की मोशन पार्लियामेंट मे लाने से कोई फायदा नही है और बेहतर है कि न ही लाई जाएं । लेकिन अगर मोशन्स आते है सजेश्चन्स आते है तो सरकार को उनका कैरी आउट करना चाहिए । हमारे दोनो तरफ के मैम्बरान ने कुछ बाते कही है । लेकिन मैं पूछना चाहता हू कि हिन्दू राष्ट्र का नारा देने वाले लोग अगर अपने आपका बेगुनाह कहे और उसके बाद होम मिनिस्टर साहब ने अपने बयान मे तस्लीम किया है कि जो एम० एल०ए० जलूस को लीड कर रहा था वह आर० एस०एस० से ताल्लुक रखता है फिर आप बताये कैसे देश तरक्की कर सकता है ? हिन्दुस्तान के अन्दर 80 फीसदी हिन्दू है, लेकिन मुझे यकीन है कि 75 फीसदी हिन्दू नान-कम्युनल है । यही आर० एस० एस० के लोग हिन्दू राष्ट्र का नारा देने वाले लोग, जो कि सिर्फ साढे तीन लाख के करीब मराठा ब्राह्मण हैं वही पूरे देश पर डिक्टेटरशिप करना चाहते हैं और चाहते हैं कि यहा एक डिक्टेटरशिप कायम हो जाय । यह इस बात का सबूत है, जैसा कुरेशी साहब ने कहा है कि आर० एस० एस० यहा मौजूद है वही इस तरह की फिजा फैलाता है । हम भी यही चाहते हैं मैजारिटी की यहा हुकूमत हो । मगर चाहते है कि जो 80 फीसदी लोग मजदूर है, देहातो में रहते है, गरीब है उन्ही की हुकूमत इस देश में हो, न कि साढे तीन लाख मराठा ब्राह्मण की हुकूमत हो ।

कई माननीय सदस्य : साठे साहब भी है ।

श्री रशीद मसूद : एक्सेप्शन्स हर जगह हो सकते हैं । अभी मोहतरमा मोहसिना किदवई ने कहा कि वह बहैसियत इन्सान के बोल रही हैं । मुझे खुशी है कि 30 साल में इन्सानियत उनको जगी और वह भी जनता सरकार के जमाने में जगी है कम से कम ।

झगडा क्यो हुआ ? यह कोई नया नही है । सारे अखबारो को देखिये तो मालूम होता है कि प्रीप्लान्ड झगड़ा है । पिछले साल से इसकी बुनियाद पडी हुई है । जब यह जलूस निकालना चाहते थे तब उस वक्त भी सडक नम्बर 14 के रूट को अपनाने की बात थी । लेकिन उस वक्त सरकार ने इजाजत नही दी थी । इस मर्तबा भी पूरे बिहार के अन्दर 5 तारीख को रामनामी का जलूस निकला । लेकिन जमशेदपुर में नही निकला । क्योंकि यह चाहते थे कि रूट नम्बर 14 से जायेगे, और सरकार इजाजत नही देना चाहती थी । हुकूमत समझती थी कि माइनारिटी को प्रोटैक्शन दिया जाय । लेकिन हमारी हुकूमत के अन्दर जो कुछ लोग है और हिन्दू राष्ट्र मे यकीन करते है वही उस जलूस को लीड करते है और कत्लेआम करते है । इस रायट को हिन्दू-मुसलमान का रायट कहने के तैयार नही हू । क्योंकि झगडा झगडा हिन्दू-मुसलमान का नही है । कोई भी हिन्दू या मुसलमान जो कि सेंसिबिल है वह झगडा पसन्द नही करता है । झगडा सिर्फ उन लोगो मे है जो हिन्दू राष्ट्र का नारा देना चाहते है । जो कहते है कि अगर कोई बहाना नही भी है तो नफरत ही फैलाओ और शायद वह आखिर मे कामयाब हो जायें । लेकिन वह अपनी इस स्कीम मे कामयाब नही होंगे क्योंकि यहा की मिट्टी और पानी के अन्दर कम्युनलिज्म नही है । हो सकता है कि आप प्लान बनाये, पिछले 30 साल से बना रहे है, हमारी बदकिस्मती है कि हमने आप पर एतबार किया और हम अपनी गलती को महसूस करते हैं । आप श्री कर्पूरी ठाकुर का बर्दाश्त नही कर सकते क्योंकि वह पुरानी बी०एल०डी से ताल्लुक रखते है । अलीगढ़ में भी इसीलिए आपने झगडा कराया कि वहा बी०एल०डी० की हुकूमत थी । अभी माननीय विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि दिल्ली मे भी जलूस निकला लेकिन यहा कोई झगडा नही हुआ हा, यहा आपकी हुकूमत है और इसलिये आप अपनी हुकूमत को बदनाम नही करना चाहते । लेकिन जहा मजदूरो का, गरीबो का, मजलूमो का नुमाइन्दा मुख्य मत्री है उसको आप बर्दाश्त नही कर सकते । आप पैसे वाले लोग है, सरमायदारो की कम्युनिटी से ताल्लुक रखते हैं इसलिय जो आदमी गरीबो की बात करता है उसकी हुकूमत को आप बर्दाश्त नही कर सकते । आपने श्री राम नरेश यादव की सरकार को इसीलिय गिराया । वही पर आप ऐसे काम कर रहे है जहां बी०एल०डी० की हुकूमत है । आखिर क्यों ऐसी ही जगहो पर झगड़े हो रहे हैं मै फिर कहता हू कि यह झगड़ा हिन्दू-मुसलमान रायट नही है । यह झगड़ा गरीबों, मजदूरो और देहातियो के साथ सरमायदारो का है । कुछ लोग इसको हिन्दू-मुस्लिम रायट का नाम देकर फायदा उठाना चाहते है, लेकिन मुझे यकीन है कि वह फायदा नही उठा पायेंगे । (व्यवधान) झगड़ा हैदराबाद में हो, सम्भल में हो या अलीगढ़ में हो, हिन्दू

की तरफ से हो या मुसलमान की तरफ से हो, हमें उसे कंडैम करना चाहिये और उन्हे सजा मिलनी चाहियें, जो झगड़े के लिये जिम्मदार हैं ।

18.00 hrs.

मेरे ख्याल मे आज जो हिन्दू राष्ट्र का नारा देत है और अपने आपको ज्यादा राष्ट्रवादी समझते हैं मै दावे के माथ कह सकता हू कि मै उनसे ज्यादा राष्ट्रवादी हू । मै मुसलमान हू और इस बात को साबित करता हू कि बनारस हिन्दू यनिवर्सिटी मे जिस वक्त लाठी चाज हुआ था, उस वक्त मैने उमके खिलाफ आवाज उठाई थी, उम वक्त मेंरा रेस्टीकेशन हुआ था । आज तक इनमे से कोई भी एक आदमी दिखायें जिसने अगर मुसलमान पर जुल्म हुआ है, तो सफर किया हो ।

हिन्दुस्तान की अकलियत इस बात को पसन्द नही करती है और न करेगी कि उसको सैकिड दर्जे का शहरी माना जाये । यह किस को कहते है और कौन से हिन्दू राष्ट्र की बात करते है ।

हरिजन को यह हिन्दू नही मानते, क्यो कि जब मराठावाडा मे यूनिवर्सिटी का नाम बाबा भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी रख दिया, जिमने अपनी जिन्दगी मुल्क की खिदमत मे गुजार दी, तो ये लोग इसको बर्दाश्त नही कर पाये, इन्होने उसके अन्दर आग लगा दी । जो असली हिन्दुस्तान का द्रविण है, उसको हिन्दुस्नानी मानन क लिये तैयार नही है और उनको यह सैकिड दर्जे का शहरी मानते है । यह कौन सा हिन्दू राष्ट्र है ? यह अलावा मुसलमान के जितनी हमलावर कौमे हुई है इम मुल्क मे उनको हिन्दुस्तानी कहते है और उनको हिन्दुस्तानी नही कहते है जो हिन्दुस्तान के मालिक है सिर्फ वक्त मे फर्क हो सकता है, कुछ कौमे ने ५ हजार माल पहले हमला किया हो, कुछ कौमो ने दो हजार साल पहले और कुछ कौमो न एक हजार माल पहल हमला किया हो लेकिन जब हमलावर का वक्त आता है, जब बाहर के लोगो की बात आती है तो ये लोग यहां हिन्दू राष्ट्र का नारा देते है । एक साथ झगडते है ।

अगर हिन्दुस्तान की हुकूमत देनी है, ओरिजनल लोगो को हुकूमत देनी है तो द्रविडो को हुकूमत दें दीजिये, हमें कोई एतराज नही है । हिन्दुस्तान के द्रविडो और अछूतो को यह सैकिड दर्जे का शहरी मानते हैं और हिन्दुस्तान को हिन्दू राष्ट्र का नारा देते है । यह कैसे हुकूमत चलेगी ?

बहुत-सी बातें कही गई हैं । अभी मल्होत्रा साहब ने कहा कि झगडे से पहले कुछ लोग मारे गये हैं, जिसको उन्होंने उधर से डिनाई भी किया । लेकिन यह बात सही है कि 7 तारीख को जिस एक माइनोरिटी के आदमी की दुकान जली जमशेदपुर में, उसका कोई जिक्र नही करता है कि क्यो जली ? उससे जाहिर होता है कि झगडा कोई स्पोंटेनियस नहीं था, एकदम शुरू नहीं किया गया । मल्होत्रा साहब ने फरमाया कि मोहसिना साहबा कह रही हैं कि बी०एम०पी० ने मारा है और फिर कहती हैं कि आर०एम०एस० ने मारा है । वह बिल्कुल सही कहते है । इसलिये सही कहती हैं, जैसा मैंन कहा कि रायिट हिन्दू मुसलमान का नही है सब-हिन्दू इसमें इन्वाल्व-नही ह, 90 परसेंट हिन्दू इन्वाल्व नही है बल्कि 10 परसैंट लोग जो हिन्दु राष्ट्र का नारा देते है, यह किसी भी जगह माइनौरिटी को मार नही सकते हैं इसलिये इन्हें अपने लोग को पुलिस और पी०ए०सी० में भजना पडता है उसका सहारा इन्हें लेना पडता है । यह कोई आर्ग्यमैंट नही है कि मोहसिना कभी आर० एस०एस० कहती है और कभी बी०एम०पी० कहती है । इसलिये हमें देखना है कि हमारे मुल्क का फायदा किस में है । मैं आपसे कोई खौफजदा नही हूं बल्कि दरख्वास्त करता हू कि यह मुल्क हर फिसाद क साथ कुछ न कुछ पीछे चला जाता है । मेरी दरख्वास्त है कि इस मुल्क को आगे बढाइये, मैं यह यकीन के साथ कहता हू कि अगर हमारी हुकमत इनको कट्रोल नही कर सकी, इनके नजरिये को बदलने में नाकामयाब हो गई तो वह दिन दूर नही कि हमे इसी तरह से निकाल कर बाहर फेंक दिया जायगा जिस तरह से कांग्रेस को फेंका है ।

سید رشید مسعود (سہارن پور) :

باطل سے دبنے والے یہ آسمان نہیں ہم
سو بار کر چکا ہے تو امتحان ہمارا

سب سے پہلے میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ پچھلی بار جب رائیٹس پر یہاں بحث ہوئی تھی تب بھی یہ کہا گیا تھا کہ پارلیمینٹ کا صرف یہ فرض نہیں ہے کہ ہم اپنے گریوینسز کو گورنمینٹ تک پہنچاتے رہیں - اور گورنمینٹ کا کوئی فرض نہیں ہے کہ وہ ہمیں پروٹیکشن دے - اور اگر ایسی ہی بات ہے تو میں سمجھتا ہوں کہ اس طرح کی موشن - پارلیمنٹ میں لانے سے کوئی فائدہ نہیں ہے - اور بہتر ہے کہ نہ ہی لائی جائے - لیکن اگر میٹرز آتے ہیں سبجیکٹس آتے ہیں تو سرکار کو کچھ ایکٹ کرنا چاہئے - ہمارے دونوں طرف

[شری رشید مسعود]

کے ممبران نے کچھ باتیں کہی ہیں- لیکن میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ ہندو راشٹر کا نعرہ دینے والے لوگ اگر اپنے آپ کو بے گناہ کہیں اور اس کے بعد ہوم منسٹر صاحب نے اپنے بیان میں تسلیم کیا ہے کہ جو ایم ایل اے جلوس کو لیڈ کر رہا تھا وہ آر ایس ایس کا ہے - آر ایس ایس سے تعلق رکھتا ہے - پھر آپ بتلائیں کیسے دیش ترقی کر سکتا ہے - ہندوستان کے اندر ۸۰ فیصدی ہندو ہیں لیکن مجھے یقین ہے کہ ۷۵ فیصدی ہندو نان کمونل ہیں - یہی آر ایس ایس کے لوگ ہندو راشٹر کا نعرہ دینے والے لوگ جو کہ صرف ساڑھے تین لاکھ کے قریب مراٹھا براہمن ہیں - وہی پورے دیش پر ڈکٹیٹر شپ کرنا چاہتے ہیں - اور چاہتے ہیں کہ یہاں پر ایک ڈکٹیٹر شپ قائم ہو جائے - یہ اس بات کا ثبوت ہے جیسا قریشی صاحب نے کہا ہے کہ آر ایس ایس یہاں موجود ہے وہی اس طرح کی فضا پھیلاتا ہے ہم بھی یہی چاہتے ہیں جمہوریت کی یہاں حکومت ہو - مگر چاہتے ہیں کہ جو ۸۰ فیصدی لوگ مزدور ہیں دیہاتوں میں رہتے ہیں غریب ہیں انہی کی حکومت اس دیش میں ہو - تاکہ ساڑھے تین لاکھ مراٹھا براہمنوں کی حکومت نہ ہو -

ایک مانیہ سدسیہ: ساٹھے صاحب بھی ہیں -

شری رشید مسعود: ایکسیپشنز ہر جگہ ہو سکتے ہیں - ابھی محترمہ محسنہ قدوائی نے کہا کہ وہ بحیثیت انسان کے بول رہی ہے- مجھے خوشی ہے کہ ۳۰ سال میں انسانیت ان کی جاگی - اور وہ بھی جنتا سرکار کے زمانے میں جاگی ہے - کم سے کم -

جھگڑا کیوں ہوا - یہ کوئی نیا نہیں ہے - سارے اخباروں کو دیکھئے- تو معلوم ہوتا ہے کہ پوری پلانڈ جھگڑا ہے - پچھلے سال سے اس کی بنیاد پڑی ہوئی ہے - جب یہ جلوس نکالنا چاہتے ہیں تب اس وقت بھی سڑک نمبر ۱۴ کے روٹ کو اپنانے کی بات تھی - لیکن اس وقت سرکار نے اجازت نہیں دی تھی - اس مرتبہ بھی پورے بہار کے اندر ۵ تاریخ کو رام نامی کا جلوس نکلا - لیکن جمشید پور میں نہیں نکلا - کیونکہ یہ چاہتے تھے کہ روٹ نمبر ۱۴ سے جائینگے - اور سرکار اجازت نہیں دینا چاہتی تھی- اس لئے کہ وہ جانتی تھی کہ اگر اس روٹ سے جائینگے تو جھگڑا ہو گا - حکومت سمجھتی تھی کہ مائنورٹیز کو پروٹیکشن دیا جائے - لیکن ہماری حکومت کے اندر جو کچھ لوگ ہیں اور ہندو راشٹر

لئے آپ اپنی حکومت کو بدنام
نہیں کرنا چاہتے - لیکن جہاں
مزدوروں کا غریبوں کا مظلوموں کا
نمائندہ مکھ منتری ہیں - ان کو
آپ برداست نہیں کر سکتے - آپ
پیسے والے لوگ ہیں سرمائے داروں
کی کمیونٹی سے تعلق رکھتے ہیں -
اس لئے جو آدمی غریبوں کی بات
کرتا ہے اس کی حکومت کو آپ
برداست نہیں کر سکتے - آپ نے شری
رام نریش یادو کی سرکار کو اس لئے
گرایا - وہیں پر آپ ایسے کام کر
رہے ہیں - جہاں پر ایل ڈی کی
حکومت ہے - آخر کیوں ایسی ہی
جگہوں پر جھگڑے ہو رہے ہیں -
میں پھر کہتا ہوں کہ یہ جھگڑا
ہندو مسلمان رایٹ نہیں ہیں -
یہ جھگڑا غریبوں مزدوروں اور دیہاتیوں
کے ساتھ سرمایہ داروں کا ہے -
کچھ لوگ اس کو ہندو مسلم
رایٹ کا نام دے کر فائیدہ اٹھانا
چاہتے ہیں - لیکن مجھے یقین
ہے کہ وہ فائیدہ نہیں اٹھا پائینگے -
جھگڑہ حیدرآباد میں ہو سمبھل
میں ہو یا علی گڑھ میں ہو -
ہندو کی طرف سے ہو یا مسلمان
کی طرف سے ہو - ہمیں اسے کلڈم
کرنا چاہئے - اور انہیں سزا ملنی
چاہئے - جو جھگڑے کے لئے زمےدار
ہیں -

میں یقین کرتے ہیں - وہی اس
جلوس کو لیڈ کرتے ہیں - اور قتل
عام کرتے ہیں - اور اس رائٹ
کو ہندو مسلمان کا رائٹ کہنے کے
لئے تیار نہیں ہوں - کیونکہ کوئی
جھگڑا ہندو مسلمان کا نہیں ہے -
کوئی ہندو یا مسلمان جو کہ سینسیبل
ہے وہ جھگڑا پسند نہیں کرتا ہے -
جھگڑا صرف ان لوگوں میں ہے جو
ہندو راشٹ کا نعرہ دینا چاہتے ہیں -
جو کہتے ہیں کہ اگر کوئی بہار
نہیں بھی ہے تو نفرت ہی پھیلائیں
اور شاید وہ آخر میں کامیاب ہو
جائیں - لیکن وہ اپنی اس سکیم
میں کامیاب نہیں ہونگے - کیونکہ
بہار کی مٹی اور پانی کے اندر
کمیونلزم نہیں ہے - ہو سکتا ہے
کہ آپ پلان بنائیں پچھلے ۳۰ سالوں
سے بنا رہے ہیں - ہماری بدقسمتی
ہے کہ ہم نے آپ پر اعتبار کیا اور
ہم اپنی غلطی کو محسوس کرتے
ہیں - آپ شری کپوری ٹھاکر کو
برداشت نہیں کر سکتے - کیونکہ
وہ پرانی بی ایل ڈی سے تعلق
رکھتے ہیں - علی گڈھ میں بھی
اس لئے آپ نے جھگڑا کروایا کہ وہاں
بی ایل ڈی کی حکومت تھی -
ابھی سانیہ وجے کمار ملہوترا نے کہا
کہ دلی میں بھی جلوس نکلا لیکن
یہاں کوئی جھگڑا نہیں ہوا - ہاں
یہاں آپ کی حکومت ہے اور اس

[شری رشید مسعود]

18.00 hrs.

میرے خیال میں آج جو ہندو راشٹ کا نعرہ دیتے ہیں اور اپنے آپ کو زیادہ راشٹر وادی سمجھتے ہیں میں دعوہ کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ میں ان سے زیادہ راشٹ وادی ہوں - میں مسلمان ہوں اور اس بات کو ثابت کرتا ہوں کہ بنارس ہندو یونیورسٹی میں جس وقت لاٹھی چارج ہوا تھا اس وقت میں نے اس کے خلاف آواز اٹھائی تھی - اس وقت میرا ریسٹیکیشن ہوا تھا - آج تک ان میں سے کوئی بھی ایک آدمی دکھائیں جس نے اگر مسلمان پر ظلم ہوا ہے تو سفر کیا ہو -

ہندوستان کی اقلیت اس بات کو پسند نہیں کرتی ہے اور نہ کریگی کہ اس کو سیکنڈ درجے کا شہری مانا جائے - یہ کس کو کہتے ہیں اور کون سے ہندو راشٹ کی بات کرتے ہیں - ہری جن کو یہ ہندو نہیں مانتے - کیونکہ جب مراٹھواڑا میں یونیورسٹی کا نام بابا بھیم راؤ امبیڈکر یونیورسٹی رکھ دیا جس نے اپنی زندگی ملک کی خدمت میں گذار دی تو یہ لوگ اس کو برداشت نہیں کر پائے - انہوں نے اس کے اندر آگ لگا دی جو اصلی ہندوستانی کا درجہ ہے اس کو ہندوستانی ماننے کے لئے تیار نہیں ہیں - اور ان کو یہ سیکنڈ درجے کا شہری مانتے ہیں - یہ کون سا ہندو راشٹر ہے - یہ علاوہ مسلمان کے جتنی حملہ آور قومیں ہوئیں ہیں اس ملک میں ان کو ہندوستانی کہتے ہیں - اور ان کو ہندوستانی نہیں کہتے جو ہندوستان کے مالک ہیں - صرف وقت میں فرق ہو سکتا ہے - کچھ قوموں نے پانچ ہزار سال پہلے حملہ کیا ہو - کچھ قوموں نے دو ہزار سال پہلے اور کچھ قوموں نے ایک ہزار سال پہلے حملہ کیا ہو لیکن جب حملہ آور کا وقت آتا ہے - جب باہر کے لوگوں کی بات آتی ہے تو یہ لوگ یہاں ہندو راشٹر کا نعرہ دیتے ہیں - ایک ساتھ جھگڑتے ہیں -

اگر ہندوستان کی حکومت دیتی ہے ، اوریجنل لوگوں کو حکومت دیتی ہے تو دراوڑوں کو حکومت دے دیجئے - ہمیں کوئی اعتراض نہیں ہے - ہندوستان کے دراوڑوں اور اچھوتوں کو یہ سیکنڈ درجے کا شہری مانتے ہیں - اور ہندوستان کو ہندو راشٹر کا نعرہ دیتے ہیں - یہ کیسے حکومت چلے گی -

بہت سی باتیں کہی گئیں ہیں - ابھی ملہوترہ صاحب نے کہا کہ جھگڑے سے پہلے کچھ لوگ مارے گئے ہیں - جس کو انہوں نے ادھر سے تیاری بھی کہا - لیکن یہ بات

معلوم ہے کہ ۷ تاریخ کو جس ایک مائینورٹی کے آدمی کی دکان جلی - جمشید پور میں اس کا کوئی ذکر نہیں کرتا ہے - کہ کیوں جلی - اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ جھگڑا کوئی سپونٹینیئس نہیں تھا- ایک دم شروع نہیں کیا گیا - ملہوترہ صاحب نے فرمایا کہ منتوسینہ صاحبہ کہہ رہی ہیں کہ سی ایم پی نے مارا ہے - اور پھر کہتی ہیں کہ آر ایس ایس نے مارا ہے- وہ بالکل صحیح کہتی ہیں - اس لئے صحیح کہتی ہیں جیسا میں نے کہا کہ رایٹ ہندو مسلمان کا نہیں ہے - سب ہندو اس میں انوالو نہیں ہیں - بلکہ ۹۰ پرسینٹ ہندو اس میں انوالو نہیں ہیں بلکہ ۱۰ پرسینٹ لوگ جو ہندو راشٹ کا نعرہ دیتے ہیں یہ کسی بھی جگہ مائینورٹیز کو مار نہیں سکتے ہیں - اس لئے انہیں اپنے لوگوں کو پولیس اور بی اے سی - میں بھیجنا پڑتا ہے - اس کا سہارا انہیں لینا پڑتا ہے- یہ کوئی آرگومینٹ نہیں ہے کہ منتوسینہ کبھی آر ایس ایس کہتی ہیں اور کبھی سی ایم پی کہتی ہیں - اس لئے ہمیں دیکھنا ہے کہ ہمارے ملک کا مفاد کس میں ہے- میں آپ سے کوئی خوفزدہ نہیں ہوں - بلکہ درخواست کرتا ہوں کہ ملک ہر فساد کے ساتھ کچھ نا کچھ پیچھے چلا جاتا ہے - میری درخواست ہے کہ اس ملک کو آگے بڑھائے - میں یہ یقین کے ساتھ کہتا ہوں کہ اگر ہماری حکومت ان کو کنٹرول نہیں کر سکی - ان کے نظریہ کو بدلنے میں ناکامیاب ہو گئی تو وہ دن دور نہیں کہ ہمیں اسی طرح سے نکال کر باہر پھینک دیا جائے گا جس طرح سے کانگریس کو پھینکا ہے -

डा० रामजी सिंह (भागलपुर) . अध्यक्ष महोदय, अभी जिस वातावरण मे—आरोप और प्रत्यारोप के वातावरण मे—हम चर्चा कर रहे हैं, उससे इस समस्या का समाधान नही हो सकता है । जमशेदपुर मे जा कुछ हुआ, और जिसने भी किया, उससे आज सम्पूर्ण राष्ट्र का माथा झुका हुआ है ।

हमारे प्रदेश का एक अखबार लिखता है .—

"Regardless of what we are and where we are, let us all hang our head in shame for the outburst of insanity at Jamshedpur which has not only killed, injured and rendered homeless a large number of people but also has expresed the inefficiency of the Government and the hollowness of all our tall claims about democracy, secularism and national integration."

जनता पार्टी का एक दल वहा एनक्वायरी करने के लिए गया था, जिसके सदस्य श्री गुलाम मुहम्मद खां साहब, डा० सरोजिनी महिषी और श्री मधु लिमये थे । मैं उसकी सारी रिपोर्ट आपके समक्ष नहीं रख सकूंगा । उन लोगो ने वहा पर जा कर सारी स्थिति को देखा, जो बीस, पच्चीस हजार लोग कैम्पों में बैठे हुए हैं, और जहां पर ये हत्यायें हुई हैं, उन सब को देखकर और पुलिस के आफिसर्ज से मिल कर और कम्पनी क लोगों से बातचीत कर के उन्होंने जो रिपोर्ट दी है, मैं उसकी कुछ झांकियां आपके सामने रखना चाहता हूं :—

"Jamshedpur being the leading industrial city of Binar there are a large number of contractors and their agents and goondas in this area. In this respect, Jamshedpur

[डा० रामजी सिंह]

has some characteristics of the Dhanbad area which was recently the scene of orgy of violence and mass murders."

मैं केवल कुछ बिंदु आपके सामने रखना चाहता हूं। किसी पक्ष पर आरोप लगाने का मेरा आशय नहीं है।

"We were also told about the role of a member belonging to the Indira Congress, Dr. Akori, who had been connected with the riot that took place in Jamshedpur in the sixties All these elements had planned to use the occasion of Ram Navami festival to cause trouble in the industrial city with a view to discrediting the present Bihar Government."

मैं उसकी एक और झांकी आपके सामने रखना चाहता हूं:—

"However, there are two diametrically oppose views in this regard. Some people believe that it was the anti-social elements and goondas who were determined to create trouble with a view to bringing down the Karpuri Thakur Government that were responsible for this outrage."

इस एनक्वायरी रिपोर्ट की कुछ और बातें मैं आपके समक्ष रखना चाहता हूं:—

"It appears that anti-social elements have penetrated the trade union movement itself."

यह मालूम होना चाहिए कि वहां पर आई एन टी यू सी की सब से बड़ी यूनियन है।

"The solidarity of the working class has suffered an extensive damage because of this communal riot."

लेकिन सब से दुखदायक बात यह है कि जो हत्याओं का सिलसिला चला, उसमें पुलिस का भी योगदान रहा। मैं इससे इन्कार नहीं कर सकता हूं। शुरू में लोगों ने अल्पसंख्यकों पर हमला नहीं किया।

"It was only after the police entered upon the scene that the mobs moved towards the minority localities and started looting and arson. The police either helplessly looked on or sections of them, it is claimed, connived at the mobs engaged in their work of destruction. Whether the police were overwhelmed by the rioters or whether they helplessly looked on or whether they connived at the mobs, the failure to enforce order is patent."

मैं इसलिए कह रहा हूं कि यह स्थिति बहुत ही हृदय द्रावक है। कल जमशेदपुर के टिस्को के डाइरेक्टर से मेरी डेढ़ घंटे तक बात हुई। जो आप भी वहां आए और उन लोगों ने जो वहां की रिपोर्ट दी है वह बहुत ही हृदय द्रावक है। सचमुच में इस में कोई शक नहीं है कि यह केवल एक स्पान्टानियस आउटबर्स्ट नहीं था, यह पूर्व नियोजित कार्यक्रम था। मैं मद्रास में था तो वहां के हिन्दू अखबार ने भी यह लिखा—इट इज मीटिकुलसली प्लान्ड।

रामनवमी 5 तारीख को हुई और दंगा 11 तारीख को हुआ। असल में स्थिति तो यह है कि वह अखाड़ा जिस को गत वर्ष परमिशन नहीं दी गई थी उस को ले कर के 64 अखाड़े वालों ने संकल्प किया कि जब तक उसका झंडा नहीं उठेगा हम यह नहीं उठने देंगे। उस के बाद ही यह सारी असंतोष की बात हुई। 6 दिनों तक सारे जमशेदपुर में तनाव होता रहा। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं होता है कि जब एकाएक उस असंतोष की ज्वाला फूट पड़ी तो उस समय जमशेदपुर के पास पुलिस की इतनी कमी थी कि वह इतने बड़े असंतोष को नहीं दबा सकती थी। 13 तारीख को जब मैं पटना पहुंचा था तो वहां के मुख्य मंत्री कर्पूरी ठाकुर और गुलाम सरवर बदहवास जमशेदपुर से पहुंचे थे। उन लोगों की हालत खराब थी। वे कभी सपने में भी दंगे के बारे में सोच नहीं सकते थे। सचमुच मैं वहां की स्थिति आज कहने योग्य नहीं है। जब हम कुछ इधर की कहते हैं और उधर की कहते हैं तो वह बेकार की बात होती है। लेकिन मैं गृह मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि जमशेदपुर में आर्म्स का इतना बड़ा भंडार है और अभी तक उस पर कुम्बिंग शुरू नहीं हुई। वहां पर मिलिट्री के ऊपर फायर किया गया। वहां पर सी आर पी के ऊपर फायर किया गया और इतनी जगह फायरिंग हुई है कि आज अगर मिलिट्री को फ्री हैंड नहीं देंगे तो क्या स्थिति होगी, मैं नहीं कह सकता। इसलिये जरूरी है, जिस तरह से नक्सलाइट्स का उच्छेदन करने के लिए जमशेदपुर के एक एक घर की कुम्बिंग की गई है उसी तरह अगर जमशेदपुर में रायट को खत्म करना चाहते हैं तो चाहे अखाड़े वाले हों या और कोई हों, सभी के घरों की कुम्बिंग होनी चाहिये। अगर दो दिन में कुम्बिंग पूरी कर सकते हैं तो आगे वहां और कुछ नहीं हो सकता है।

वहां की स्थिति बहुत गंभीर है। यह कहते हैं कि वहां कुछ नहीं किया जा रहा है । 20 हजार लोगों को खाना टिस्को दे रहा है । बिहार के मुख्य मंत्री ने सारे कारखानेदारों को वहां बुलाया और उस के बाद वह अद्भुत काम वहां कर रहे हैं । 20 हजार लोगों को रोज खाना टिस्को दे रहा है, 5 हजार को टेल्को दे रहा है और अन्य छोटी छोटी संस्थाएं दे रही हैं ।

ऐसी स्थिति में बहुत गंभीरता के साथ इस पर विचार होना चाहिये । ऐसी बात नहीं है कि हिन्दू नहीं मरे हैं । लेकिन हिन्दू के मरने का यह मतलब नहीं है कि मुसलमानों को मारा जाय । लेकिन यह भी एक बात स्पष्ट है कि एक तरफा बात नहीं हुई है । मानगो के बगल में आदिवासियों के ऊपर हमला हुआ है, उन का खून हुआ है नौ आदिवासियों का । मेरे पास तो रिपोर्ट है लेकिन मैं और इसके बारे में कह कर के लोगों की ममवेदना को उभाड़ना नहीं चाहता । लेकिन यह बात सही है कि कुछ मिलिटेंट लोग हैं दोनों तरफ से और मैं कहना चाहूंगा, खास तौर से माननीय प्रधान मंत्री जी का भी ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि देश में एक व्यापक षड़यंत्र है । भुटटो साहब की फांसी के बाद समूचे देश में अस्तव्यस्तता फैलाने का । समूचे वेस्ट बंगाल में एनर्जी को अस्त-व्यस्त करना और हिन्दुस्तान के सब से बड़े सिरमौर औद्योगिक नगर जमशेदपुर को अस्त-व्यस्त करना और वहां यह सब कर के—मैं ज्यादा कुछ नहीं कह सकता हूं, मेरा इशारा ही काफी होगा बड़े लोगों के लिए—क्या पाकिस्तान कोई एडवेंचर करना चाहता है ? मैं कोई प्रमाण नहीं देना चाहता, लेकिन इस बात को भी नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता ।

इसीलिए मैं यह आप से कहना चाहूंगा, एक बात यह निश्चित है कि आज की पुलिस जो है इससे काम नहीं चलेगा । जयप्रकाश जी आज बीमार हैं । आज मुझे यहां लोक सभा में भाषण करने के लिए रहना पड़ा है, मुझे वहां रहना चाहिए था । अभी भी वहां शांति सेना के सौ आदमी पहुंचे हैं । 1964 में जब संयुक्त विधायक दल की मिनिस्ट्री वहां थी और महामाया बाबू जब बिहार के मुख्य मंत्री थे, तो उनकी सरकार को भी हटाने के लिए 1964–66 में दंगा हुआ था । इसलिए इसके सम्बन्ध में हमें इसके राजनीतिक पक्ष को भी सोचना चाहिए । आज जब दंगे की बात होती है तो समूचा राष्ट्र मर्माहत, कलंकित और अपमानित प्रतीत होता है । इसलिए आज इस लोकसभा में हमें इस पर कुछ सोचना चाहिए । इन्दिरा जी के ट्रायल के लिए हम स्पेशल कोर्ट्स बना सकते हैं तो इन्सानियत को समाप्त करने वालों के लिए भी हमें समरी ट्रायल, स्पेशल कोर्ट्स की व्यवस्था करनी होगी ।

नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल को पुनर्जीवित करने के लिए मैंने तीन बार प्रधान मंत्री जी से अपील की है लेकिन आज तक उसकी कोई बैठक नहीं हो सकी । मैं अनुरोध करूंगा कि नेशनल इंटिग्रेशन कौंसिल को पुनर्जीवित करना चाहिए ताकि देश में साम्प्रदायिक दंगे उभारकर राजनीतिक लाभ उठाने की जो बातें चल रही हैं उसका अवसर किसी को न दिया जाए ।

गांधी जी ने कहा था कि हिन्दू मुसलमान की समस्या विधि और व्यवस्था की समस्या नहीं है, ला ऐंड आर्डर की समस्या नहीं है । जमशेदपुर तो एक कास्मोपोलिटन टाउन है वहां पर इस तरह की फिरके-वाराना बातें किस तरह से हुईं—यह बात समझ में नहीं आती है । बिहार मिनिस्ट्री के सम्बन्ध में मैं आपसे बिना किसी का पक्ष लिए कह सकता हूं कि उसने इसको रोकने की पूरी कोशिश की है । जो न्यायिक जांच हो रही है उसे हम सभी को पूरा सहयोग करना चाहिए और अगर हो सके तो वहां पर जाकर हर मोहल्ले में शांति की स्थापना का प्रयत्न करना चाहिए ।

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Sir, we all today stand condemned before the whole world for the massacre that has taken place in Jamshedpur. We have no answer to give either to our own countrymen or to the rest of the world. It is a matter of deep concern that no less a person than a sitting Minister of the Union Cabinet said today that the disturbances at Jamshedpur were engineered and planned and there was suspected involvement of one of the erstwhile constituents of Janata Party in them. He took exception to the remark of the Home Minister that the Muslims of the Steel City took the offensive. He also said: "God alone can save the country if we have a Home Minister like him."

Mr. Patel's findings have no relation with the truth and it has shocked many of us. It is totally wrong that the Muslims took offensive in the riot.

A very leading national daily has stated that the whole operation was meticulously planned is established by the grim fact that gangsters, goondas musclemen and sophisticated arms were being smuggled into Jamshedpur days and weeks before the holocaust began.

AN HON. MEMBER: From which daily?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: From *Hindustan Times*. It has stated that no less significant was the fact that during the first two days of violence,

[Shri Jyotirmoy Bosu]

reports reaching Patna say there were pitched battles between the Police and the rioters in which the latter had the upper hand and the army had to be called in ultimately.

Sir, on 5th April, Ramnavami is usually celebrated in Bihar and Mahabiri Jhanda procession is taken out. But in Jamshedpur it was done on 6th April. There is one Basti, called Dimna. There are 72 Akharas in Jamshedpur. Last year a new procession was contemplated to be taken out and they sought permission to take out the procession through Road No. 14 from the authorities, but the permission was refused. So they did not take out the procession last year. This year again they sought the permission and insisted to take out the procession through Road No. 14, but the permission was declined. There was a dispute between the processionists and the Administration as to which route could be chosen for procession. Because the authorities refused permission, they did not take out the procession on 6th April. But later, out of 72 Akharas, 7 Akharas took out procession on 6th April, but balance refused to take out the procession in protest because the Administration refused to allow Dimna Basti Akhara through a particular route, *i.e.*, Route No. 14.

One Shri Ram Narain of the Central Ramnavami Committee, dominated by RSS people, was one of them. The administration arrested about 150 persons out of that congregation which included Mr. Trivedi and others belonging to the hard core of RSS.

From 29th March to 3rd April, there was an RSS camp which was addressed by no less a person than Balasaheb Deoras, and the camp lasted for three days in Jamshedpur.

There is an area at Ranipatti at Kadma Bazar where one shop was burnt on 7th April night. One house at Rani Kudar was set on fire on the night of 9th April, 1979. This became the cause of provocation.

Another new development took place. Muslims of the country are offered a compromise formula on the 10th night, and the procession accordingly started from Road No. 15, and came to the main road. After it reached a certain point near the mosque on the main road, the local MLA, who is an RSS worker, Shri Dinanath Pandey, stopped the procession, threatening that unless those 150 persons who were arrested for creating disturbances, particularly Mr. Trivedi, were released, he would keep on blocking the road, and the procession could only move forward over his dead body.

On the 7th, a Hindi pamphlet by the Ramnavami Committee was circulated wherein the SP was described as an enemy of the Hindus. The pamphlet condemned the SP as an enemy of the Hindus and invited all Ramnavami Committees to bring out their processions and the Dimna Basti procession also, which was declined permission, to come and join near the mosque on the main road.

It was all properly preplanned and the object was to create a devastation and harm the minorities beyond description. Mr. Qureshi was slightly wrong in what he said. Parmeswar Singh, MLC, a Communist, Shri Ram Avtar Singh, ex-MLA, Comrade J. P. Singh, Member Secretary, C.P.I., Comrade Narayan, Jagannath Shastri and Comrade B. K. Ganguly were all eye witnesses.

The procession was led by Dr. Masih with a flag in his hands, and reached the mosque at 9-30 a.m. Between 9-30 and 11-30 a.m. brickbatting and showering of stones was made on the mosque from the RSS-led procession. Muslim flag from Dr. Masih's hands was snatched away.

In organising this dreadful riot, Shri Mangal Singh and Sukhdev Singh, two TISCO contractors were participants.

The Bihar Military Police was supporting and extending help to the RSS hooligans. There are evidences that in Balubasa these people have killed

Muslims by shooting them at point blank range. The Imam of Masjid was also killed.

One Mr. Shafiullah of Sheet Mills of TISCO, Quarter No. 8, Road 17, Farm Area Kudna, was murdered. His wife was also murdered, his younger son was murdered and his two adult daughters were raped.

TELCO notorious goonda, Girish, was found travelling in a Bihar police vehicle.

The Chief Minister's fiat does not run in this area, areas which are dominated by Jansanghis, since there is a fight between the two factions of the ruling party. Even the Bihar Military Police went to the extent of refusing to accompany the Subdivisional Magistrate, Shiyabuddin, and also the Health Minister, Zahir Hussain

There are even numerous instances where Government establishment, including the police, refused help or to give shelter to persons who were sure to be killed at crucial moments.

Out of one lakh Muslim population in Jamshedpur, 45,000 Muslims have been uprooted, and it is clear from the fact that the refugee camps are filled only with Muslims. It becomes crystal clear that the Muslims are the sufferers and they did not take any aggressive action in the matter.

When the Muslims were being shifted in a vehicle from Balubasa to refugee camps, the vehicle was filled by only Muslim women and children, and the driver, who was an RSS man, took the truck away form the normal route to Sitarambera, where petrol was sprinkled and the van was burnt with the women and children. That particular place was littered with half burnt dead bodies. One of the survivors, 6 years' old Sirali is in TISCO Hospital.

Communal riots had been an effective tool for the ruling class. The Britishers had invented it and perfected it, especially a man called Ramsey Mc Donald. In 30 years of Congress rule and then in the Janata rule, they have been following the same pattern of administration and policies. Whenever there was a massive agitation by freedom fighters/kisans/trade unions, communal-riot was used as the first weapon by the Britishers. What happened in 1946 is a glaring example of the same. Whenever Hindus and Muslims and different forces are on a point of revolt, and there is a massive operations outside, communal riot was used as the weapon. (*Interruptions*) It is a pity that the rulers today, the Congress rulers as well as the Janata rulers, are following the same patn of the British and are willy nilly using the same weapon. Prior to almost every election, a major communal riot is taking place somewhere or the other. Aligarh is the recent example. Even the Home Ministry has not taken pains to give the correct figures. For example, I wanted details of death figures and they could not give figures beyond 1973. And the total number of persons killed in communal riots upto that period is 1073.

Unfortunately muslims were made a pawn in the hands of unscrupulous politicians in the country, who successfully maintain themselves in power. Communal riots are created. In 1971, when Mrs. Gandhi came to power on the false plea of "Garibi Hatao", that was followed by communal riots. The present Government has made no departure from the same.

I have been to many rioting scenes —Meerut, Ahmedabad, Cuttack and Bhiwanti are the glaring examples.

There is a noticeable conspicuous absence of Muslims in police, para military and Defence Services, which is resulting in the sense of insecurity. A set of people, anxious to establish Hindu Raj, have spread tentacles in the administrative machinery, police, para military forces and they are

[Shri Jyotirmoy Bosu]

greatly responsible for the communal riots. I will give you two examples.

MR SPEAKER: Please conclude.

SHRI JOYTIRMOY BOSU: I will take two more minutes.

I have got.....

MR SPEAKER: You may have many other things But there are a large number of speakers

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I have a bunch of reports of the Inquiry Commissions It is all a waste of stationery I will quote from the report of the Commission of Inquiry on Communal Distrubances-Jainpur and Suchetpur (District Gorakhpur-UP) In that, they have said certain things Muslims should be recruited in the Police and para military forces and the Army in sufficent numbers to give them a sense of security The hon Prime Minister gave an asurance here that an MPs Committee will be constituted What has happened to that? We have never heard about this.

This year's report of the Home Ministry clearly gives the figures of the communal riots On the one hand, with the RSS at the nucleus of power today and on the other with all these hollow promises, we do not see any ray of hope We will appeal to the country, to the people of the country to come to senses and see that this serious thing is stopped forthwith and if the Government cannot check it, the Government is not worth a salt and they have no right to remain in power.

श्री सैयद लियाकत हुसैन (फतेहपुर) अध्यक्ष महोदय, हमारा हिन्दुस्तान गौतम और गांधी का देश है। दोनो अहिंसा के पुजारी थे। गांधी जी को अगर कोई सब से ज्यादा प्यारी चीज थी तो वह अहिंसा थी। लेकिन अफसोस है कि उस अहिंसा के पुजारी को हिंसा का शिकार होना पड़ा। हम उस वक्त यह समझे थे कि गांधी जी की शहादत के बाद यह फिरकापरस्त जहरीले अनासिर खत्म हो गये हैं। लेकिन हमारे मुल्क की यह बदनसीबी और बदकिस्मती है कि वह जहरीले हमारे समाज में अभी भी मौजूद हैं जो कहीं जमशेदपुर में, कहीं अलीगढ़ में, कहीं हैदराबाद में, कहीं राची में किसी न किसी शक्ल में नजर आ रहे हैं। मैं समझता हू कि आज गांधी जी की रूह करवट ले रही होगी जमशेदपुर के मामले को ले कर। अगर गांधी जी जिन्दा होते तो शायद आज वे जमशेदपुर की गलियो में होते और वहा मुसीबतजदा औरतो के आसू पोछ रहे होते जिनके कि शौहरो को मार डाला गया है, जिनका कि बेघरबार कर दिया गया है।

अध्यक्ष, महादय, इस से ज्यादा बदकिस्मती क्या होगी कि हम दिन वहा दंगे हुए तो अखबार में आया कि 6 आदमी मारे गये है। लेकिन तीसरे दिन अखबार में आता है कि 87 तक मरने वालो की फिगर पहुच गयी है। इस से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इन तीन दिनो में जमशेदपुर में बर्बरियत का राज था। वहा लोग लूट गये, बेघर किये गये। घरो में आग लगायी गयी। माहल्लो को बर्बाद किया गया। यहा तक कि औरतो की अस्मत और इज्जत को भी नहीं बख्शा गया। उनकी अस्मत लूटी गयी, इज्जत लूटी गयी। यह हमारे लिये बड शर्म की बात है। इस से ज्यादा शर्म की कोई बात नहीं हो सकती है।

अध्यक्ष महादय, जैसा कि हमारे दूसरे मेम्बरान ने कहा कि यह एक साची समझी मसूबाबदी का नतीजा था। उस समय हालत और भी ज्यादा बदतर हो जाती है जब कोई अवाम का नुमाइन्दा इस में शरीक हो जाता है जिसका कि अवाम ने चुन कर के इसलिए भेजा है कि वह उनके हकको की हिफाजत करेगा। आज जितने लोग यहा बैठे हुए हैं, हम सब इसलिए यहा बैठे हुए है कि जनता के हकूक की रक्षा करेंगे। चाहे असेम्बली में मेम्बर हो, चाहे पार्लियामेंट में हो, जब हम लोगो में से कोई फिरकापरस्त लोगो के साथ शामिल हो जाते है तो मैं समझता हू कि इस से ज्यादा बदकिस्मती की कोई बात नहीं हो सकती है।

आज मैं देख रहा हू कि इधर से उधर मामले को फुटबाल गेंद की तरह उछाला जा रहा है। दीनानाथ पांडे किसी पार्टी के आदमी हो। मैं उनसे कहूगा कि वे अपनी जमीर को टटोलें। क्या उन्होंने कोई काम ऐसा किया है जिससे पूरे मुल्क का आज सिर शर्म से नहीं झुक गया है? अगर ऐसी बात है तो यह हमारे लिये सोचने की बात है कि क्या हम ऐसी ताकतो को बढ़ने दे या उनको खत्म किया जाना चाहिए?

अध्यक्ष महोदय, आज हम हिन्दुस्तान की सब से बड़ी, सुप्रीम इस्टीच्यूशन में हैं। आज पार्लियामेंट का यह फर्ज है कि हिन्दुस्तान में जितने रहने वाले लोग हैं उनके हकूकों की हिफाजत की जाए, उनके जानो-माल की हिफाजत करे। लेकिन हो

यह रहा है कि हम आज मर्सिया कर रहे हैं, हम खाली मातम कर रहे हैं। यह पहला वाकया नहीं है। 1947 से ले कर न जाने इस किस्म के कितने वाकयात होते रहे हैं। यहां मोशल आये, उन पर मातम किया गया, मर्सिया पढ़े गये। लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि हमने इस के बारे में कोई इफेक्टिव स्टेप्स लिये? अगर हमने ये नहीं लिये तो मैं समझता हूं कि हमारी इस सुप्रीम इंस्टीच्यूशन ने अपना हक सचमुच में अदा नहीं किया।

अध्यक्ष महोदय, मैं अदब के साथ गुजारिश करूंगा कि आये दिन जो झगड़े हुआ करते हैं, ये मामूली बात नहीं है। यह भी बात नहीं है कि ये झगड़े आज हुए हैं आगे न हों। ये कल भी हो सकते हैं। इस के लिए पार्लियामेंट को कोई ऐसा कानून पास करना चाहिए जिससे कि आनेवाले वक्त में फिरकेवाराना फसादात न हों और उनसे इस मुल्क का सिर शर्म से न झुक जाए।

अध्यक्ष महोदय, यह माइनोरिटी का सवाल नहीं है। यह सवाल है पूरे मुल्क की सलामियत का, देश की इन्टेग्रिटी का। अगर यही हालत रही, अगर ऐसे दंगे होते हैं तो सवाल पैदा होता है कि क्या मुल्क की इन्टेग्रिटी बरकरार रहेगी? जिस तरक्की के लिये यहां से कानून पास किये जाते हैं, क्या वह तरक्की हो सकेगी? अगर आये दिन ऐसे दंगे होते रहेंगे तो हमारी सारी की सारी जहनियत उधर लग जायेगी।

अध्यक्ष महोदय, जिस्म में अगर कहीं फोड़ा हो जाए तो वह पूरे जिस्म में सड़ाध पैदा कर सकता है, उसे खत्म कर सकता है। मेरी गुजारश है यह जो फोड़ा है फिरकापरस्ती का और यह जो जहर है इसको हमेशा-हमेशा के लिए खत्म किया जाए।

एक बात मैं और देख रहा हूं। जितनी भी पोलिटिकल पार्टीज हैं उनका ध्यान मैं इधर दिलाना चाहता हूं। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि जिस आदर्श के लिए गांधी जी जीवित रहे और जिस आदर्श के लिए उन्होंने अपनी शहादत दी थी उसको भुलाया जा रहा है। कभी यहां बोट कलब पर हंगर स्ट्राइक की जाती है और कभी डैमंस्ट्रेशन किए जाते हैं और आए दिन ऐसा होता रहता है और कभी इस तरह की चीज, वेजिज के नाम पर और कभी किसी जानवर के नाम पर होती रहती है। लेकिन इंसानियत के नाम पर जब भी कोई बड़ा इशू सामने होता है तो कोई भी पोलिटिकल पार्टी उसके लिए न कोई डैमंस्ट्रेशन करती है और न ही हंगर स्ट्राइक। कम्युनल राइट्स को ले कर किसी ने भी ऐसा नहीं किया। यह हम सब के लिए सोचने का मौका है। जब कभी इस तरह का वाकया होता है तो हम देखते हैं एक फुटबाल की तरह पोलिटिकल पार्टीज इस को इधर से उधर और उधर से इधर उछालती हैं। इस तरह से यह जो समस्या है यह हल नहीं होगी। हम को बैठ कर सोचना होगा और स्टैप्स लेने होंगे ताकि आइंदा इस तरह की कोई बात न हो। मैं प्राइम मिनिस्टर से और डिप्टी प्राइम मिनिस्टर से भी अपील करता हूं कि इस सिलसिले में हाऊस एक कानून फौरन बनाए।

यहां पर यह कहा गया है कि जमशेदपुर में करीब चालीस हजार लोग बेघर हो गए हैं। उनके सामने मसला आवाबकारी का है, रोजी का है, खाने पीने का है। मैं इस तरफ आपका खास तौर पर ध्यान दिलाऊंगा ताकि जो लोग बेघर हो गए हैं उनको सहारा दिया जा सके।

आखिर में गांधी जी से मुताल्लिक मैं एक शेर पढ़ूंगा और आपका तवज्जह उस तरफ दिलाऊंगा :

कत्ल गांधी से दर्स न लिया गर तूने
तुझ में ऐ कौम वजूद सौरिशो शर कुछ भी नहीं।

अहिंसा के नाम पर, इंसानियत के नाम पर मैं हाउस से गुजारिश करूंगा कि वह इस पर फौरन कानून बनाए और इस तरह की घटनाएं जब होती हैं तो फोरन इफैक्टिव स्टेप्स सरकार ले और देखे कि आने वाले वक्त में कभी भी ऐसी घटना न होने पाए जिससे हमारा सिर शर्म से नीचे झुके।

डा० मुरली मनोहर जोशी (अलमोड़ा): जो कुछ जमशेदपुर में हुआ है उसके लिए सारा देश और सारी मानवता अपने आप को लज्जित अनुभव करती है। दुनिया में कहीं पर भी साम्प्रदायिक आधार पर या पूजा पद्धति के आधार पर मानव मानव का रक्तपात करता है वह निन्दनीय है और उसकी जितनी भी भर्त्सना की जाए कम है। आज देश में जहां कहीं भी ऐसी घटना होती है और नागरिक होने के नाते हमारे होते हुए यह होती है तो हम सब के लिए यह लज्जा की बात होनी चाहिये। लेकिन हमें जरा इसकी मीमांसा करनी होगी, जरा गहराई में जाना होगा। जमशेदपुर की बाबत बहुत सी बातें कही गई हैं। यह कहा जा रहा है किसी एक संगठन ने, कुछ खास लोगों ने, सारे मामले को पूर्व नियोजित षड़यंत्र के रूप में रखा। मैं सहमत हूं कि यह घटना अचानक नहीं घटी, एक दम से नहीं घटी, यह घटना पूर्व निप्रोजित थी। अगर आप सारी घटना की तरफ ध्यान दें तो आपको पता लग जाएगा कि कैसे षड़यंत्र रचा गया था और किस प्रकार से तनाव जमशेदपुर में था। मेरे दोस्तों ने अखबार पढ़े। मैं भी आपके सामने 16 अप्रैल, 1979 के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' से कुछ अंश उद्धृत करता हूं :

"From what this correspondent has come to know about the genesis

[Dr. Murli Mohan Joshi]

of the present communal trouble from a cross section of people, it is clear that like Dhanbad this steel city has also become a paradise for anti-social elements who have recently migrated in large numbers following the rigorous enforcement of anti-goonda law in the coal belt. With the influx of these elements "dada-giri" in both minority and majority communities has been assuming alarming proportions for quite some time plaguing the life of the law-abiding citizens In the process, communal tension has been building up slowly but steadily

"During the last four or five months two major factors have contributed a lot towards the escalation of tension-death of one Anwar, a notorious criminal regarded as a 'dada" among members of the local minority community, and the police encounter and bulldozing of a madarasa-cum-idgah onstructed on a piece of Tata's land by the local administration under a court decree.

Reign of terror.

"Anwar, who had established his supremacy over his counterpart, had let loose a reign of terror in the city. He was wanted in more than a dozen cases of heinous crimes, including murders, dacoity, rape and kidnapping A few days before he was killed in an armed encounter with a police party, he rang up police offic al to warn him that "if you do not stop the drive to bring me to book, your daughter will be kidnapped in three or four days'

Such is the gravity of the situation; such was the reign of terror which was unleashed by these dadas. Who are these dadas? They have been turned out from coal-belt, who were organising themselves as dadas in the coal belt and now by the Communist friends and Congress(I) friends, in Jamshedpur.

I again quote:

"After his death his fanatic supporters with the help of his gang organised a huge procession. Demonstrations were also held to voice their protests against the demolition of illegally built madarasa-cum-idgah on Tata's land, They suspected that all this had been done at the instance of leaders of the majority community

"Thus the tension, which has been building up for the last, few months, escalated on April, 11. The "Mahabiri Jhanda" procession led by both Hindu and Muslim leaders was taken out by members of the majority community through the routes permitted by local authorities" (*Interruptions*)

This is what is written here.

श्रीमन् मै यह कहना चाहता हूं कि जिस महाबीरी झंडे की चर्चा की जा रही है और यह कहा जा रहा है कि रामनवमी की समिति में, जिन्होंने इसको निकाला, किसी खास संगठन का बाहुल्य था, तो मै कहना चाहता हूं कि उसको निकालने वाले श्री कालिका नन्दन सिंह थे। गृह मंत्री जी इसकी जांच करें कि कौन हैं डा० अखोरी ? क्या इन्होंने कांग्रेस (आई०) के टिकट पर चुनाव नहीं लड़ा था? क्या यह कांग्रेस (आई) के नेता नहीं थे जमशेदपुर मे? और क्या कालिका नन्दन सिंह और राम अवतार सिंह ने मिल कर यह बात कही कि इसी रास्ते से जलूस निकलना चाहिये। कालिका नन्दन सिंह ने भाषण दिया कि जब हिन्दुओं की बस्ती में से मुसलमानों के ताजिया निकल सकते है, तब क्या वजह है कि रामनवमी का झंडा इस मुस्लिम बस्ती से नही जा सकता? इस की जांच होनी चाहिये। और जब जनता पार्टी के विधायकों ने श्री पांडे, श्री कार्तिक कुमार और मोहम्मद अयूब ने यह कहा कि जलूस इस रास्ते से न निकाला जाय, और अगर निकाला जाय तो उसमें हम तीन आदमी सिर्फ झंडा ले कर जायेंगे और बाकी लोग उस रास्ते से न आये, बल्कि दूसरे रास्ते से आयें तो उस वक्त कालिका नन्दन सिंह और डा० अखोरी ने कहा कि नहीं जलूस इसी रास्ते से निकलेगा। क्यों नही वहा के पुलिस और नागरिक प्रशासन ने इस बात को कहा कि यह विधायकों का प्रस्ताव ठीक है ? यह बात भी रेकार्ड पर है। गृह मंत्री जी बतायें कि जब यह प्रस्ताव रखा गया था तो इसको क्यों नामन्जूर किया गया? और उसके बाद 10 तारीख को कालिका नन्दन सिंह, डा० अखोरी, राम

अवतार सिंह सी०पी० आई० और मुस्लिम लीग के नेताओं के साथ बैठ कर रात के डेढ़ बजे यह प्रस्ताव किया प्रशासन के साथ और इस में समझौता हुआ कि जलूस इसी रास्ते से निकाला जाएगा। और उस दिन 11 बजे जलूस निकालने के लिये एक पर्चा, बिना प्रैस का नाम लिखे, बिना प्रैस लाइन के पहले से निकाला गया। मैं श्रीमती मोहसिना किदवई की इस बात से सहमत हूं कि इस पर्चे की जांच होनी चाहिये कि किस ने निकाला है। जहां तक मेरी जानकारी है 5 तारीख को कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर में, श्रीमती किदवई की पार्टी के लोगों के साथ मिलकर साजिश की गई कि वहां पर एक ऐसा पर्चा निकाला जाये, 11 तारीख को जलूस निकाला जाये और उस जलूस पर पत्थरबाजी करवाई जाये और उसके बाद इस देश में साम्प्रदायिक दंगे करवाये जायें। 30 साल तक 78 दंगों का यही पैटर्न रहा है। मैं अपने दोस्त श्री रशीद मसूद से सहमत हूं कि कांग्रेस हुकूमत ने 30 साल तक अपने जमाने में इसी तरह के दंगे होने दिये हैं। और आज उसी पैटर्न से आप ही के लोग (व्यवधान) साठे साहब, आप भी पुराने आर० एस०एस० के हैं, आप आर०एस०एस० के इन्फिल्ट्रेटर कांग्रेस (आई) में हैं। मैं बताना चाहता हूं आप यहां और कल्पनाथ राय जी वहां, दोनों ही पुराने संघी हैं। (व्यवधान) आप हमको क्या बतायेंगे, आकर देखिये, आप यहां इन्फिल्ट्रेटर हैं। संघ वालों से आप पार नहीं पायेंगे, यह इधर ही नहीं, उधर भी बैठे हुए हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह जो बात कही जा रही है कि यह जो जलूस वहां निकला, मैं इस बात से सहमत हूं कि जो कुछ वहां हुआ, इसमें कोई दो राय नहीं है, उसकी निन्दा की जानी चाहिये, भर्त्सना की जानी चाहिये। पर कभी-कभी जब उन्माद आता है, जब कभी-कभी जुनून उठता है और खासतौर पर जब मजहबी ख्यालात से उठता है, धार्मिक भावनाओं पर उठता है, आवेश होता है तो मनुष्य, मनुष्य नहीं रह जाता है, हैवान हो जाता है। यह आज दुनिया में कई जगह हो रहा है, हिन्दुस्तान में हो रहा है, ईरान में हो रहा है, हमारे पड़ोसी देशों में हो रहा है। आज हालत यह हो गई है कि सारी दुनिया में हो रहा है। इसकी तरफ हमें ध्यान देना होगा। आखिर आज बीसवीं सदी में भी..... (व्यवधान) सारी दुनिया में आर०एस०एस० नहीं है। ईरान में आर०एस०एस० नहीं है।

श्री वसन्त साठे रिफ्यूजी कैम्प में कितने हिन्दू हैं, यह बताइये।

डा० मुरली मनोहर सारी दुनिया में आज जहां कहीं भी धार्मिक आवेश और आक्रोश है, उसकी निन्दा की जानी चाहिये और अक्सर होता है, (व्यवधान) आप जैसे व्यक्ति ही हर जगह उपद्रव करवाते हैं, आप लोक-सभा में भी उपद्रव करवा रहे हैं और समाज में भी उपद्रव करवा रहे हैं। आप अपनी प्रवृत्ति में उपद्रवकारी हैं। You are a confirmed disturber. By nature you are born perhaps to create disturbances.

ता आपका जन्म ही इसीलिये हुआ है।

मैं यह कहना चाहता हूं कि जो कुछ जमशेदपुर में हुआ है, उसकी जिम्मेदारी श्रीमती मोहसिना किदवई और श्री साठे की पार्टी पर डालनी चाहिये।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि श्री मल्होत्रा की इस बात से मैं बिल्कुल सहमत हूं कि भारतवर्ष और बंगला देश के सम्बन्ध में सुधरने न पायें, इसके लिये आप साजिश कर रहे हैं, आप षड्यन्त्र कर रहे हैं। भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच में सम्बन्ध मधुर न होने पायें, इसके लिये आप षड्यन्त्र कर रहे हैं। मैं आप पर आरोप लगाता हूं, (व्यवधान) आप क्या बात कहती हैं,

आप क्या बात कहती हैं, आपका उस पार्टी से सम्बन्ध है, जो विदेशों से पैसा ले रही है। आज आप विदेशी ताकतों से हिन्दुस्तान में उपद्रव बढ़वाने के लिये पैसा ले रही हैं। आपकी पार्टी विदेशों से धन लेती चली जा रही है। आपकी पार्टी विदेशों से मिलकर इस देश को तोड़ने की कोशिश कर रही है।

जमशेदपुर में जो कुछ हुआ है, यह उसी साजिश का परिणाम है। (व्यवधान) यह उसका एक लक्षण मात्र है।

अध्यक्ष महोदय . डा० जोशी . . .

डा० मुरली मनोहर जोशी अध्यक्ष महोदय, मुझे साठे साहब डिस्टर्ब कर रहे हैं। साठे साहब, आप कलेजा थामकर सुनिये, आपके काम जब देश के सामने रखे जायेंगे, आपके नेताओं की इस देश को बेचने की जो साजिशें हैं जब वह देश के सामने रखी जायेंगी, तो हिन्दुस्तान आपको इतिहास के पन्नों से हटा देगा। आप इतिहास को कलंकित कर रहे हैं, आप इस देश को कलंकित करने वाले लोग हैं। (व्यवधान) भारत का हरेक नागरिक समान नागरिकता का अधिकार रखता है। जनता पार्टी धार्मिक आधार पर नागरिकता में मतभेद नहीं करती है, यह आप करते रहे हैं।

MR SPEAKER Mr Joshi, you have already taken a lot of time. Now, I call the next speaker.

SHRI A ASOKARAJ (Perambalur): Mr. Speaker, Sir, on behalf of my party, the All India Anna DMK, I rise to say a few words in this discussion Speaking here in the Lok

[Shri A. Asokaraj]

Sabha—far away from the scene of this carnage—I would like to express my profound shock over these incidents. We must be ashamed to live in such a world of uncivilised happenings. The violence in Jamshedpur has been more gruesome than any such clash in recent years. It is very painful to note that more than 100 persons were killed and more than 350 persons were injured and thousands of people were rendered homeless. The hon. Home Minister, Shri H. M. Patel, had visited the place second time, within these four days. In order to find out the reasons for this poignant tragedy, the Minister went there. I, must appreciate his sincere efforts. But I am in wonder whether he has succeeded in his effort or not. In his statement the hon. Minister has stated that the situation is now fully under control. But I don't believe that it is so. From the newspapers I understand that the State Government feels that tension persists in some areas and there is need for continuing army patrolling for some time. So, I wish to emphasise that the vigilance efforts have to be continued by the Army, BSF and CRP. We must consider the real feelings of the affected people. Experience of such happenings would make us to think and to act in a proper way.

Through the Chair, I would request hon. Members not to look at the problems politically or communally. We must not forget that it will not help us to solve the problem. We must make the people belonging to all sects of society to live in harmony. One question that comes up to my mind is about the arms held by both the communities. I am afraid that a large number of arms must have been stored by both the communities. Though I don't want to go back to the begining, I do feel that there was so much of preparation on both the sides. If it is so, the influential people might have been in the background. Those influential people had the services of goondas. So I request that the Central Government should come forward to flush out unlicensed arms held by both the communities.

We must see that this sort of a thing should not be allowed to happen elsewhere. I request that all possible assistance should be provided to the victims of these disturbances. Thousands of people were rendered homeless. Above all the people should be made to have the confidence to live in their old places. Though the State Government is to appoint a three member tribunal, I should like to point out that the people should be allowed to speak without fear before that tribunal. Sir, communal clashed cannot be prevented by sporadic efforts. There is need for vigilance committees which will not only keep a continuous watch in riot-prone areas on a permanent basis, but will also take on the work of educating the communities on the value of cooperation in the matter of accommodation beween different religious beliefs and practices. The main objective of such committees should be to ensure the emergence of an atmosphere that cannot be exploited for political or criminal ends.

Sir, at one time, it was suggested that in every district the responsibility for taking preventive action based on correct intelligence reports should be fixed on the district magistrates and the District superintendents of police. Even such a proposal has not been tried out seriously. I request that the Government should at least hereafter try to implement the proposal seriously. Sir, thousands of people are placed in utter insecurity because of man's inhumanity to man. If man organises for good, there will be paradise on earth. If man organises out of communal frenzy to gain sectarian ends, hell itself is let loose. Let our efforts be to see that the cancer of communalism is rooted out before it engulfs our country. Our actions and attitudes should be to heal the wounds and to prevent

any further infection. Eternal vigilance is said to be the price of liberty. In our country, eternal vigilance will also be the price for enduring communal harmony.

We must also prove to the world that we are giving protection to the minorities.

Lastly if we would not shed the narrow communalism, I would lie to warn, the future generation would throw us into the fire. They would create a new world of peace and prosperity.

MR. SPEAKER: Is it the pleasure of the House to extend the time by one hour?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. SPEAKER: All right. Now, Mr. Brij Bhushan Tiwari.

18.57 hrs.

[SHRI DHIRENDRANATH BASU *in the Chair*]

श्री ब्रज भूषण तिवारी (खलीलाबाद) : सभापति महोदय, आज यह सचमुच हम लोगों के लिए बड़े शर्म की बात है और साथ ही साथ हम इसे अपने सार्वजनिक जीवन या राजनैतिक जीवन की हार भी मानते हैं कि 31 वर्ष की आजादी के बाद भी हमारे देश में इस प्रकार के भीषण दंगे होते रहते हैं । जमशेदपुर में घटी घटना ने तो यह साबित कर दिया कि जो आज की सदी है वह कितनी क्रूर सदी है । किस प्रकार से बेगुनाह लोगों की हत्याएं की गई और सबसे बड़ी बात यह कि जो तथ्य अभी प्रकाश में आये कि एक मोटर वैन के अन्दर औरतें थी, बच्चे थे, उनके ऊपर बम फेंका गया, उन्हें जलाया गया, उनकी जान ली गई, यह सचमुच ही बहुत चिन्ता की बात है और बहुत ही महत्वपूर्ण विषय भी है जिस पर चर्चा होनी चाहिए । परन्तु यदि हम केवल रस्मी बहस करें तो उस से कोई नतीजा नहीं निकलेगा । बहुत बहसें हुई हैं साम्प्रदायिक दंगों पर । आजादी के बाद साम्प्रदायिक दंगों पर आज तक सोलह से ज्यादा कमीशन बिठाए गए ।उन्होंने अपनी तमाम रेकमेंडेशन भी दी । परन्तु उन रेकमेंडेशन का कहां तक हम ने पालन किया उसकी पूरी समीक्षा होनी चाहिए । तभी हम जा कर किसी सही नतीजे पर पहुंच सकते हैं । जमशेदपुर के बारे में जो तथ्य आए हैं उन से यह बात तो साफ हो जाती है कि इस घटना के पीछे काफी बड़ी साजिश थी और तमाम प्रकार के तत्व उसमें एक साथ मिल गए थे । जो गृह मंत्री जी का बयान है उसमें पूरे तथ्य नहीं आए हैं । कुछ ऐसे सवाल हैं जिन सवालों का जवाब ढूंढना पड़ेगा और उसकी छानबीन करनी पड़ेगी । पहला सवाल यह है कि अगर 6 अप्रैल को जुलूस 14 नम्बर रोड से नहीं निकला तो 11 अप्रैल को क्यों निकलने दिया गया ? यह जुलूस जब 14 नम्बर रोड से शांति पूर्ण ढंग से निकल गया तो मस्जिद के पास बेल रोड पर यह जुलूम क्यों रुका ? पांच तारीख को राम नवमी थी, चार दिन तक उस पर बहस मुबाहिसा होता रहा । पिछले साल की मुकदमेबाजी का भी जिक्र किया गया । वहां के जिला प्रशासन के लोग आश्वस्त थे कि अब तो मामला तय हो जाएगा । मेरी जानकारी के अनुसार जनता पार्टी के जिम्मेदार लोगों ने जमशेदपुर के जिला प्रशासन पर दबाव डाला कि इनको जुलूस निकालने की इजाजत दी जाय । यह विचित्र बात है और मेरी जानकारी यह भी है कि श्री कैलाशपति मिश्र जो कैबिनेट मिनिस्टर हैं वे वहां के कलक्टर, एस० पी० से कहते हैं कि तुम जुलूस निकालने दो । श्री कर्पूरी ठाकुर वहां के मुख्य मंत्री हैं, उनके पास गृह विभाग है इसलिए उनसे पूछ-ताछ करनी चाहिए थी जबकि वहां पर यह मालूम था, इसके पहले ऐसे तथ्य आए है कि वहां पर गुण्डों का किस प्रकार का साम्राज्य था ।

19.00 hrs.

इस बारे में "हिन्दू" ने बहुत ही अच्छे तरीके से लिखा है :

"But Jamshedpur is dominated by contractors, goons, and musclemen who inhabit the densely populated and squalid areas which have sprung up on the fringes of the industrial township. It is common knowledge that these contractors, mostly militant Rajputs from the Chapra, Siwan and Gopalganj districts of Bihar and eastern Uttar Pradesh, Particularly Ballia, have acquired during the last few years enormous wealth and influence, largly because of their powerful political and caste links.

They are also feared because of the large army of gangsters equipped with sophisticated weapons which they have at their disposal. With their caste links and money power, they also have a hold on the local administration including the police. The goons and muselemen in the employ of the contractors and the gangs

[श्री ब्रज भूषण तिवारी]

partronised by them are mostly unlettered folk from villages It is the easiest thing in the world to whip up religious fanaticism among them This is what happened at Jamshedpur

Nothing could embarass and discredit, the Karpoori Thakar Government on the eve of the trial of strength in the Janata Legislature Party more than a communal riot, and a communal riot had, therefore, to be engineered by the gang of contractors who have been hostile to the State Government since the arrest of a Janata Party MLA in connection with the Dhanbad murders '

तो मैं कहना चाहता हू कि बिहार के अन्दर एक नफरत और घृणा का वातावरण बहुत जिम्मेदार लोग, ऊंची जाति के जो लोग हैं उनके द्वारा फैलाया गया क्योंकि उस प्रदेश का मुख्य मंत्री बैकवर्ड क्लास का है । चाहे प्रशासन हो चाहे पुलिस हो, हर जगह पर ऐसा एटमास्फीयर बनाया गया ताकि कर्पूरी ठाकुर की सरकार को गिराया जा सके ।

इसके साथ ही साथ एक महत्वपूर्ण बात यह भी है कि जब जनता पार्टी के जिम्मेदार लोग ऐसी खतरनाक चीजो में दखलन्दाजी करते हैं तो यह और भी गम्भीर मामला बन जाता है । सरकारी दल से सम्बन्धित किसी व्यक्ति की तिल भर की साम्प्रदायिकता दूसर के पहाड भर की साम्प्रदायिकता से अधिक खतरनाक हो सकती है । श्री दीनानाथ पाडे जो विधायक हैं, उनका इससे सम्बन्ध है या नहीं—इसकी जांच हो रही है लेकिन उन्होने, जब तीन बटा चार जुलूस का हिस्सा निकल गया तब एक बटा चार हिस्सा जा रहू गया उसको क्यो रोका और क्यो इस बात का दबाव डाला गया कि जब तक लोग रिहा नही किए जाएगे, जुलूस आगे नही बढ़ेगा ? वहा के एस० पी० जोकि एक हरिजन हैं उनके बारे में पर्चे बाटे गए । साथ ही वहा पर बडी जाति के लोग साम्प्रदायिक लोग एव सगठन और जो गुण्डो ने मिलकर साजिश करके इतना भीषण नर हत्याकाण्ड करवा दिया । इसलिए यह एक गम्भीर विषय है । साथ ही यह सवाल भी उठता है कि नरमी क्यो दिखाई गई और दीनानाथ पांडे या जो भी जिम्मेदार लोग थे उन्हें गिरफ्तार क्यों नही किया गया ? केवल चन्द लोगो को गिरफ्तार कर लेने से काम नही चलेगा, जिम्मेदार लोगों को भी गिरफ्तार करना पड़ेगा । और बिना किसी भेदभाव के, कौन हमारे बीच में है, कौन उधर है, हमें इस साम्प्रदायिकता के जहर को दबाना पडेगा । आज हमारे प्रजातन्त्र के लिये यह कसौटी है कि हम अपने अल्पसंख्यको के मन में सुरक्षा का भाव पैदा कर पाते हैं या नही । यह बडे शर्म की बात है कि वहां के अल्पसख्यको के मन में बिहार की मिलिट्री पुलिस के बारे में शक पदा हो, पी०ए०सी० के बारे में शक पैदा हो । यह जो आरोप लगाया गया है कि वहा की पुलिस क लोगो ने बडी बरबरता के साथ गोलिया चलाईं, लोगो को लूटा—यह बडी गम्भीर बात है । साम्प्रदायिकता का जहर, जाति वाद का जहर यदि हमारी पुलिस मे हमारी सेना में, हमारे प्रशासनिक विभाग में फैलता है—तब फिर हम कहा रहेगे, कहा हमारा वजूद रहेगा—इस पर हमे विचार करना होगा ।

इसलिये मै चाहूगा कि इसकी जाच हो और साथ साथ एक ऐसी 'रायट फोर्स" बनाने की आवश्यकता है जिसमे तमाम वर्ग के लोग रहें और उसमे खास तौर सें जो अल्पसख्यक है, पिछडी जातियो के है हरिजन हैं ऐसे लोगो को फोर्स मे रखा जाय तभी आप माइनारिटीज बैकवर्ड और हरिजनो के मन में विश्वास पैदा कर सकेंगे कि उनकी भी सुरक्षा हो सकती है उनकी जानो माल की रक्षा हो सकती है ।

हमे अपने इतिहास के दृष्टिकोण मे भी परिवर्तन करना होगा । यह हिन्दू और मुसलमान का मामला केवल ला एण्ड आर्डर का मामला नही है । यह हमारी सामाजिक समस्या है, हमारी सास्कृतिक समस्या है और जो लोग इस देश मे इस विचारधारा को पनपाना चाहते है कि जो भारत के अन्दर पैदा होने वाले मजहब मे विश्वास करते हैं वही भारतीय है, वही राष्ट्रीय है, वही हमारी सस्कृति है—यह देश के लिये खतरनाक विचारधारा है । इस पर भी चिन्तन करना पडेगा । आज हिन्दू और मुसलमानो का सवाल नही है, हमें अपने इतिहास को दूसरे नजरिये से पढ़ना होगा, पूरे मुगल काल का देसी और परदेसी के बीच में बटवारा करना होगा, बजाय हिन्दू और मुसलमान के बीच में बटवारा करें । हमको ऐसी सस्कृति की तरफ जो आदमी को आदमी से जोडती है—तवज्जह देनी होगी । हमारी सस्कृति और कला में ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जो समन्वित दृष्टिकोण रखते थे, जिन्होंने पूरे समाज को एक सूत्र में बाधने का प्रयास किया था—चाहे कबीर हों, गुरु नानक हों, रहीम हो—आज हमारी तवज्जह उनकी तरफ नही है, हमको उनकी तरफ तवज्जह देनी होगी, तब जा कर एक सम्यक् दृष्टि, एक राष्ट्रीय दृष्टि, एक सेकुलर दृष्टि बन सकती है ।

इस लिये आज हम पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है केवल दोषारोपण करने से काम नहीं चलेगा । हम को और आप को, सब को अपने कलेजे पर हाथ रख कर यह विचार करना पडेगा ।

वहां की सरकार जिस के मुख्य मंत्री हमारे श्री कर्पूरी ठाकुर हैं ने तीन जजो की एक जूडीशियल इनक्वारी बैठाई है। वहा के जितने सामाजिक सगठन हैं उन्होंने 40 हजार पैकेट खाने के रोज बाटने की वहा पर व्यवस्था की है। उन लोगो को कैम्पस मे रखा गया है। लेकिन आज उनकी सब से बड़ी समस्या यह है कि वे घर बार हो गये है। पूरे के पूरे बाजार जला कर राख कर दिये गये है उन लोगो को फिर से बसाने की समस्या है—इसके लिये भी वे कृतसकल्प है। लेकिन बिहार की सरकार मे जो इन स्टेबिलिटी पैदा कर दी गई है और खास तौर से ऐसे मौके पर वहा की कैबिनेट के कुछ मंत्रियो ने इस्तीफे दे दिये है—यह एक बहुत बडा कारण होता है किसी भी एडमिनिस्ट्रेशन के इन एफेक्टिव होने का। लेकिन इसके बावजूद भी मुझे खुशी है—जितने लाग माइनारिटीज के और दूसरे वहां पर गये, सब ने वहा के मुख्य मंत्री की ईमानदारी के प्रति अपनी आस्था प्रकट की है। मै जानता हू कि उनकी अपनी मजबूरिया है, लेकिन उसके बावजूद भी हमारे होम मिनिस्टर ने अपने बयान मे उनकी तारीफ की है, क्योंकि वे एक पिछडे हुए गरीब तबके के इन्सान है, जिन्होंने हमेशा मुसलमानो के लिये लडाई लडी है। उनके मन मे दर्द है। आज हमको हर स्तर पर इस कम्यूनलिज्म के खिलाफ लडना पडेगा, इस जहर को समाप्त करना पडेगा, प्रशासनिक स्तर पर, सास्कृतिक स्तर पर और दूसरे तमाम स्तरो पर इसको खत्म करना होगा। राजनीतिक स्तर पर भी अपनी सकुचित दृष्टि को समाप्त करना पडेगा।

इन शब्दो के साथ मै एक बार फिर पुरजोर शब्दो मे माग करूगा कि केवल जाच हो कर न रह जाय, जो दोषी हो, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए, जो जिम्मेवार लोग हैं उन्हें तत्काल गिरफ्तार किया जाए और जो अब तक के कमीशन्स की रिकमेण्डेशन्स है, नेशनल इन्टेग्रेशन कौंसिल की रिकमेण्डेशन्स है, उन रिकमेण्डेशन्स को अविलम्ब कार्यान्वित किया जाए।

श्री सत्य देव सिंह (गोंडा) : सभापति महोदय, आज इस देश के सर्वोच्च सदन मे एक बार फिर एक बडे घृणित काड पर विचार करने के लिए हम यहा इकट्ठे हुए हैं।

1 मार्च 1977 से 31 जनवरी 1979 तक जो सरकारी आकडे है, उनके अनुसार अब तक 410 दंगे हुए और उन में 150 लोग मारे गये तथा 2553 घायल हुए लेकिन इस दफा जो दगा अभी जमशेदपुर मे हुआ है, इस अकेले दगे मे अभी जो गृह मंत्री जी ने अपनी रिपोर्ट पेश की है, उस के अनुसार 110 लोग मर चुके है, अस्पतालो में कितने और मर जाएगे यह पता नही है, कितनी लाशे गायब है, इसकी अभी कोई जानकारी नही है और कितने धन और सम्पत्ति का नुकसान हुआ है, इसके बारे में आंकडे सामने नही आए है और सब से बडी बात यह है कि बीसियों हजार सुरक्षा के स्थान पर पहुच गये हैं मानो कोई बाढ या तूफान आया हो या इसी प्रकार का कोई प्राकृतिक प्रकोप हुआ हो और वहा से लोग अलग ले जाये गये हो। यह एक गभीर मसला है। पिछले कई वर्षों से, जब से हम गुलाम हुए और उस के बाद आजादी के 32 वर्ष बीत गये है, दगो का यह सिलसिला चलता रहा है और ये दंगे सिर्फ एक धर्म और दूसरे धर्म के बीच हुए हो, ऐसी बात नही है सहधर्मियो के बीच भी दगे हुए हैं और होते रहे है। इसलिए जब हम इस पर विचार करते है तो पूरे परिप्रेक्ष्य मे, पूरे मामले पर इन टोटैलिटी हमे विचार करना पडेगा और सिर्फ दोषारोपण से काम नही चलेगा लेकिन आज जहा पर बात करते है या भाषण करते है, तो यह मान कर करते हैं कि मानो यह तय कर लिया है कि कौन कौन इसके दोषी है और उस के बाद तमाम गलत उदाहरण पेश किये जाते है। इधर के भाइयो ने कहा और उधर के भाईयो ने कहा और कुछ ने तो यहा के गणमान्य नेताओं का नाम भी लिया है और इस तरह से जब वे इस तरह की बाते कहते हैं, जब टाइम से पहले ही विचार कर लेते है, तो जूडीशियल इक्वायरी, पुलिस इक्वायरी या सी०बी०आई० इंक्वायरी की कोई बात नही रह जाती है। आज जब हम दगो के बारे में विचार करते है तो मानवता के आधार पर, कलर, क्रीड, कास्ट और रेस के आधार पर नही विचार करना चाहिए। किसी का खून किसी से पतला नही है, किसी को भी लाठी पडती है तो उस को कम चोट नही लगती है। श्रीमन्, ये दगे कैसे हुए, इस के पीछे कौन लोग थे, इन तथ्यों मे जाना ही पडेगा। यह कहना कि इस प्रकार से यह हो गया, यह ठीक नही है। यह स्पष्ट तथ्य है और आज जो इक्वायरी कमेटी बैठ रही है, तो यह बात उस के सामने आ जाएगी कि कौन यहा पर गलत बयानी कर रहा है और कौन सही बोल रहा है। इस दगे के पीछे जो लोग है, उन के अन्दर मुख्य है श्री कालिका नन्दन सिह।

एक माननीय सदस्य : श्री जी० आर० डी० टाटा नही हो सकते ?

श्री सत्य देव सिंह : जी० आर० डी० टाटा भी हो सकते है। इस मे किसी जाति की कोई सीमा नही है। श्रीमन्, पिछले वर्ष भी यह झगडा नही उठा। 1964 के करीब मे झडे के जो विभिन्न अखाडे लगते हैं, वे राम नवमी को लगते है। राम नवमी 6 तारीख को पडती थी। यह मामला हाई कोर्ट गया और हाई कोर्ट मे यह निर्णय दिया कि इस मामले मे प्रशासनिक अधिकारियो का निर्णय अन्तिम निर्णय है कि किस रास्ते से जुलूस जाए। यह स्वाभाविक है कि जो जुलूस है, वह उसी रास्ते से जाए जिस रास्ते से कायदे के अनुसार हर प्रकार के त्योहार चाहे वह हिन्दुओ का हो, मुसलमानो का हो, सिक्खो का हो या ईसाइयो का हो, या किसी का भी हो, वे जुलूस जाए, लेकिन यह बात नही की गई। इस बात के लिए इन तीनो विधायको का बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है, इस बात पर गौर करिये और जुनून में मत बहिये।

[श्री सत्यदेव सिंह]

तीनों विधायक और वहां के सभी एम० पी० वहां के अधिकारियों से मिलते हैं। तीनों विधायकों ने कहा कि यह महावीरी झण्डा पिछले वर्ष भी नहीं उठा था और इस वर्ष भी यह झंडा नहीं उठ रहा है। इस झंडे को ले कर हम गली नम्बर 24 से चले जायें और बाकी का जलूस बाद में आकर के यहां मिले। इस बात को स्वीकार नहीं किया गया। दस तारीख की रात में ऐसे लोगो के जो कि जनप्रतिनिधि नहीं हैं, जो यहां आ कर बोल नहीं सकते हैं, और जिनका नाम आज यहां घसीटा जा रहा है, उनको तो जिला प्रशासन ने, जिला अधिकारियों ने इग्नोर कर के एक विशेष व्यक्ति डा० अखौरी के दबाव में आ कर के इस बात का निर्णय ले लिया कि जलूस 14 नम्बर की गली से जाएगा क्योंकि इन लोगों ने, सी०पी० आई० के लोगों ने और कालिकानन्दन सिंह ने इस बात का आश्वासन दिया कि साहब हम जिम्मेदारी लेते हैं और हम ठेके दार हैं कि जलूस 14 नम्बर की गली से निकाला जाएगा। दस हजार का जलूस था और उसमें कुछ सौ डेढ़ सौ लोग थे जो नाच गाने और ढाल तलवार से लेस थे। श्रीमन्, यह बात आज नहीं बोलनी चाहिए थी कि इसके पीछे किसका हाथ था लेकिन जब कहा गया है तो मैं कहता हूं कि इसके पीछे कालिकानन्दन सिंह का हाथ जरूर है और कालिकानन्दन सिंह कांग्रेस के हैं। इस प्रकार के लोगों का नाम ले कर इसमें कोई लाभ नहीं होगा। सवाल यह है कि यह आदिवासियों का जलूस था और इस आदिवासियों के इस जलूस के डी फैक्टो और डीज्यूरो सब कुछ कालिकानन्दन सिंह थे। 11 तारीख को जलूस निकलता है तो उससे पहले हिन्दू अखबार लिखता है कि इस बात की रिपोर्ट है, एक इंजीनियर साहब ने पटना से कहा है कि वहां पर बहुत बड़ा बिल्ड अप गुण्डों का हो रहा है, बदमाशों का हो रहा है। जमशेदपुर एक कास्मोपोलिटन सिटी है। सभी वक्ताओं ने भी यह बात कही है कि वह लेबर सिटी है जहां सब से ज्यादा एक दूसरे का कर्म के आधार पर, न कि जाति के आधार पर सम्बन्ध है। वे मेहनतकश लोग हैं, उनके पास समय नहीं है कि वे इन चीजों के लिये उतरें।

19.17 hrs.

[MR. SPEAKER *in the Chair*]

इन लोगों ने वहां जलूस निकाला। हमारे एम०एल०ए०, श्री दीनानाथ पाण्डेय का नाम लिया जा रहा है कि उन्होंने जलूस को रोका, इससे बड़ा ट्रेजेडिटी आफ ट्रथ कोई नहीं हो सकता है। उन्होंने तो बारबार यह प्रयास किया कि जलूस वहां न रुकने पाये। वे जिला प्रशासन के पास भी गये। लेकिन वे तीन व्यक्तियों जिनमें डा० अखौरी और कालिकानन्दन सिंह भी हैं, ने यह कहा कि जब हमारी गली से मुसलमान गुजर सकते हैं तो हम भी वहां से गुजर सकते हैं। यह फैक्ट है और इसको नजरअन्दाज करके और पैसनेट हो कर अगर आप सोचेंगे तो आप इसकी तह में नहीं पहुंच सकते। आज तक, जितने दंगे हुए हैं उनके बारे में भले ही हम ऐक्सरे पर आरोप प्रत्यारोप कर लें लेकिन यह सत्य है कि पांच परसेंट आबादी दंगा करती है और 95 परसेंट आबादी सफर करती है। आज वहां तीस हजार आदमी कैम्पों में हैं। उनमें से कोई भी दंगा करने नहीं गया था। कोई घर जलाने नहीं उठा था। मस्जिद के पास जब जुलूस पहुंचता है तो उस पर गोली और बम फेंके जाते हैं। (व्यवधान) आपमें अपने ऊपर विश्वास नहीं है। (व्यवधान) श्रीमन् मैं बोल रहा हूं, मुझे बोलने दीजिए। श्रीमन् आप अगर आजादी के बाद से आज तक जितने दंगे हुए हैं उनका इतिहास उठा कर देखेंगे तो पायेंगे कि दंगे किस के शुरू करवाये। यह एक सत्य है जिसको आप झुठला नहीं सकते हैं। दंगों की जितनी रिपोर्ट्स हैं उनको उठा कर देख लीजिए। यहां पर जजबात से काम नहीं चलेगा, फैक्ट्स को लीजिए। श्री साठे साहब को यह बात सबसे ज्यादा बुरी लगती है क्योंकि वे भी एक स्वयं सेवक रहे हैं और यहां इस तरह की बातें करके शायद वे यह सोचते हैं कि अपनी पार्टी में उनकी बात बड़े जोर से बन जाएगी। मैं तो साठे साहब को कहूंगा कि आपको दुःख नहीं होना चाहिए कि आपका आर०एस०एस० से सम्बन्ध था।

आर० एस० एस० का नाम सब जगह लिया जाता है। सबसे पहले इसे ही खोजा जाता है। इससे पहले अलीगढ़ में दंगे हुए। उससे पहले जितने दंगे हुए, उन सबकी रिपोर्ट्स उठा कर देखिए। 71 में दंगे हुए थे उनकी रिपोर्ट उठा कर देखिये। बतलाइये कि कहां आर०एस०एस० के लोगों का हाथ रहा है? यहां टोटली एग्जरेटिड बात कही जाती है। हां यह बात जकर है कि ऐसी किसी भी बात से पहले हम लोगों को गिरफ्तार किया जाता है। जब तक आप भेदभाव चलायेंगे तब तक आप सफल नहीं हो सकते हैं। इतिहास इस बात का गवाह है कि हिन्दू से सेक्युलर कोई कौम नहीं है। जो भी लोग यहां आये, क्रिश्चियन आये—क्रिश्चियनिटि इन केरल इज एन ओल्ड एज क्रिश्चियनिटी इटसेल्फ। मुसलमान यहां आये। सब हमारे भाई बन कर रहे। जो हमारे आक्रान्ता हो कर आये, व्यापारी हो कर आये, उनको भी हमने बसाया।

श्रीमन् आर०एस०एस० की बात मैंने कही। सी०पी०एम० के श्री ज्योतिर्मय बसु साहब बैठे हैं। वे जानते हैं कि उन्होंने पश्चिमबंग में कौन सी मानवता दिखायी है। जब बाद की विधायिका बंगाल में आयी थी तो सी०पी०आई० के कैडर के लोग चुन चुन कर वहां मेज दिये गये (व्यवधान) सत्य कड़वा लगता है। (व्यवधान) श्रीमन् एक प्रश्न यह है। (व्यवधान)

MR. SPEAKER: I am not deciding who is telling the truth. You are correctly saying what is just.

श्री सत्यदेव सिंह : यू आर नाट जज, यू आर स्पीकर। श्रीमन् जब जब दंगे होते हैं तो पी०ए०सी० और पुलिस पर यह आरोप लगाया जाता है कि इन्होंने ज्यादती की, इन्होंने गुण्डई की। मैं इस बात से बिल्कुल इत्तिफाक करता हूं कि जिन पुलिस कर्मचारियों ने गुण्डई की हो, ज्यादती की हो—

They should be doubly punished because they are the custodian of law and order in this country.

लेकिन श्रीमन्, एक बात देखिये, आप जज रहे हैं, पुलिस का कर्मचारी जो तीन सौ रुपये पाने वाला है, उसको आप इस विभीषिका में झोंकते हैं उसके पीछे भी परिवार है। वह मजिस्ट्रेट जो वहां होता है वह क्या कर सकता है। (व्यवधान)

MR. SPEAKER: You have taken much more time.

श्री सत्यदेव सिंह : इन दंगों के पीछे जो राजनीति काम करती है और फिर यहां पर यह सब कहा जाता है, उससे आप ज्यादा दिन पब्लिक की आंखों से छिपे नहीं रह सकते। यह बात अलग है कि आप पार्लियामेंट में बैठ कर के कुछ भी इजहार कर लें और तथ्यों को छिपा लें।

SHRI K. A. RAJAN (Trichur): Really it was a communal obscurantism, administrative bungling, BMP excesses which really led to all this disaster in the city of Jamshedpur. I had been to Jamshedpur for two days. I visited all the riot affected areas and mohallas and the refugee camps. I had a talk with the officials and also with the hon. Chief Minister of Bihar. The whole situation in Jamshedpur has been viewed in the overall political background. The political situation has created all this.

I need not narrate what had happened in Aligarh and other places. The insecurity in the minority community is running high, adding fuel to the fire, now the Christian is being brought into these things.

This tension was going on in the city from 6th April to 11th April, 4.30 A.M. Negotiations and discussions and all these things were going on. Leaflets and counter-leaflets were going on. Threatening and counter threatening was going on. In two places Muslim houses were looted and shops were looted on 7th and 9th. All these things were happening in the city. By this time the musclemen of whom Mr. Joshi mentioned and Mr. Janardhana Poojary said were brought in and were mobilised for all this show. I am sorry to say it was those *thugs* and *pindaries* who killed and assassinated a comrade in Dhanbad. You must remember, we were the people who were fighting against communalism. All this happened. You know what is the position? Really the whole thing exploded. Everything was arranged. The procession was to start at eight. It went very peacefully. One Muslim Dr. was leading it. Everything was calm. Then at 10 A.M. without any reason, one gentleman—a local M.L.A. obstructed the procession. What was the provocation? What was the intention of creating obstruction? The talk was going on. Dialogue was going on. Scuffire was going on. The whole city was ignitioned. In 1½ hours 10,000 people assembled. That created the whole provocation. Who were those 10,000 people? The local people say, most of them were outsiders and were brought. This is the situation that has been brought in that particular stage of ours. Apart from all these things what is the administrative bungling? While the procession was going on, in the mid street of Ranchi Road, a van was burning. We got down there. I just peeped into the van. It was miserable. Corpses were burning in that van on 13th or 14th. What was the administration doing? This was being kept as a show piece, just to threaten and to intimidate people. What is happening? That is what the administration is doing about the whole thing. So, it was pre-planned, pre-determined affair just to see that this thing should happen there and the city should be

[Shri K. A. Rajan]

put to flames. Fortunately the class conscious industrial workers kept out of the holocaust. It was not so in 1964. Had this thing happened in 1964, the whole city would have been placed in 1979. But the class conscious industrial workers kept out of this holocaust.

Then I went to refugee camps. There are refugee camps, nearly eight to ten. 150 to 2060 refugees were camped. I say that there was not a single refugee camp of Hindus or other community, other than the Muslim. Only Muslim refugee camps were there. I can vouchsafe for that. I asked the authorities whether there were any refugee camps of other communities. The reply was 'no'. Only Muslim refugee camps were there in the city of Jamshedpur. When things began to flare up, what is the role of the BMP? BMP was playing havoc. It was taking sides. There were disputes between the chief and the subordinate officers in the BMP. BMP was adding fuel to the fire and creating havoc, raping, looting, and committing other crimes. It is a shame to our country that there are such organisations like the PAC in U.P. and BMP. Let us restructure these organisations, and inject secular elements into them. Otherwise, this country is not going to be saved. If such unfortunate incidents are repeated, our whole image is going to be tarnished. Our whole tradition will be tarnished. Whatever we achieve will be demolished. Who are those communal obscurantists who are teaching this philosophy? What was going on one week before in that city? There was a conclave of Jan Sangh. There was a big rally of RSS, which was addressed by their chief men. Those people who are expounding this kind of philosophy and giving such teachings to the people are responsible for these things. The majority community has a duty and obligation to look after the welfare of the minorities. Unless this task is taken up, this country is going to face calamity. You are known as RSS. I say, it stands for Rashtriya Samhar Sangh. You are playing with fire. I make an appeal that all the secular and democratic forces, the working class and other progressive forces should join together and work for ending this menace, in the best interests of the nation. The Jamshedpur incident is a warning to those under whose political guidance the country is being administered today.

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN (Coimbatore): Sir, you have said that members should not leave the House after making speeches but should listen to other members. Dr. Joshi who is the whip of the Janata Party, after indulging in all these terminological inexactitudes is not here to listen to the replies.

MR. SPEAKER: He is not the only person, there are many who have spoken and are not here now.

SHRI A. K. ROY (Dhanbad): Sir, it is a custom in this House to condemn riots that have taken place. It has become the custom of the riots to continue happening! Sometimes we feel that Parliament is not a talking shop but a lamenting shop. I hear that in some places abroad, when some bad occasion comes, professional mourners are hired and they come and mourn. It looks as if we in this House are an assembly of professional mourners. Somewhere Harijans were burnt. Somewhere adivasis were raped. In some places minorities were killed. And we, the valiant fighters of human rights, all secular elements are assembled here and our responsibility is to assemble here, trouble you to give more time, lecture, mourn and go away! I would like to say that the RSS is indulging in riots not today. It is doing it right from the very beginning. But what are we doing? Jamshedpur is a working class place. Have we not got the moral obligation to resist it?

Mr. Speaker, Sir, it is seen that RSS is sitting here. RSS has infiltrated.

everywhere. RSS symbolises communal politics. That has paralysed every political life, every political aspect of the country. That is why, we are helpless.

It was told that goondas were migrated from Dhanbad coalfields to Jamshedpur. I also heard that those goondas belong to the communists. By communists, they mean all types of communists. But I say that you should be honest. Kindly see who was that person who was arrested in Dhanbad under the Goonda Act. He was a Janata MLA and not any other party MLA, not CPI MLA or Congress MLA or any other party MLA. He was a Janata MLA. It is a fact. You should be bold enough and honest enough to admit it. Bihar is ruled by Janata Party and your Minister is arresting your MLA under the Goonda Act. That MLA was given ticket by whom? By the President of your Party because he belongs to the same caste and same district. The goondas and musclemen of Jamshedpur derive strength from whom? From the Janata Party here and Tatas. Tatas want to overthrow the Karpoori regime from Patna. There the goondas take some political colour to do political mischief. When Congress rule was there, they were very conveniently with the Congress. When the Janata Party came to power, they came to the Janata Party. Maybe when we come to power, they will come to our party. I say that we must be aware of this fact. Here we must do some honest introspection.

Secularism does not mean shedding tears, maybe crocodile tears or cow tears. Secularism means fighting against communalism. When there was riot, Gandhiji was not shedding tears in Delhi or Patna but he went to Noakhali. You know Ganesh Shankar Vidyarthi gave his life fighting communalism.

There are four lakh workers in Jamshedpur. It is a shame on us that we could not mobilise the working class and smash those communalists. We could not do it. We must be honest enough, and admit our fault. We must be ashamed of our part.

RSS was born for communalism. We are born to prevent it.

MR. SPEAKER: There is no time.

SHRI A. K. ROY: You are ringing the bell without knowing that it is a death knell.

I was in Jamshedpur. I had the opportunity of touring the whole area. I had seen how the police was looting the people. They are killing Harijans. They are doing all kinds of mischiefs with all the communities. I demand that the entire BMP should be disbanded and declared illegal as goondas.

I may tell you that Jamshedpur is not a coal belt. It is a planned city. In Jamshedpur there are no lanes or by-lanes. In the entire area there is no scope for any riot to take place.

In Jamshedpur there is no other employer except Tatas. So, I say that an enquiry should be made about these contractors, how they came on the scene, who engaged the contractors and who were feeding the contractors. It is the TISCO.

In this House we debated last year that in the Subarnarekha river, one of the contratctors of Tatas threw some of the adioasis.

MR. SPEAKER: I cannot give you more time.

SHRI A. K. ROY: At the same time, when murder took place in Delhi, Billa and Ranga have been hanged.

MR. SPEAKER: Not yet.

SHRI A. K. ROY: They were given capital punishment. But, in the case of Shivaji Singh of Jamshedpur even

[Shri A. K. Roy]

though he committed a serious enough crime by throwing six Adivasis into Subernarekha river last year, the case did not start.

Similarly, in 1964 there was a riot in Jamshedpur and 500 people were killed. Even though some cases were instituted, you will be surprised to know that not a single person was punished. The entire people went scot-free So, I say that there should be a judicial inquiry. Let it be judicious also. The report should come very soon and the people must be brought to book. The urgency of the matter demands that.

MR. SPEAKER: Shri Stephen.

SHRI CHITTA BASU: Sir, I want to speak.

MR. SPEAKER: There is no time.

AN HON. MEMBER: Shri Chitta Basu should be given time.

MR. SPEAKER: I do not want any pleading. There is no time. We have already extended the time. I have to give at least 15 minutes to the Minister. Further, I have given more opportunities to the opposition members than to the ruling party.

SHRI C. M. STEPHEN: At this very late hour we are sitting in an exercise, if I may say so, of obituary reference at the grave-yard of a large number of our brothers, who had an absolutely clean record but were done to death in the devastation which took place. I wish that the ruling party had utilized this opportunity, not exactly for mourning, but for a realisation of the gravity of the situation.

There is one thing that I want to emphasize, which was already mentioned, and that is, that the peculiarity of this incident is that this has taken place in an industrial city, not in a rural area where fanaticism runs riot, but in a more advanced industrial city with an industiral culture. How has it taken place? Many aspects have been mentioned. When we go into the whole thing one thing is absolutely clear.

One point that is mentioned in the Minister's statement is the quarrel about the procession. The whole thing goes on for about five days. It is for us to consider what the political leadership did during those five days, when the tension was mounting up. Anyway, finally, it came to a settlement and Mr. Pande, MLA, was also a party to the settlement. The settlement was to the effect that the procession will end up in a particular area by a particular time. At 8 O'clock it starts and by 10 O'Clock it reaches the destination. At a particular point of time, about 9 O'Clock it reaches the agreed route, about which there is no dispute at all. It is at that time that the MLA takes up the position that the procession shall not proceed further. And what is the demand? The demand is that Mr. Tewari be released. When was Mr. Tewari arrested? The Minister tells us that Mr. Tewari and another 139 people were arrested not on that day, but on the previous day. Before the 11th the arrest took place. After that, the agreement is arrived at, the procession peacefully proceeds and comes to a particular stage, and the signatory to the agreement takes up the position, 'stop, no further'. Is it an innocent thing? Definitely the agreement was not to his satisfaction. There was a definite plan behind it. I do not want to link up anybody, RSS and all that. But the fact cannot be forgotten about this pamphlet, which has been told to us and this passes off the whole thing. This is a deliberate thing, deliberately planned, and arson breaks out and everything breaks out. This is the first stage.

Coming to the second stage, my accusation is definitely against the Home Minister of India. I charge the Homo Minister either with incompetence or

with collusion. On 11th this thing takes place and the whole day this thing goes on from 10 O'Clock in the morning. Arson takes place at 10 O'Clock in the morning according to the statement of the Home Minister. The whole day it goes on. I get information by about 9 O'Clock in the night. Frantic telephone calls come to me from trade union leaders of Jamshedpur. Jamshedpur is burning, nobody is protecting. Military is requisitioned, but nothing has happened. Then I ring up the Prime Minister. The Prime Minister tells me: "I have no information". Then I ring up the Home Minister. The Home Minister tells me again "No information." Jamshedpur city is burning from 10 O'Clock in the morning. "Military is being requisitioned by the district authorities". That is what the Minister says. The military is requisitioned by the district authorities. The Prime Minister does not know anything about it, the Home Miniser does not know anything about it. At 10.30 I get a telephone call from the Home Secretary. He tells me that Prime Minister has passed on the information regarding my telephone call to him. He has made enquires and he tells me: "The situation is very dangerous. I am trying to get at the Chief Minister. He is not available, many are not available to give information." What happened to your Intelligence system? How did it happen? For 12 hours the Jamshedpur city was burning, but you don't get any information. Sir, the moment the military is asked for, the Centre's jurisdiction comes into the picture. And thereafter, what is happening? It is a very wonderful thing. The Home Minister tells me: 'When I came to know on the evening of the 12th about a ghastly tragedy of an ambulance van being set on fire, I decided that I should go and find out what has happened." Under whose provocation? On 12th morning we raise the issue here, we demand a discussion and the Government does not come out with a statement till the afternoon. Nothing compels the Home Miniser to go there to look into the matter. What makes the Home Minister aware of it is an ambulance van is being burnt. Of course, it is a very serious matter. But is it the way that the Home Minister of India must behave? The previous evening the military is there and he thinks of going to Jamshedpur only because an ambulance van is burnt and he tells me the whole story. Then he goes. "And the number of persons killed is then reported to be around 50." Why do you go about saying 'about' and all that? Was it only 50? And then he gets a revelation and says :"When I learnt on the 16th that the casualties have reached the staggering figure of 100, I felt that I should go again to Jamshedpur." Is it the way to control this matter? At a stage where the military and the BSF are called in when the Muslim area is being attacked, people there are being subjected to arson, he goes there and comes back satisfied that things are under control. He says, 50 have been killed. I have information that more have been killed. Papers have reported that more have been killed. He comes to realisation only on the 16th that 100 have been killed, and then he makes the second pilgrimage to Jamshedpur. All right, you should have gone, but what did you do in the meanwhile? I appreciate your saying that this is a State subject, and therefore you are not involved, but I say the moment the district authorities ask for the military, your jurisdiction comes in, and you did not do your duty, that is what I am saying.

Here is a confessional statement by the Home Minister. The confession is:

> "In retrospect, however, it would appear that a larger deployment of police and para-military forces right from the outset would have helped."

[Shri C. M. Stephen]

This realisation comes to the Home Minister on the 17th or 18th. The whole of 11th and 12th had gone, on the 12th night additional reinforcement goes, then things are brought under control. You are responsible for the deaths that took place. You are responsible for the holocaust that took place. This is not a matter to be taken that way. It is not in a partisan spirit that I am saying this. I am surprised at the Prime Minister's reaction. I am asking: what did the Prime Miinster do? Muslims being burnt, Jamshedpur under attack, Muslim areas completely cut of, what did the Prime Minister do? Don't you have a sense of shame to say "oh" when I say this. I accuse that the Central Government is responsible for what has happened. The moment the district authorities said that things were beyond them and asked you to take over, your jurisdiction came in, and you have failed.

The RSS has been mentioned, it has been mentioned repeatedly. The point is there is tension in the country. During the discussion on the President's Address also I said this. There is a sense of insecurity among the Muslims, there is a sense of insecurity among the Christians, there is a sense of insecurity among the Scheduled Castes and Scheduled Tribes, there is a sense of insecurity all round. The RSS is certainly very efficient, but it does not lie in the mouth of any member of the ruling party to attack the RSS. The RSS gives political strength to you, you want to share that power. You lend yourselves to be prisoners of the RSS. The Prime Minister, the Home Minister, everybody lend themselves to be prisoners of the RSS. You cannot attack them and say they are responsible. You share the responsibility for that. And for every drop of blood that is shed, anybody who is a party with RSS and feels that the RSS is doing it, cannot get away by blaming them. You are equally responsible for that.

This is a very serious situation. Every community has a sense of insecurity. In a cosmopolitan country like ours you cannot call them minorities. Seven crores of Muslims are no minority which you can ignore. Two crores of Christians are no minority which you can ignore. Crores and crores of scheduled castes and scheduled tribes may be weak, but they are not a minority whom you can ignore. It is an explosive element. It behoves the Central Government to convey to them a sense of security and a feeling of conviction that here is a Government to which they can look up. Experience convinces us that they cannot look up to the Government and therefore helplessnes arises.

Chauvinism on the one side and helplessness on the other side. Chauvinism increases, helplessness deepens, anarchy increases, the country is going to pieces and tension is mounting. Therefore, I submit, let us look at this in all seriousness, and I repeat that the Central Government cannot wash its hands off for what happened.

MR. SPEAKER: The Home Minister.

SHRI A. K. ROY: We want to hear something from the Prime Minister.

SHRI C. K. JAFFER SHARIEF (Bangalore North): It is the responsibility of the Prime Minister.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI H. M. PATEL): Mr. Speaker, Sir, the hon. Member does not seem to understand anything about the constitution of this country, when he says that on a matter which falls within the purview of the Home Ministry, the Home Minister should not reply. The Prime Minister is certainly there. He is responsible for everything that the Government does. But if the Home Minister is not able to reply to your satisfaction, by all means, you can ask that.

I listened to the whole debate with great attention. I have said in my statement that it is with great anguish and sadness that I had risen to make that statement. But I found in this House, the speeches that were made, particularly by the Members on the Opposition, were entirely politically oriented. (*Interruptions*) There was no question of any sadness at what had happened, excepting, of course, paying a lip service. The hon. member, Mr. Roy, said very rightly that it was almost a case of professional mourning. They began their speeches by saying how sad it was that this had happened. They said that this sort of thing makes them hang their heads in shame and so on. But thereafter what did they say? What were the positive constructive suggestions that they made? Nothing. I would have thought that at least the hon. the Leader of the Opposition, had known something about the working of the Government.

SHRI B. SHANKARANAND: He phoned you in time.

SHRI H. M. PATEL: Of course. He was told what the situation was. It was not merely burning... (*Interruptions*) When you are informed by the Home Secretary, he does it because I have passed on the talk to him. You received this information. But my point, however, is not that.

The point is his remarkable statement. It is an utterly irresponsible statement when he says: "I charge the Home Minister of being incompetent..." He is perfectly justied in saying that; if he feels like that, he can say so. (*Interruptions*) All of you on the Opposition can say anything you like. (*Interruptions*) All of us on this side are incompetent and all of you on that side are competent. That is exactly the reason why you are there.

He went further and became utterly irresponsible when he said that I acted in collusion. What on earth did he mean by that? It is the most shameless statement that a hon. Member of Parliament can make. (*Interruptions*) I listened to you without uttering a word. Listen now to what I say. It is an utterly irresponsible statement that the Leader of the Opposition made. A man who does not know... (*Interruptions*)

MR. SPEAKER: Did you not speak in very strong language? Is it the monopoly of one side to use strong language?

SHRI H. M. PATEL: The hon. members must be prepared to take when they hit in the way they did and in the irresponsible manner in which they spoke.

Law and order is a state subject, which they should realise. The Government of India does not interfere in the maintenance of law and order. Certainly it is the duty of the Government of India to assist. If they did not feel so, the Home Minister would not have gone to Jamshedpur, not once but twice. He does feel his responsibility. He does realise that he must see in what way he can be of assistance. But the responsibility, the direct responsibility for tho maintenance of law and order is that of the State Government and I maintain that the State Government was doing its best to discharge that.

Such incidents happen. What had happened? A riot took place. They believe all manner of gossip and all rumours. On the basis of those gossip and rumours, they proceed to build up a case. My hon. friend, Mr. Jyotirmoy Bosu, he is not here ....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Very much here.

MR. SPEAKER: He has only changed sides.

SHRI H. M. PATEL: I did not know that even he would indulge in changing sides.

[Shri H. M. Patel]

In his characteristic way, he always proceeds to arrive at a conclusion and then find the evidence and the evidence he finds is, whatever he wishes to believe, all gossip. There is not an iota of evidence which he has weighed.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Is your Minister of State's statement also a gossip?

SHRI H. M. PATEL: In fact, a charge that he made, a reference that he made, quoting a Minister who said, "God save the country from such a Home Minister", if it refers to me, I believe, God is saving the country by having such a Home Minister.

The hon. Member said, on the basis of something he read in the newspaper where, I have been reported to have said that the initial attack was made from the side of Muslims and, later on, they had to suffer....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: That is not true.

SHRI H. M. PATEL: This was the statement attributed to me.

On the 13th when I went there and the press asked me, I said, "I am in no position to make any statement. I know nothing. I have arrived here and I am asking people what happened and I am trying to learn from the people". They asked me, "Please tell us what you have been told" I said, "I have been told various things and among those things, I have been told that the initial attack, the brickbats were thrown by the Muslims and, thereafter, the crowd became restive ...

SHRI DINEN BHATTACHARYYA: That is one-sided.

SHRI H. M. PATEL: I added, "I do not believe this; I do not believe either this or any other story." I said, "untill I have gone into the matter myself, it would not be proper on my part to make any statement as to who is responsible." At that very stage also, the Chief Minister who was present said, "We have decided to establish a committee presided over by a High Court judge to go into all these matters to find out precisely how it happened, what had happened, who were responsible and to establish fully all that." It seems to me, this is the proper way to approach this matter.

Then, Shrimati Mohsina Kidwai referred to a pamphlet which was distributed. Such a pamphlet might have been distributed. Did she try to find out and did she take the trouble to check whether it was issued by those whom she assumes to have issued that pamphlet?

SHRIMATI MOHSINA KIDWAI: It is your duty to find out.

SHRI H. M. PATEL: I agree, it is my duty to find out who issued that pamphlet now that you have brought it to my notice. When the inquiry proceeds, I have no doubt that all these matters will be gone into. It should be our duty to find out how certain things like that got distributed which provoked the people to action of a certain kind. That is perfectly correct. But these are the things which we must go into, shift properly and, thereafter, come to a decision.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: They do not have an infra-structure in the Home Ministry, nothing at all.

SHRI H. M. PATEL: The hon. Leader of the Opposition says that the Home Ministry has no information. Certainly the Home Ministry does not have the information of the nature that he mentioned. That is perfectly correct. That is because the local administration was fully engaged in doing its first duty to see that the disturbances were brought under control before they come to us. Now, when they came to the position that they needed the assistance of the Army—there are instructions laid down under which they can approach the Army for assistance. There is a locally stationed Army and

that Army immediately came to their assistance. When they wanted more and additional armed forces to assist them, then they approached through the local Army Commander....

SHRI C. M. STEPHEN: This is sickening—this sort of explanation.

SHRI H. M. PATEL:... the Area Commander who placed at their disposal whatever additional assistance they wanted. This is the way administration is run in a large country. If you imagine...(*Interruptions*) Unfortunately, I am afraid, I will not allow myself to be provoked by this 'Oh, Oh' by people who have not taken the trouble to study how these matters happen. What I am stating is a mere narration of facts and the way in which such situations are handled.

The Home Ministry, when approached to see, 'Will you please see that the Army Commander, Ranchi whom we have approached does send the forces immediately?' the drill that has been laid down was gone through without any hesitation and the Major General in charge of Ranchi sent the forces that were required and within a matter of hours the forces were in Jamshedpur. So, there is no question of any laxity in this matter. The Army acted most promptly and correctly. That is the responsibility of the Home Ministry. If it had not happened in the Government of India, not the Home Ministry, undoubtedly you have every right to say that the Government did not act promptly.....

SHRI C. M. STEPHEN: You didn't. That is what I said. You were told that the Army was necessary on the 11th evening and the full reinforcement of the Army goes there on the 12th night. And in retrospect you said that a larger deployment of the Police forces right from the outset would have averted these happenings.

MR. SPEAKER: Should we have arguments in instalments?

SHRI H. M. PATEL: The Leader of the Opposition forgets that though I did him the courtesy of listening to him without even once interrupting him in spite of his most provocative speech, he does not have the patience and even the courtesy to listen to what is being said. He does not even take the trouble of finding out the facts. On the 11th whatever Army assistance was needed was provided. It is only when it was found that even later the situation was not being brought under control that additional forces were asked. For BSF, the request comes to the Home Ministry and the Home Ministry arranges it. The Army is also approached and the Army makes available its assistance. All that was provided on the 11th and the 12th night as promptly as it.... (*Interruptions*).

I thought and I had assumed this particular debate was asked for by the hon. gentlemen opposite in order to ascertain the facts. I have given them such facts as I am in possession of. They have supplied me with a large amount of other—I would not call them facts but 'facts' in inverted commas which have reached them through various channels. I would certainly have them examined and studied carefully. The only and really important and valuable suggestion came from Mr. A. K. Roy. He said that many enquiries are being held but it takes years before they are completed. I would therefore think that he is right. I still do my best to see that this particular enquiry completes all its labour and produces its report within a very short period of time. This, I think is one of the things which must be done and which should not be allowed to drag on.

I would also say that whatever be the recommendations, we shall certainly proceed to see that they are given effect to. (*Interruptions*).

[Shri H. M. Patel]

So far as rehabilitation is concerned, one fact was mentioned by some of the hon. Members, in very strong language, and they were shouting about that the persons in the camps were all Muslims. But, I have not said anything. I have not described who were in the camps. But, in fact, it is quite true that an overwhelming majority in the camps are the Muslims and only a very small number, relatively speaking, are the Hindus. There are nine camps in which they are housed. It is the intention to see that the process of enabling the people to go back to their homes is speeded up by providing them with such assistance as they need. (*Interruptions*). 38,500 are in the camps. Let me explain. The number of houses destroyed is rather very much smaller—300 houses in all—to the best of my knowledge and information given to me. Many others have left out of fear, because of insecurity, and, those who had left because of fear or feeling of insecurity, will be enabled to go back to their homes.

There are a number of others whose houses were partially destroyed. They will be assisted with such materials as they may require in order to make them habitable so that they go and live in their own way. Those whose houses are completely demolished, for them, arrangements are to be made as speedily as possible so that they can have something to live.

In the meantime, whatever other assistance is to be provided, is being arranged for and the Chief Minister of Bihar has said that there will be no question of withholding any assistance. (*Interruptions*). In this, this particular duty obviously must remain the responsibility of the Government.

The Centre will try to give every assistance to the State which it seeks for. That is all that the Centre can do; the centre has been doing that; I have said that in the statement also (*Interruptions*) that all actions will be taken where and whenever they are called for.

SHRI JANARDHAN POOJARY (Mangalore): I want to know whether you will arrest them.

SHRI H. M. PATEL: Unlike my hon. friend, we proceed according to the law. Here is a distinguished lawyer who will tell you the law on the subject. Since we have no longer the Preventive Detention Law, we can only proceed according to law. If Mr. D. N. Pande, whom he referred to, is responsible, for any kind of action or activity which brings him within the mischief of any section, he will certainly be proceeded against. There is no hesitation at all. Shri A. K. Roy said . . (*Interruptions*).

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: I hope you will take action against Dr. Akhauri and Kalika Nandan Singh. (*Interruptions*).

MR. SPEAKER: He is speaking for all the people.

SHRI H. M. PATEL: Whoever is responsible for that, action will be taken against them.

SHRI C. M. STEPHEN: Now that you have said that, he will take action.

SHRI H. M. PATEL: Shri A. K. Roy pointed out that in Dhanbad the person arrested was a Janata MLA.

Now, I say that shows that the government has no hesitation whatsoever in taking action even against a Janata MLA if found guilty and there will be no question about it if any Janata MLA is found to be responsible for doing something which he should not be doing.

Sir, I do not think I need take more time of the House. I have said that this matter will be gone into

fully. An hon'ble said, when I said that the situation is now under control, I did not know what I was talking about. I pointed out that though the situation is under control there is a tense atmosphere in the place and it will be necessary to continue to be vigilant. Eternal vigilance is the price of ensuring that there is no communal trouble and that is certainly what we will do. I think these were all the points that needed to be dealt with.

MR. SPEAKER: The House now stands adjourned till 11 a.m. tomorrow.

20.12 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, April 19, 1979/Chaitra 29, 1901 (Saka)

GMGIPND- 587 LS—88.